CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

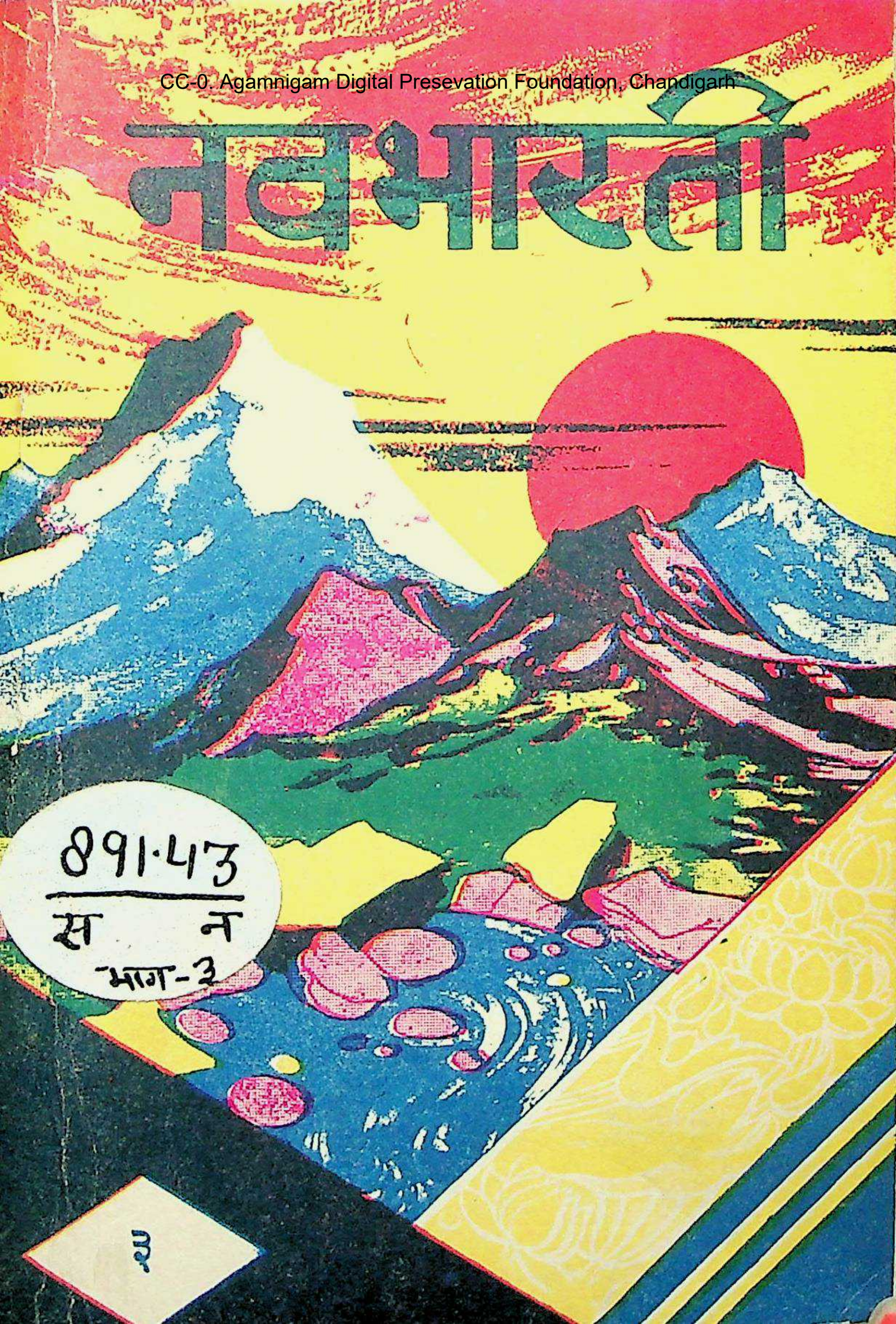


891.43
स न
भाग-3

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

[ राजकीय प्रकाशन, शिक्षा-विभाग, उत्तर प्रदेश ]

# नव भारती

## भाग ३

[कक्षा ८ के विद्यार्थियों के लिए]

891.43
नव भा
3

राजनियुक्त प्रकाशक

**हिन्दी साहित्य भंडार**

लखनऊ

Universal Book Depot
Lucknow.
Aminabad.

१८९० शक
१९६८ ई०

प्रथम संस्करण

मूल्य
रु० १·१७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# नव भारती भाग ३

| | | |
|---|---|---|
| सम्पादक | | डा० चन्द्रमोहन भाटिया<br>शिक्षा-निदेशक, उत्तर प्रदेश |
| सम्पादक मंडल | १. | श्री व्रजभूषण शर्मा (संयोजक) |
| | २. | श्री वंशीधर श्रीवास्तव |
| | ३. | श्री द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी |
| | ४. | डा० संकटाप्रसाद उपाध्याय |
| | ५. | डा० रघुराजशरण शर्मा |
| | ६. | श्री वेंकटेशचन्द्र पाण्डेय |
| | ७. | श्री रमाशंकर उपाध्याय |
| | ८. | श्री जगदीशप्रसाद द्विवेदी |
| | ९. | श्री मुरारिदत्त चतुर्वेदी |
| सहायक | १. | श्री नरोत्तमप्रसाद शर्मा |
| | २. | श्री राधेश्याम त्रिपाठी |
| | ३. | श्री केदारनाथ गुप्त |
| | ४. | डा० रामलखन पाण्डेय |
| | ५. | श्री भृगुराम मिश्र |
| | ६. | श्री किशोरीलाल शर्मा |
| परामर्श समिति | १. | श्री अयोध्यानाथ शर्मा (अध्यक्ष) |
| | २. | डा० देवेन्द्रदत्त तिवारी (संयोजक) |
| | ३. | डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय |
| | ४ | डा० हरदेव वाहरी |
| | ५. | श्री प्रकाशचन्द्र गौड़ |
| | ६. | श्री कमलाशंकर सिंह (चित्रकार) |
| समीक्षक-समिति | १. | डा० रामकुमार वर्मा |
| | २ | श्री बनारसीदास चतुर्वेदी |

मुद्रक : जनता प्रेस, लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राज्य संग्रहालय ... क्रम संख्या 3796 प्राप्ति तिथि 21.5.69 State Museum, Library, Lko.

# प्राक्कथन

देश के भावी नागरिकों की शिक्षा में पाठ्यस्तकों का विशेष स्थान है और इसलिए उनकी रचना राष्ट्रीय महत्त्व का कार्य है। छोटे वच्चों की पुस्तकों के सम्बन्ध में यह बात और अधिक सत्य है। इसी विचार से कक्षा १ से ५ तक की हिन्दी तथा गणित की पुस्तकों का प्रणयन तथा प्रकाशन गत कई वर्षों से शिक्षा-विभाग ने आपने हाथ में ले रखा है। इस कार्य में यह प्रयास रहा है कि अच्छी से अच्छी पुस्तकें कम से कम मूल्य पर सुलभ हो सकें।

सन् १९६५ में यह निश्चय किया गया कि इसी क्रम को आगे बढ़ाया जाय और कक्षा ६, ७ और ८ की हिन्दी तथा गणित की पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया जाय। कक्षा ६ तथा ७ की पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। इस वर्ष कक्षा ८ के लिए हिन्दी तथा गणित की पाठ्यपुस्तकें प्राकशित की जा रही हैं।

ये पुस्तकें एक ओर कक्षा ५ की राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तकों के क्रम में हैं और दूसरी ओर उनका सामञ्जस्य हाई स्कूल कक्षाओं की पुस्तकों के साथ रहेगा। विषय-वस्तु की दृष्टि से यह प्रयत्न किया गया है कि जूनियर हाई स्कूल की कक्षाओं का स्तर कुछ उन्नत हो, जिससे आगामी कक्षाओं का पठन-कार्य सुविधापूर्वक चल सके। योजना यह है कि जो बालक कक्षा ८ के आगे न पढ़ सकें, उनकी शिक्षा भी इन पुस्तकों के द्वारा एक प्रकार से पूरी हो जाय। इसीलिए मान्य लेखकों की रचनाएं तथा सूर, तुलसी, रहीम, मैथिलीशरण गुप्त, पन्त, सोहनलाल द्विवेदी, सुभद्राकुमारी चौहान आदि कवियों की उपयुक्त कविताएं संकलित की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



गयी हैं । पठन-कौशल को व्यापक बनाने के उद्देश्य से इतिहास, भूगोल, विज्ञान, सामाजिक-आर्थिक जीवन, जीव-जगत, नीति आदि विषयों से सम्बन्धित पाठ रखे गये हैं । विषय-वस्तु की विविधता होने पर भी लक्ष्य में एकसूत्रता है और पाठों की एक ही दिशा है । उनके द्वारा भाषा की उत्तरोत्तर योग्यता बढ़ाने, ज्ञानक्षेत्र का विस्तार करने, भारतीय मान्यताओं में आस्था उत्पन्न करने, स्वस्थ नैतिक विचारों के प्रति निष्ठा जागरित करने तथा स्वस्थ दिशा में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास किया गया है ।

आशा है कि प्रस्तुत पुस्तक विषय-वस्तु के समुचित शिक्षण में सहायक होगी, बालक-बालिकाओं का नैतिक विकास करेगी, देश की भावात्मक तथा राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनायेगी और उनमें उच्चतम आदर्शों की प्रतिष्ठा करेगी ।

यह पुस्तक विभागीय अधिकारियों तथा अन्य अनेक विद्वानों के अनुभव एवं चिन्तन का फल है । छात्रोपयोगी बनाने के लिए कहीं-कही मूल पाठ को सम्पादित कर दिया गया है । विद्वान लेखकों तथा कवियों ने अपनी कृतियों के संकलित करने की स्वीकृति देने की कृपा की है । शिक्षा-विभाग इन सब का आभारी है ।

**शिक्षा-निदेशक**
उत्तर प्रदेश

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# शिक्षकों से

पाठ्यपुस्तक मुख्यतः पढ़ना सिखाने और सामान्य रूप से भाषा सिखाने का साधन है। प्रारम्भिक स्तर का अधिकांश समय भाषा पढ़ने, लिखने और बोलने के प्रारम्भिक कौशल सीखने में लग जाता है। उच्च स्तर पर साहित्य की शिक्षा प्रमुख हो जाती है, अतः भाषार्जन का मुख्य कार्य माध्यमिक स्तर पर ही होना चाहिए। यह स्तर भाषा सीखने की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण सोपान है। जो बालक इस सयम पिछड़ जाते हैं और जिनकी रुचि इस स्तर पर पढ़ने में नहीं हो पाती, उनमें से बहुत कम आगे चलकर अच्छी भाषा सीख पाते हैं।

पठन-सम्बन्धी निम्नलिखित कौशल माध्यमिक स्तर पर प्राप्त करने का लक्ष्य होना चाहिए :—

(१) पठन-रुचि की उत्पत्ति, विस्तार और परिष्कार।
(२) प्रत्यक्ष और प्रच्छन्न अर्थ का बोध।
(३) पठन-सामग्री का सविवेक ग्रहण तथा सुबोध प्रकाशन।
(४) पठन-गति की वृद्धि।
(५) शब्द-भांडार की वृद्धि।
(६) शब्दों के अर्थ खंड करके समझ लेना, कोश से शब्द ढूंढ़ लेना तथा कुछ शब्दों का बिना अर्थ जाने आशय समझ लेना।
(७) विषय-सूचि, अनुक्रमणिका आदि का उपयोग।
(८) पुस्तकालय का उपयोग।

पाठ्यपुस्तक के सहारे धीरे-धीरे निश्चित योजना के अनुसार उपर्युक्त कौशल सिखाने चाहिए। इनमें से पठन की रुचि और उसका विस्तार करना सर्व प्रमुख और सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। इसके लिए अधिकाधिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


पढ़ने की आवश्कता होती है। पाठ्यपुस्तक पढ़ाते समय प्रसंगवश सरल और रोचक सामग्री बालकों को पढ़ने के लिए देनी चाहिए। पुस्तकें दिखाकर तथा उनकी विषय-वस्तु के बारे में चर्चा करके बालकों को प्रोत्साहन दिया जा सकता है। यदि पढ़ने में बालक की एक बार रुचि हो गयी तो ऊपर बताये गये अन्य कौशल अपने आप बालक सीखता चलेगा। शब्द-भांडार की वृद्धि भी स्वयं ही होगी। विविध प्रसंगों में ही शाब्दों की जानकारी अच्छी होती है। समानार्थी या विलोम शब्द और सन्धि-विच्छेद, समास-विग्रह आदि के अभ्यासों द्वारा भी शब्द-भांडार बढ़ाया जा सकता है। कोश भी शब्द-भांडार बढ़ाने में बहुत सहायक होता है। इसके प्रयोग का अभ्यास डालने की चेष्टा करनी चाहिए।

भाषार्जन में विद्यार्थियों के निजी प्रयासों का बड़ा महत्त्व है। अत:: अर्थ समझने में और शब्दों के अर्थ निकालने में उन्हें प्रयत्न का अवसर अवश्य देना चाहिए। यदि उनके प्रयत्न किये बिना उन्हें अर्थ समझा दिया जायगा तो प्रस्तुत पाठ तो उनकी समझ में आ जायगा परन्तु पठन-शक्ति वे प्राप्त न कर सकेंगे। अत: मौन-पाठ तथा बोध-परीक्षण आदि के बाद ही व्याख्या होनी चाहिए। वास्तविक पढ़ना अथवा लिखी हुई बात समझ लेना मुख्यत: मौन रूप से पढ़ने में ही होता है। अत: मौन-पठन सीखना इस स्तर का मुख्य काम है।

इन उद्देश्यों के उपलब्ध कराने में सहायता देने के लिए पाठों के अन्त में प्रश्न, अभ्यास आदि दिये हुए हैं। इनका उपयोग शिक्षक अवश्य करें। परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। वैसे ही अन्य प्रश्न बनाने की आवश्यकता होगी। पुस्तक के आधार पर मौलिक तथा लिखित रचना के अभ्यास भी इस दिशा में बड़े सहायक होंगे।

—सम्पादक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# विषय-सूची


| क्रम | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| १. | असतो मा सद् गमय (कविता) | डा० देवेन्द्रदत्त तिवारी | १ |
| २. | एक पुरानी कथा | पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी | ३ |
| ३. | प्रेम, अहिंसा और बन्धुत्व | महात्मा गाँधी | ११ |
| ४. | नर हो, न निराश करो मन को (कविता) | मैथिलीशरण गुप्त | १७ |
| ५. | महाभारत | करुणापति त्रिपाठी | २० |
| ६. | साइकिल की सवारी | सुदर्शन | ३० |
| ७. | चल पड़े जिधर दो डग (कविता) | सोहनलाल द्विवेदी | ४४ |
| ८. | वीरमाता जीजाबाई | ड० संकटाप्रसाद उपाध्याय | ४७ |
| ९. | रामराज | ब्रजभूषण शर्मा | ५४ |
| १०. | दीनबन्धु एण्ड्रूज | बनारसीदास चतुर्वेदी | ६० |
| ११. | मन भावन सावन (कविता) | सुमित्रानन्दन पन्त | ६७ |
| १२. | उड़ीसा | डा० जयराम मिश्र | ७० |
| १३. | पृथ्वी | प्रभाकर द्विवेदी | ८० |
| १४. | मैं सुमन हूँ (कविता) | द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी | ८७ |
| १५. | अर्जुन का मोह (नाटक) | अयोध्यानाथ शर्मा | ९० |
| १६. | इब्राहिम गार्दी | वृन्दावनलाल वर्मा | ९७ |
| १७. | भारतीय जलपोत | देवदत्त भार्गव | १०४ |
| १८. | जलाओ दिये (कविता) | नीरज | ११२ |
| १९. | सत्साहस | गणेशशंकर 'विद्यार्थी' | ११५ |
| २०. | सरदार बल्लभभाई पटेल | क्षेमचन्द्र 'सुमन' | १२१ |
| २१. | रणयात्रा (कविता) | श्यामनारायण पाण्डेय | १२९ |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



| क्रम | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| २२. | क्रिकेट | डा० रमेश श्रीवास्तव | १३४ |
| २३. | स्वामी विवेकानन्द | वंशीधर श्रीवास्तव | १४२ |
| २४. | सूर के पद (कविता) | सूरदास | १५३ |
| २५. | अंकोरवाट | यशपाल जैन | १५७ |
| २६. | खनिज-सम्पदा | विश्वेश्वरस्वरूप भटनागर | १६५ |
| २७. | अवधेस के बालक (कविता) | गोस्वामी तुलसीदास | १७२ |
| २८. | संयुक्त राष्ट्रसंघ | वेंकटेशचन्द्र पाण्डेय | १७५ |
| २९. | चन्द्रगुप्त (नाटक) | जयशंकर 'प्रसाद' | १८२ |
| ३०. | गंगा की शोभा (कविता) | भारतेन्दु हरिश्चन्द्र | १८९ |
| ३१. | कथाकार प्रेमचन्द | विश्वम्भर 'मानव' | १९३ |
| ३२. | अध्ययन | रामचन्द्र शुक्ल | १९९ |
| ३३. | ग्राम देवता (कविता) | डा० रामकुमार वर्मा | २०५ |
| ३४. | मेरी मास्को यात्रा | ड० नगेन्द्र | २०९ |
| ३५. | परमाणु ऊर्जा | डा० मुरलीमनोहर जोशी | २१७ |
| ३६. | वर दे (कविता) | सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' | २२६ |

अनिवार्य संस्कृत

जगदीश प्रसाद द्विवेदी
मुरारिदत्त चतुर्वेदी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ १

# असतो मा सद् गमय

[सत्य ईश्वर का ही एक दूसरा रूप है। इसीलिए हमारे ऋषि-मुनि सत्य की खोज में लगे रहे। प्रस्तुत कविता में कवि ने यह कामना व्यक्त की है कि राग-द्वेष से मुक्त होकर हम सत्य के पथ पर चलें।]

दूर असत से रहें, बनें हम
सत्पथ के अनुगामी,
राग-द्वेष से मुक्त रहें हम,
जड़ - चेतन के स्वामी !

वाणी में हो अमृत, अनृत की
पड़े न हम पर छाया,
परहित प्रतिक्षण अर्पित अपना
जीवन, अपनी काया।

छिन्न-भिन्न कर दो हे प्रभु ! तुम
तम की प्रस्तर - कारा,
उद्वेलित हो दिव्य ज्योति की
निर्मल निर्झर - धारा

आलोकित हो तमसावृत पथ
प्रतिपल मंगलमय हो,
प्राप्त करें अमरत्व, मृत्यु का
हमें न किंचित भय हो।

—डा० देवेन्द्रदत्त तिवारी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## अध्ययन

**प्रश्न**

१. 'दूर असत से रहें' से कवि का क्या तात्पर्य है ?
२. हम सत्पथ के अनुगामी कैसे बन सकते हैं ?
३. कवि ने अपनी इस रचना में क्या कामनाएं की हैं ?

**अभ्यास**

१. निम्नांकित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो—
(क) राग-द्वेष से······के स्वामी ।
(ख) वाणी में······छाया ।
(ग) उद्वेलित हो······निर्झर-धारा ।

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में दिये हुए शब्दों में से उपयुक्त शब्दों द्वारा करो—
(क) हमें······पथ का अनुसरण करना चाहिए । (प्राचीन, सहज, सत्य)
(ख) देश में ज्ञान की······ज्योति प्रकाशित हो । (अनन्त, दिव्य, परम)
(ग) मृत्यु का······भय भी नहीं होना चाहिए । (कदाचित, सदा, किंचित)

**आदेश**—इस कविता को कंठस्थ करो ।

## टिप्पणी

**असत**=बुराई । **अनुगामी**=पीछे चलने वाला । **अनृत**=असत्य; झूठ । **उद्वेलित हो**=छलक कर फूट पड़े । **आलोकित**=प्रकाशयुक्त ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २

# एक पुरानी कथा

[इस कहानी में यह बताया गया है कि अपनी आकांक्षाओं की सीमा पर नियन्त्रण न रखने का क्या परिणाम हो सकता है। इसके लेखक हिन्दी के प्रसिद्ध निबन्धकार श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी हैं।]

आज एक पुरानी कथा कहता हूँ। एक था मछुवा, एक थी मछुवी। दोनों किसी झाड़ के नीचे एक टूटी-फूटी झोंपड़ी में अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। मछुवा दिन भर मछलियां पकड़ता, मछुवी दिन भर दूसरा काम करती। तब कहीं रात में वे लोग खाने के लिए कुछ पाते। ग्रीष्म हो या वर्षा, शरद हो या बसन्त, उनके लिए वही एक काम था, वही एक चिन्ता थी। वे भविष्य की बात नहीं सोचते थे क्योंकि वर्तमान में ही वे व्यस्त रहते थे। उन्हें न आशा थी और न कोई लालसा।

पर एक दिन एक घटना हो गयी। मछुवा जा रहा था मछलियां पकड़ने। नदी के पास एक छोटा-सा गड्ढा था। उसमें कुछ पानी भरा था। उसी में एक कोने पर, लताओं में एक छोटी-सी मछली फँस गयी थी। वह स्वयं किसी तरह पानी में नहीं जा सकती थी। उसने मछुवे को देखा और पुकारकर कहा, 'मछुवे, मछुवे, जरा इधर तो आ।'

मछुवा उसके पास जाकर बोला, 'क्या है ?'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



मछली ने कहा, 'मैं छोटी मछली हूँ। अभी तैरना अच्छी तरह नहीं जानती। इसी से यहाँ आकर फँस गयी हूँ। मुझको किसी तरह यहाँ से निकाल कर पानी तक पहुँचा दे।'

मछुवे ने नीचे उतरकर लता से उसको अलग कर दिया। मछली हँसती हुई पानी में तैरने लगी।

कुछ दिनों के बाद उस मछली ने उसे फिर पुकारा, 'मछुवे, मछुवे, इधर तो आ।' मछुवा उसके पास गया। मछली ने कहा, 'सुनती हूँ, नदी में खूब पानी है। मुझे नदी में पहुँचा दे। मैं तो तेरी तरह चल नहीं सकती। तू कोई ऐसा उपाय कर कि मैं नदी तक पहुँच जाऊँ।'

'यह कौन बड़ी बात है!' मछुवे ने यह कह कर एक बरतन निकाला और उसमें खूब पानी भर दिया। फिर उसने उसी में उस मछली को रखकर नदी तक पहुँचा दिया। मछली नदी में सुरक्षित पहुँच गयी और आनन्द से तैरने लगी।

कुछ दिनों के बाद उस मछली ने मछुवे को पुकार कर कहा, 'मछुवे, तू रोज यहाँ आकर एक घंटा बैठा कर। तेरे आने से मेरा मन बहल जाता है।'

मछुवे ने कहा, 'अच्छा।'

उस दिन से वह रोज वहीं जाकर आधा घंटा बैठा करता। कभी-कभी वह आटे की गोलियां बनाकर ले जाता। मछली उन्हें खाकर उस पर और भी प्रसन्न होती।

एक दिन मछुवी ने पूछा, 'तुम रोज उसी एक घाट पर क्यों जाते हो?'

मछुवे ने उसको उस छोटी मछली की कथा सुनायी। मछुवी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


सुनकर चकित हो गयी। उसने मछुवे से कहा, 'तुम बड़े निर्बुद्धि हो। वह क्या साधारण मछली है। वह तो कोई देवी होगी, मछली के रूप में रहती है। जाओ, उससे कुछ माँगो। वह जरूर तुम्हारी इच्छा पूरी करेगी।'

मछुवा नदी के तट पर पहुँचा। उसने मछली को पुकार कर कहा, 'मछली, मछली, इधर तो आ।'

मछली आ गयी। उसने पूछा, 'क्या है?'

मछुवे ने कहा, 'हम लोगों के लिए क्या तू एक अच्छा घर नहीं बनवा देगी?'

मछली बोली, 'अच्छा जा, तेरे लिए एक घर बन गया। तेरी मछुवी घर में बैठी है।'

मछुवे ने आकर देखा कि सचमुच उसका एक अच्छा घर बन गया है। कुछ दिनों के बाद मछुवी ने कहा, 'सिर्फ घर होने से क्या हुआ? खाने-पीने की तो तकलीफ है। जा, मछली से कुछ धन माँग।'

मछुवा फिर नदी-तट पर गया। उसने मछली को पुकार कर कहा, 'मछली, मछली, इधर तो आ।'

मछली ने आकर पूछा, 'क्या है?'

मछुवे ने कहा, 'सुन तो, क्या तू हमें कुछ धन न देगी?'

मछली ने कहा, 'अच्छा जा, तेरे घर में धन हो गया।'

मछुवे ने आकर देखा कि सचमुच उसके घर में धन हो गया है। कुछ दिनों के बाद मछुवी ने कहा, 'इतने धन से क्या होगा? हमें तो राजकीय वैभव चाहिए। राजा की तरह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


एक महल हो, उसमें बाग हो, नौकर-चाकर हों और राजकीय शक्ति हो । जा, मछली से यही माँग ।'

मछुवी की यह बात सुनकर मछुवा कुछ हिचकिचाया । उसने कहा, 'जो है, वही बहुत है ।' परन्तु मछुवी ने उसकी बात न सुनी । उसने स्वयं मछली की दिव्य शक्ति देख ली थी । यही नहीं, एक बार जब वह मछली को आटे की गोलियां खिला रही थी, तब मछली से उसे आश्वासन भी मिल गया था । इसी से उसने मछुवे को हठपूर्वक भेजा ।

मछुवा कुछ डरता हुआ मछली के पास पहुँचा । उसने मछली को पुकारा और धीरे से कहा, 'क्या तू मछुवी को रानी न बना देगी ?'

मछली ने कहा, 'अच्छा जा तेरी मछुवी रानी बनकर महल में घूम रही है ।'

मछुवे ने आकर देखा कि सचमुच उसके घर में राजकीय वैभव हो गया है, मछुवी रानी बनी बैठी है ।

कुछ दिनों के बाद मछुवी ने फिर कहा, 'अगर सूर्य, चन्द्र, मेघ आदि सभी मेरी आज्ञा मानते तो कैसा होता !' यह सोच कर उसने मछुवे को, उसकी इच्छा के विरुद्ध, मछली के पास भेजा ।

मछुवे की बात सुनकर मछली रुष्ट होकर बोली, 'जा, जा, अपनी उसी झोंपड़ी में रह ।'

मछुवा और मछुवी दोनों फिर अपनी उसी टूटी-फूटी झोंपड़ी में रहने लगे । यहीं कहानी का अन्त हो जाता है ।

कहानी पुरानी है । इसकी एक भी बात सच नहीं है,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर इसमें हम लोगों के मनोरथों की सच्ची कहानी है। आकांक्षाओं का कब अन्त हुआ है ? इच्छाओं की क्या कोई सीमा है ? पर मछुवे के भाग्य-परिवर्तन पर कौन उसके साथ सहानुभूति प्रकट करेगा ? सभी यह कहेंगे कि यह तो उसका ही दोष था। उसकी स्त्री को सन्तोष ही नहीं था। यदि उसे सन्तोष हो जाता तो उनकी यह दुर्गति क्यों होती ? मछुवे ने भी शायद यही कहकर अपनी स्त्री को झिड़का होगा।

परन्तु मैं स्त्री को निर्दोष समझता हूँ। मेरी समझ में दोष मछली का ही है। यदि वह पहले ही मछुवे को कह देती कि मुझमें सब कुछ करने की शक्ति नहीं है तो मछुवे की स्त्री उससे ऐसी याचना ही क्यों करती ? यदि मछुवे की स्त्री में सन्तोष ही रहता, तो वह पहली ही बार अपने पति को माँगने के लिए क्यों कहती ? मछली ने पहले तो अपने वरदानों से यह बात प्रकट कर दी कि मानो वह सब कुछ कर सकती है। किन्तु जब मछुवे की स्त्री ने कुछ ऐसी याचना की, जो उसकी शक्ति के बाहर थी, तब वह एकदम क्रुद्ध होकर अभिशाप ही दे बैठी। उसने मछुवे के उपकार का भी विचार नहीं किया। वह यह भूल गयी कि मछुवे ने यदि उस समय उस पर दया न की होती, तो शायद उसका अस्तित्व ही न रहता। उसने मछुवे से यह क्यों नहीं कहा, 'जा भैया, मैं तेरे लिए बहुत कर चुकी। अब कुछ नहीं कर सकती। अपनी रानी को समझा देना।'

हम सभी लोग अपने जीवन में यही भूल करते हैं। हम लोग अपने दोषों को छिपा कर दूसरों पर ही दोषारोपण करते हैं। हम दूसरों के कामों को महत्ता न देकर अपने ही कामों

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को महत्त्व देते हैं। हम यह तो निस्संकोच कहते हैं कि हमने किसी का उपकार किया, पर हम यह नहीं बताते कि उसने हमारी क्या सेवा की, उससे हमें क्या लाभ हुआ। सच तो यह है कि उपकार और सेवा एक बात है, और यह लेन-देन कुछ दूसरी बात है।

मछुवे की स्त्री ने जो कुछ किया, वह ठीक ही किया था। सभी लोग जानते हैं कि जब तक कोई वस्तु अप्राप्य रहती है, तभी तक उसके लिए बड़ी व्यग्रता रहती है। ज्योंही वह प्राप्त हो जाती है त्योंही हमें उससे विरक्ति हो जाती है और हम किसी दूसरी वस्तु के लिए व्यग्र हो जाते हैं। मछुवे की स्त्री ने जो कुछ किया, वह मनुष्य-स्वभाव के अनुकूल किया, परन्तु मछली ने जो कुछ किया, वह अपने देवी-स्वभाव के विरुद्ध किया। उसे तो मछुवे पर दया करनी चाहिए थी। उसे उसके उपकार को न भूलना था। राजा बनाने के बाद उसे एकदम भिक्षुक बना देना, कभी उचित नहीं कहा जा सकता। यदि मैं मछुवा होता तो उससे कहता, 'देवी, मैंने तुम्हें जब जल में छोड़ा था तब मैंने यह नहीं सोचा था कि तुम मुझे राजा बनाओगी। मैंने तो वह काम निःस्वार्थ भाव से ही किया था। अपनी स्त्री के कहने से तुमको देवी समझकर मैंने याचना की। तुमने भी याचना स्वीकार की। पर तुमने क्या मेरी स्त्री के हृदय में अभिलाषा नहीं पैदा कर दी? क्या तुमने उसके मन में यह आशा नहीं उत्पन्न कर दी कि तुम उसके लिए सब कुछ कर सकती हो? वह तो पहले अपनी स्थिति से सन्तुष्ट थी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुम्हारे ही कारण उसके मन में और कई अभिलाषाएं उत्पन्न हुईं। तुमने उनको भी पूर्ण किया। उसे तुम्हारी शक्ति पर विश्वास हो गया, तभी तो उसने ऐसी इच्छा प्रकट कर दी, जो तुम्हारे लिए असम्भव थी। तुमने जो कुछ दिया था, उस सबको इसी एक अपराध के कारण कैसे ले लिया ? तुम्हारे वरदान का अन्त अभिशाप में कैसे परिणत हो गया ? तुम्हें मेरी और मेरी स्त्री की स्थिति पर विचार कर काम करना चाहिए था। तुम भले ही देवी हो, पर तुममें त्याग नहीं है, प्रेम नहीं है, उपकार की भावना नहीं है, क्षमा नहीं है, दया नहीं है।

—पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. मछुवे ने छोटी मछली का क्या उपकार किया था ?
२. मछली ने उस उपकार का बदला किस तरह चुकाया ?
३. मछली अन्त में मछुवे से रुष्ट क्यों हो गयी ?
४. मछुवा क्यों बराबर मछली से एक के बाद दूसरी वस्तु माँगता रहा ?
५. लेखक ने मछली को दोषी क्यों बताया है ?
६. तुम्हारी समझ में कौन दोषी है ?

**अभ्यास**

१. निम्नलिखित गद्यांशों का भाव स्पष्ट रूप से लिखो—
   (क) वे भविष्य की बात नहीं सोचते थे क्योंकि वर्तमान में ही वे व्यस्त रहते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



(ख) इसकी एक भी बात सच नहीं है, पर इसमें हम लोगों के मनोरथों की सच्ची कहानी है ।

(ग) जब तक कोई वस्तु अप्राप्य रहती है, तभी तक उसके लिए व्यग्रता रहती है ।

२. सन्धि-विच्छेद करो तथा अर्थ बताओ—

दोषारोपण, निर्दोष, निस्संकोच, निर्बुद्धि ।

३. नीचे कुछ शब्द और उनके विलोम मिला-जुला कर दिये गये हैं । उन्हें छांट कर अलग-अलग इस प्रकार लिखो—

उदाहरण—साधारण-असाधारण ।

वरदान, सुरक्षित, वर्तमान, अतीत, उपकार, अभिशाप, अपकार, आदि, अनुकूल, इच्छा, अन्त, सौभाग्य, प्रतिकूल, अनिच्छा, दुर्भाग्य, असन्तोष, अरक्षित, सन्तोष ।

**आदेश**—कल्पना करो कि पुनः गरीब हुई मछुवी की भेंट किसी दिन मछली से हो गयी है । उन दोनों में जो बात हुई होगी, उसे अपने शब्दों में लिखो ।

## टिप्पणी

**आश्वासन**=ढाढ़स । **दिव्य**=अलौकिक । **व्यग्रता**=बेचैनी । **याचना**=माँगना, प्रार्थना करना ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३

# प्रेम, अहिंसा और बन्धुत्व

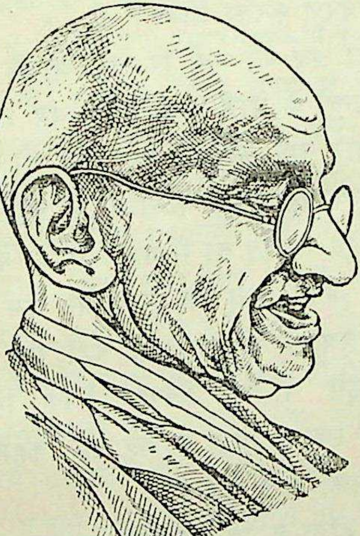

[ यह पाठ महात्मा गाँधी के एक व्याख्यान का अंश है, जो उन्होंने कलकत्ते में भारतीय लन्दन मिशनरी सोसाइटी के तत्त्वावधान में ईसाइयों की सभा में दिया था। इसमें प्रेम, अहिंसा और बन्धुत्व के सिद्धान्तों को बड़े स्पष्ट तथा रोचक ढंग से समझाया गया है। ]

मैंने अनेक बार यह देखने की कोशिश की है कि मैं अपने शत्रु को घृणा कर सकता हूँ या नहीं—यह देखने की नहीं कि प्रेम कर सकता हूँ या नहीं और मुझे ईमानदारी किन्तु पूरी-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


पूरी नम्रता के साथ कहना चाहिए कि मुझे नहीं ज्ञात हुआ कि मैं उससे घृणा कर सकता हूँ। मुझे यह याद नहीं आता कि कभी किसी भी मनुष्य के प्रति मेरे मन में तिरस्कार उत्पन्न हुआ हो। मैं नहीं समझ सकता कि यह स्थिति मुझे किस तरह प्राप्त हुई है। परन्तु आपसे कहता हूँ कि जीवन भर मैं इसी का आचरण करता आया हूँ।

बन्धुत्व का अर्थ यह नहीं कि जो आपके भाई बनें, जो आपको चाहें, उन्हीं के भाई आप बनें। यह तो सौदा हुआ। बन्धुत्व में व्यापार नहीं होता। मेरा धर्म तो मुझे यह शिक्षा देता है कि बन्धुत्व मनुष्यमात्र के साथ ही नहीं, प्राणिमात्र के साथ होना चाहिए। बात तो मैं यह दिखाने के लिए करता हूँ कि यदि हम अपने शत्रु के साथ भी प्रेम करने के लिए तैयार न हों तो हमारा बन्धुत्व कुछ नहीं, एक ढकोसला है। दूसरी तरह से इसे यों कह सकता हूँ कि जिसने हृदय में बन्धुत्व-भाव को स्थान दिया है, वह यह कहने का अवसर नहीं देगा कि उसका कोई शत्रु है।

सवाल यह होता है कि जो हमें अपना शत्रु समझते हैं, उनके साथ प्रेम किस तरह करें? प्रतिदिन मुझे हिन्दू, मुसलमान और ईसाई लोगों की चिट्ठियां मिलती हैं, जिनमें वे कहते हैं कि यह बात गलत है कि हम शत्रु को प्यार कर सकते हैं। हिन्दू लिखते हैं कि जो गाय हमारे प्राण के समान प्रिय है, उसे मारने वाले मुसलमान के साथ प्रेम किस तरह हो सकता है? ईसाई पूछते हैं कि अस्पृश्यता मानने वाले अछूत समझ कर अपने भाइयों को दलित करने वाले हिन्दुओं के साथ प्रेम किस प्रकार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


करें ? मुसलमान लेखक पूछता है कि बुतपरस्त के साथ मुहब्बत कैसे की जा सकती है ?

तीनों से मेरा यह कहना है कि आपका बन्धुत्व बेकार है, यदि आप अपने पत्र में वर्णित लोगों को न चाह सकते हों। इस तिरस्कार-भाव का अर्थ क्या है ? इसके मूल में या तो भय है या असहिष्णुता। यदि हम सब एक ईश्वर की सन्तान हैं तो एक दूसरे से क्यों डरें अथवा अपने से भिन्न मत रखने वाले से द्वेष क्यों करें। किन्तु जिस कृत्य से हम घृणा करते हैं उसे किसी मुसलमान को करने दें ? मेरा बन्धुत्व उत्तर देता है—हाँ। इसमें इतनी बात और जोड़ता हूँ—आप अपनी बलि चढ़ा दीजिए। यदि आप अपनी प्रिय वस्तु की रक्षा करना चाहते हैं तो बिना किसी पर हाथ उठाये, उसके लिए मर जाइये। मुझे ऐसी घटनाओं का अनुभव है। आपके अन्दर यदि प्रेम के साथ कष्ट सहने की हिम्मत हो तो आप पाषाण-हृदय को भी पानी-पानी कर डालेंगे। दुष्ट यदि आपसे सवाया हो तो आप हाथ उठाकर क्या करेंगे ? वह आपको जीतकर अधिक दुष्टता करेगा। दुष्टता की आग विरोध के घी से क्या और नहीं धधकती ? क्या इतिहास इस बात का साक्षी नहीं ? और क्या इतिहास में ही ऐसे उदाहरण नहीं मिलते कि अहिंसा की पराकाष्ठा को पहुँच जाने वालों ने बड़े-बड़े विकराल पशुओं को अपने वश में कर लिया ? पर इस पराकाष्ठा की अहिंसा को जाने दें। इसके लिए तो महावीर, शूरवीर योद्धा से भी अधिक बहादुरी की जरूरत है और जिसके प्रति आपके मन में तिरस्कार हो, उसके साथ लड़कर मर जाने के डर से बैठ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


रहने की अपेक्षा तो लड़ लेना अच्छा है। कायरता और बन्धुत्व परस्पर विरोधी हैं।

यूरोप तथा भारत के कितने ही बड़े-बड़े लेखक कहते हैं कि मनुष्य-जाति निर्वैर हो जाय, ऐसा समय कभी नहीं आ सकता। इसी बात पर मेरा विवाद है। मैं तो उनसे यह कहता हूँ कि जब तक मनुष्य निर्वैर नहीं होता, तब तक वह मनुष्य ही नहीं बन सकता। हम चाहें या न चाहें हमें इसी रास्ते जाना होगा और आज मैं आपसे यह कहने आया हूँ कि लाचार होकर इस रास्ते जाने की अपेक्षा स्वेच्छा से क्यों नहीं जाते? बात जरा विचित्र है कि मुझे ईसाइयों के सामने ऐसी बात करनी पड़ती है। हिन्दुओं के सामने भी यही कहना पड़ता है। कितने ही ईसाई मुझसे कहते हैं कि ईसा का निर्वैरता का उपदेश उनके केवल बारह शिष्यों के लिए ही था। हिन्दुस्तान में अहिंसा के विरोधी कहते हैं कि उससे कायरता फैलेगी। मैं आपसे कहने के लिए आया हूँ कि यदि भारतवर्ष अहिंसक नहीं बनेगा तो उसका सर्वनाश समझिए। दूसरी कौमों का भी नाश समझिए। भारत एक भारी भूखंड है, वह यदि हिंसक हो जाय तो और खंडों की तरह वह भी दुर्बलों पर जबरदस्ती करेगा और यदि ऐसा हुआ तो जरा परिणाम की कल्पना तो कीजिए।

मेरी राष्ट्रीयता में प्राणिमात्र का समावेश होता है, संसार की समस्त जातियों का समावेश होता है। यदि मैं भारत को अहिंसा का कायल कर सकूँ तो भारत सारे जगत को कुछ चमत्कार दिखा सकेगा। मैं नहीं समझता कि भारत दूसरे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


राष्ट्रों की चिताभस्म पर खड़ा होगा। मैं चाहता हूँ कि वह आत्मबल प्राप्त करे और दूसरे राष्ट्रों को भी बलवान बनावे। दूसरे राष्ट्र आत्मबल का मार्ग नहीं दिखा रहे हैं, इसलिए मुझे इस अटल सिद्धान्त का आश्रय लेना पड़ता है कि मैं कभी उस विधान को स्वीकार न करूँगा, जिसका आधार पशुबल हो।

राष्ट्रपति विल्सन ने चौदह सिद्धान्तों की रचना की और उस पर कलश चढ़ाते हुए कहा—'यदि हम इस पर सफल न हुए तो हथियार तो है ही।' मैं इसे उलट कर कहना चाहता हूँ कि हमारे सब पार्थिव शस्त्र बेकार हुए हैं। इसलिए किसी नये शस्त्र को खोजें। चलो अब प्रेम का शस्त्र, सत्य का शस्त्र लें। यह शस्त्र जब हमें मिल जायगा, तब हमें किसी दूसरे शस्त्र की जरूरत न रहेगी।

—महात्मा गाँधी

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. गाँधीजी जीवन भर किस आचरण का पालन करते रहे ?
२. गाँधीजी के अनुसार आदर्श बन्धुत्व क्या है ?
३. शत्रु को वश में करने का गाँधीजी ने क्या उपाय बताया है ?
४. गाँधीजी ने संसार के हित के लिए भारत का अहिंसक होना क्यों आवश्यक बताया है ?
५. गाँधीजी भारतीय राष्ट्रीयता का निर्माण किस रूप में करना चाहते थे ?

**अभ्यास**

१. निम्नलिखित अंशों का भाव स्पष्ट करो—
(क) दुष्टता की आग विरोध के घी से क्या और नहीं धधकती ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


(ख) कायरता और बन्धुत्व परस्पर विरोधी हैं ।

(ग) मेरी राष्ट्रीयता में प्राणिमात्र का समावेश होता है ।

२. 'परमवीर' शब्द दो पदों के योग से बना है—परम और वीर । इसमें पहला पद विशेषण है, दूसरा विशेष्य । इस प्रकार के शब्दों में कर्मधारय समास होता है । कर्मधारय समास से पाँच उदाहरण और लिखो ।

३. 'जिस कृत्य से हम घृणा करते हैं उसे किसी और को करने दें ?'— इस वाक्य में 'जिस' और 'उसे' ऐसे शब्द हैं, जो साथ-साथ प्रयोग में आते हैं । इनका प्रयोग करते हुए पाँच वाक्य बनाओ ।

४. 'मेरा यह कहना है' इस उपवाक्य की रचना पर विचार करो । यहाँ 'कहना' शब्द क्रियार्थक संज्ञा है । इन संज्ञाओं के अन्त में 'ना' लगा रहता है । ऐसे अन्य वाक्यों की रचना करो जिनमें क्रियार्थक संज्ञाओं का प्रयोग हो ।

**आदेश**—गाँधीजी के इस व्याख्यान का सारांश लिखो ।

## टिप्पणी

**अस्पृश्यता**=छुआछूत । **दलित करना**=कुचलना । **बुतपरस्त**= मूर्तिपूजक । **साक्षी**=गवाह । **पराकाष्ठा**=चरम सीमा । **समावेश**= शामिल होना ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ४

# नर हो, न निराश करो मन को

[ अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए हमें कैसा आचरण करना चाहिए, इस बात को प्रस्तुत कविता में बड़े प्रभावशाली ढंग से बताया गया है। यह रचना राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण गुप्त की है। ]

नर हो, न निराश करो मन को।
कुछ काम करो, कुछ काम करो,
जग में रह कर कुछ नाम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो,
समझो जिससे यह व्यर्थ न हो।
कुछ तो उपयुक्त करो तन को,
नर हो, न निराश करो मन को ॥१॥
सँभलो कि सुयोग न जाय चला,
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला ?
समझो जग को न निरा सपना,
पथ आप प्रशस्त करो अपना।
अखिलेश्वर है अवलम्बन को,
नर हो, न निराश करो मन को ॥२॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निज गौरव का नित ज्ञान रहे,
'हम भी कुछ हैं' यह ध्यान रहे।
सब जाय अभी, पर मान रहे,
मरणोत्तर गुंजित गान रहे।
कुछ हो, न तजो निज साधन को,
नर हो, न निराश करो मन को ॥३॥
प्रभु ने तुमको कर दान किये,
सब वांछित वस्तु-विधान किये।
तुम प्राप्त करो उनको न अहो,
फिर है किसका यह दोष कहो?
समझो न अलभ्य किसी धन को,
नर हो, न निराश करो मन को ॥४॥
किस गौरव के तुम योग्य नहीं,
कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं?
जन हो तुम भी जगदीश्वर के,
सब हैं जिसके अपने घर के।
फिर दुर्लभ क्या उसके जन को,
नर हो, न निराश करो मन को ॥५॥
करके विधिवाद न खेद करो,
निज लक्ष्य निरन्तर भेद करो।
बनता बस उद्यम ही विधि है,
मिलती जिससे सुख की निधि है।
समझो धिक निष्क्रिय जीवन को,
नर हो, न निराश करो मन को ॥६॥

—मैथिलीशरण गुप्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


## अध्ययन

**प्रश्न**

१. मनुष्य-जन्म किस अभिप्राय से हुआ है ?
२. हमें निराश क्यों नहीं होना चाहिए ?
३. हमें किस बात का ध्यान रखना चाहिए ?
४. हमारी असफलता के लिए दोषी कौन है ?
५. कवि इस कविता में हमसे क्या-क्या करने के लिए कहता है ?
६. वह हमसे क्या-क्या न करने के लिए कहता है ?

**अभ्यास**

१. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव अपने शब्दों में लिखो—
(क) प्रभु ने तुमको कर दान किये,
सब वांछित वस्तु-विधान किये ।
(ख) करके विधिवाद न खेद करो,
निज लक्ष्य निरन्तर भेद करो ।
(ग) बनता बस उद्यम ही विधि है,
मिलती जिससे सुख की निधि है ।

२. उन पंक्तियों को छाँटो जो तुम्हें सबसे अच्छी लगती हैं और बताओ कि वे तुम्हें क्यों अच्छी लगती हैं ।

३. 'प्रशस्त' और 'उपयुक्त' शब्दों के तुक वाले पाँच-पांच शब्द लिखो ।

**आदेश**—१. इस कविता के आधार पर 'उद्यम ही विधि है' पर एक लेख लिखो ।
२. इस कविता को कंठस्थ करो ।

## टिप्पणी

**उपयुक्त**=उचित, योग्य । **निरा**=केवल । **अलभ्य**=जो प्राप्त न हो सके । **विधिवाद**=भाग्य पर भरोसा करना । **लक्ष्य-भेद करना**=उद्देश्य प्राप्त करना ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ५

# महाभारत

[प्रस्तुत पाठ में पांडवों के अज्ञातवास से आगे की कथा का वर्णन है। इसमें श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन के मोह-निवारण और कौरव-पांडव युद्ध का चित्रण है। महाभारत की कथा हमें सिखाती है कि अन्त में धर्म और सत्य की विजय होती है।]

अज्ञातवास के बाद पांडव राज्य-प्राप्ति का उपाय सोचने लगे। सबका यह विश्वास था कि दुर्योधन पांडवों का भाग आसानी से नहीं देगा। एक दिन इस विषय पर विचार करने के लिए राजा विराट के यहाँ एक सभा हुई। सभा में निश्चय हुआ कि श्रीकृष्ण पांडवों के दूत बनकर हस्तिनापुर जायँ और दुर्योधन से कहें कि वह पांडवों का राज्य उन्हें वापस दे दे।

श्रीकृष्ण हस्तिनापुर गये। उन्होंने दुर्योधन को बहुत समझाया पर उसने उनकी एक न सुनी। युधिष्ठिर पाँच गाँव लेकर भी सन्धि करने को तैयार थे। परन्तु दुर्योधन कहता रहा, "हे केशव ! बिना युद्ध के सुई की नोक के बराबर भी भूमि न दूंगा—सूच्यग्रं नैव दास्यामि विना युद्धेन केशव !"

अब दोनों पक्ष युद्ध की तैयारियां करने लगे। देश-विदेश के अनेक राजाओं से सहायता माँगी गयी, जिसमें भारत के बाहर से भी अनेक शक, यवन तथा पर्वतीय राजाओं ने भाग लिया। श्रीकृष्ण ने दोनों को सहायता दी। कौरवों को उन्होंने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


अपनी सेना दी और पांडवों की ओर वे स्वयं अकेले रहे। उन्होंने यह भी प्रतिज्ञा की कि मैं युद्ध में शस्त्र-ग्रहण नहीं करूँगा।

कौरवों और पांडवों की सेनाएं, जब युद्ध के लिए सुसज्जित होकर आमने-सामने खड़ी हो गयीं तो अपने ही बन्धु-बान्धवों और गुरुजनों को युद्ध के लिए सामने खड़ा देखकर अर्जुन के मन में मोह उत्पन्न हुआ और वह कहने लगा, "मैं इन स्वजनों से युद्ध न करूँगा।" परन्तु श्रीकृष्ण ने समझाया कि क्षत्रिय का परम कर्तव्य है—धर्म की रक्षा के लिए युद्ध करना। आत्मा तो अमर है। न कोई मरता है, न मारता है। इसलिए मोह छोड़कर युद्ध करो। श्रीकृष्ण के उपदेश से अर्जुन का मोह दूर हुआ और वह युद्ध के लिए तैयार हो गया।

फिर क्या था? रण-भेरी बज उठी और दोनों सेनाओं ने एक दूसरे पर प्रबल आक्रमण कर दिया। धनुषों की टंकार और वीरों के हुंकार से आकाश गूंज उठा। लोथ पर लोथ गिरने लगी। भीष्म, द्रोण, अर्जुन और अभिमन्यु का हस्त-लाघव देखने योग्य था। किसी ने आग्नेयास्त्र का प्र योग किया, जिससे आग लग गयी तो किसी ने उसे वरुणास्त्र से जल बरसा कर शान्त कर दिया। एक ने शूल फेंका तो दूसरे ने उसे बीच में ही नाराच से खंडित कर दिया। भीम की गदा तो प्रलय ढा रही थी। जो उसकी चपेट में आता, धराशायी हो जाता। कई सहस्र वीर पहले ही दिन रणभूमि में खेत रहे।

पितामह भीष्म ने दस दिन तक कौरवों की सेना का नेतृत्व किया और अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार प्रतिदिन दस हजार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सैनिकों का संहार किया। उनके युद्ध-कौशल के आगे अर्जुन की एक न चलती। एक बार तो उन्होंने अर्जुन और कृष्ण को इतना व्याकुल कर दिया कि श्रीकृष्ण भी अपनी प्रतिज्ञा भूलकर चक्र लेकर भीष्म को मारने दौड़ पड़े। युद्ध के नौ दिनों में ही पांडव-पक्ष के अनेक महारथी मारे गये। पांडव यह देखकर बहुत घबराये। आपस में विचार-विमर्श कर नवें दिन रात के समय युधिष्ठिर भीष्म के पास जाकर बोले, "पितामह ! आपके जीवित रहते हुए विजय कैसे प्राप्त हो सकती है ?" भीष्म ने कहा, "तुम्हारी सेना में शिखंडी नाम का जो महारथी है, वह पूर्व जन्म में स्त्री था। मेरी दृष्टि में वह आज भी स्त्री है। अतः मैं उस पर बाण नहीं चलाऊँगा। यदि उसकी ओट से अर्जुन मेरे ऊपर बाण चलाये तो मेरा अन्त हो सकता है।"

अगले दिन अर्जुन शिखंडी को आगे कर भीष्म के सामने आ डटे। भीष्म ने शिखंडी को देखते ही धनुष-बाण रख दिये। अर्जुन ने शिखंडी की ओट से भीष्म पर तीक्ष्ण बाण छोड़े। भीष्म का कवच छिन्न-भिन्न हो गया। रोम-रोम बाणों से बिंध गया और वे रथ से नीचे गिर पड़े। परन्तु नीचे गिर कर भी उनके शरीर का स्पर्श पृथ्वी से नहीं हुआ। उनके शरीर में बिंधे हुए बाण उनकी शय्या बन गये और इसी 'शर-शय्या' पर वे बहुत दिनों तक लेटे रहे।

भीष्म का पृथ्वी पर गिरना था कि कौरवों की सेना में हाहाकार मच गया। वे पांडवों के भी पूज्य थे। अतः पांडवों को कम दुःख न हुआ। युद्ध बन्द हो गया। अब दोनों पक्ष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


के लोग उनके पास एकत्र हो गये और शोक प्रकट करने लगे। भीष्म ने कहा, "आप लोग दुखी न हों। मैं अभी मरूँगा नहीं। मुझे अपने पिता से इच्छित मृत्यु का वरदान मिला है।"

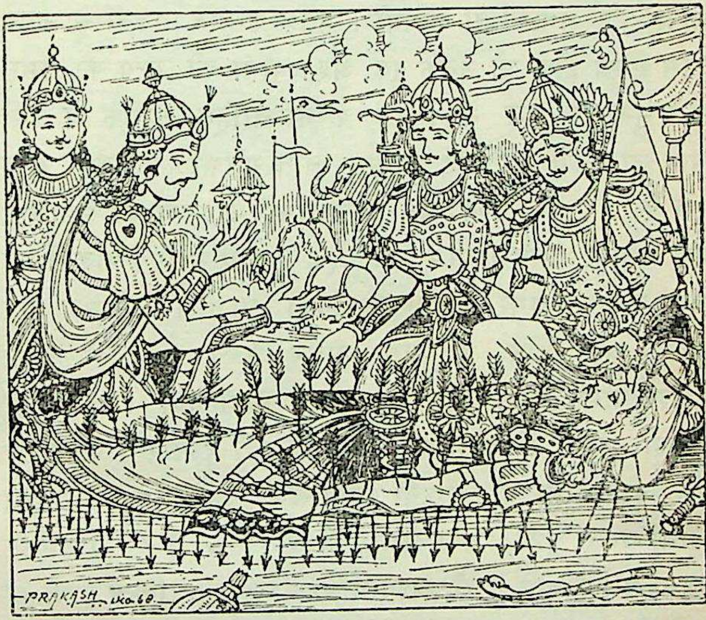


भीष्म पितामह 'शर-शय्या' पर

ग्यारहवें दिन द्रोणाचार्य कौरवों के सेनापति हुए। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि मैं युधिष्ठिर को जीवित पकड़ कर दुर्योधन को सौंप दूँगा। पर कृष्ण के रथ-संचालन और अर्जुन के रण-कौशल के आगे उन्हें यह सफलता न मिली। अपने सेनापति बनने के तीसरे दिन द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह का निर्माण किया, जिसमें अभिमन्यु का नृशंसतापूर्ण वध हुआ। यह पांडव पक्ष की बहुत बड़ी क्षति थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


युद्ध के पन्द्रहवें दिन दोपहर तक द्रोण ने पांडव पक्ष के अनेक अन्य महारथियों का संहार कर डाला। श्रीकृष्ण ने देखा कि यदि द्रोण इसी प्रकार युद्ध करते रहे तो सारी पांडव सेना शीघ्र ही समाप्त हो जायगी। अतः उन्होंने पांडवों से कहा, "इस समय द्रोण को उनके पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु का समाचार सुनाकर युद्ध से विरत करना चाहिए क्योंकि वे तभी मारे जा सकेंगे जब कोई अप्रिय बात सुनकर वे स्वयं शस्त्र रख दें।" पर प्रश्न था, अश्वत्थामा की मृत्यु का समाचार कैसे सुनाया जाय। भीम को एक उपाय सूझा। पाडवों की सेना में अश्वत्थामा नामक एक हाथी था। भीम ने उसे मार डाला और द्रोण के पास जाकर उच्च स्वर में कहा, "अश्वत्थामा मारा गया, अश्वत्थामा मारा गया।" द्रोण को सहसा भीम की बातों पर विश्वास नहीं हुआ। वे जानते थे कि अश्वत्थामा को मारना हँसी-खेल नहीं। अतः उन्होंने युधिष्ठिर से पूछा, "क्या भीम की बात सच है?" युधिष्ठिर हिचकते हुए बोले, "हाँ, अश्वत्थामा मारा गया, किन्तु हाथी।" अन्तिम दो शब्द उन्होंने धीरे से कहे और तभी श्रीकृष्ण ने अपना शंख बजा दिया जिससे द्रोणाचार्य युधिष्ठिर का अन्तिम शब्द न सुन सके। युधिष्ठिर सदा सच बोलते थे। अतः द्रोणाचार्य को उनकी बात पर विश्वास हो गया। पुत्र के वध का समाचार उनके लिए असह्य हो गया। वे युद्ध से विरत होकर ईश्वर का ध्यान करने लगे। इसी समय पांडवों के सेनापति धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य का सिर काट लिया।

द्रोणाचार्य की मृत्यु के बाद कर्ण कौरवों के सेनापति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

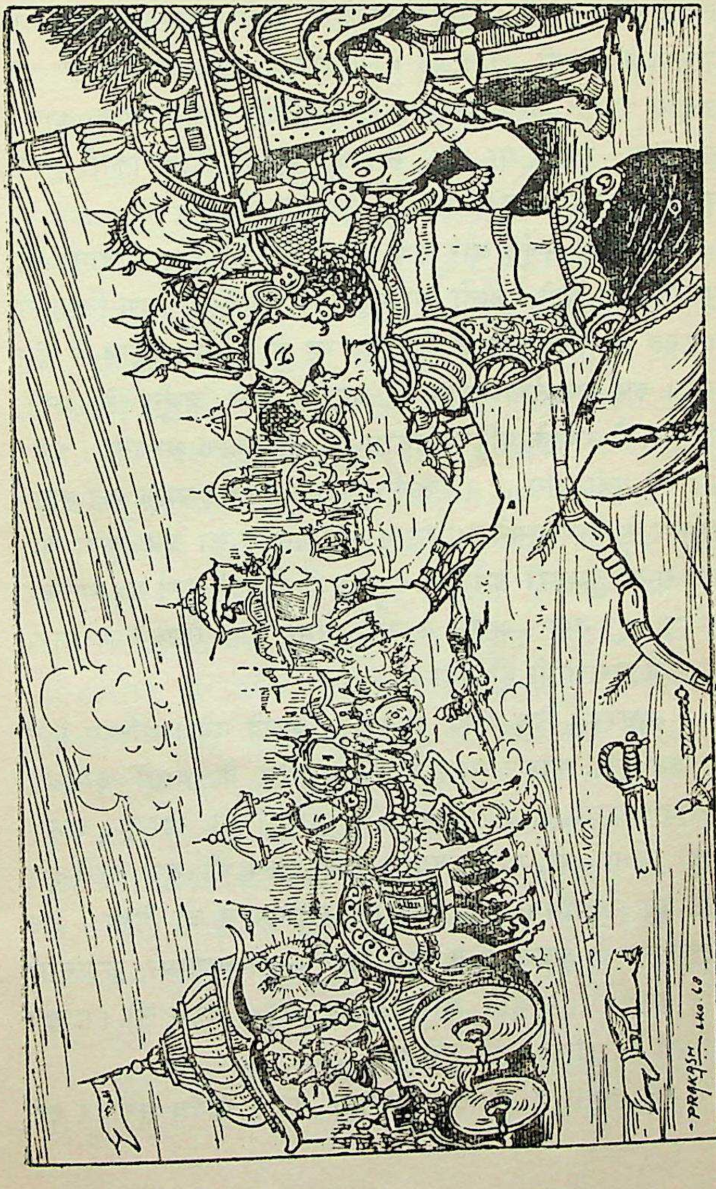


कर्ण-अर्जुन-युद्ध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बनाये गये। कर्ण अपूर्व योद्धा थे। उनके युद्ध-कौशल से भी पांडवों की बड़ी क्षति हुई। युधिष्ठिर और सहदेव को तो उन्होंने परास्त करके भी छोड़ दिया क्योंकि उन्होंने माता कुन्ती को वचन दिया था कि मैं अर्जुन के अतिरिक्त किसी दूसरे पांडव को नहीं मारूँगा।

अन्त में अर्जुन और कर्ण का भीषण युद्ध हुआ। दोनों का युद्ध देखकर सारे सेनानी दंग रह गये। दोनों ही बाण-विद्या में पारंगत थे। लड़ते-लड़ते कर्ण के रथ के पहिये जमीन में धँस गये। कर्ण किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। उसने अर्जुन से कहा, "ठहरो, मैं रथ के पहिये निकाल लूँ, तब बाण चलाना। धर्म-युद्ध की यही माँग है।" अर्जुन ने कहा, "जिस समय छह महा-रथियों के साथ तुमने अभिमन्यु जैसे बालक का वध किया था, उस समय तुम्हारी धर्मबुद्धि कहाँ गयी थी?" कर्ण यह सुनकर लज्जित हो गया। अर्जुन ने उसी समय एक ऐसा बाण मारा कि कर्ण धराशायी हो गया।

अठारहवें दिन शल्य सेनापति बनाये गये। अन्तिम दिन का युद्ध बड़ा भयंकर था। इसी दिन भीम के हाथों दुर्योधन के शेष भाइयों का अन्त हुआ और कौरवों की ग्यारह अक्षौ-हिणी सेना भी मारी गयी। राजा शल्य भी, युद्ध करते हुए मारे गये। दुर्योधन भाग कर एक सरोवर में जा छिपा। अब कौरव-पक्ष के केवल तीन वीर शेष थे—अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कृतवर्मा। उन्होंने भी भागकर अन्यत्र शरण ली। पांडव दुर्योधन की खोज करने लगे।

एक व्याध से दुर्योधन का पता पाकर पांडव सरोवर पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहुँचे और दुर्योधन को ललकारने लगे। स्वाभिमानी दुर्योधन ललकार सुनकर चुप कैसे रह सकता था ? वह तुरन्त गदा सँभालकर सामने आ गया और बोला, "तुम लोगों में से जो भी चाहे, मुझसे गदा-युद्ध कर ले। जो जीतेगा, वही सम्पूर्ण राज्य का स्वामी होगा।" पांडवों की ओर से भीम ने गदा सँभाली। गदाओं की टक्कर से आग की चिनगारियां निकलने लगीं। गदा युद्ध में कमर से नीचे प्रहार करना वर्जित था, पर भीम ने द्रौपदी के अपमान के समय दुर्योधन की जाँघ तोड़ने की प्रतिज्ञा की थी। अतः अवसर पाकर उसने दुर्योधन की जाँघ पर गदा का प्रहार किया। उसकी जाँघ टूट गयी और वह धराशायी हो मृत्यु की घड़ियां गिनने लगा।

दुर्योधन की मृत्यु के पश्चात महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया। युधिष्ठिर राजा हुए। भीष्म पितामह जीवित थे और शर-शय्या पर पड़े हुए थे। उन्होंने युधिष्ठिर को धर्म और नीति के अनेक उपदेश दिये और कहा, "युधिष्ठिर ! तुम्हारी विजय इसीलिए हुई है कि तुम सत्य और धर्म के पथ पर दृढ़ रहे। इस बात को सदैव स्मरण रखना कि जहाँ धर्म होता है, वहीं जय होती है—यतो धर्मः ततो जयः। न्याय, धर्म और विवेक के साथ प्रजा का पालन करना।" युधिष्ठिर ने उनके पास जाकर धर्म और राजनीति की शिक्षा ली। तदनन्तर उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया। धर्मानुकूल आचरण करते हुए वे प्रजा का पालन करने लगे।

बहुत दिनों तक राज्य करने के बाद पांडवों ने अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को राजा बनाया और स्वयं हिमालय की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ओर चल पड़े। साथ में द्रौपदी भी थी। द्रौपदी सहित पांडव हिमालय पर चढ़ते गये। मार्ग में द्रौपदी, सहदेव, नकुल, अर्जुन तथा भीम एक-एक कर स्वर्गवासी होते गये। अन्त में केवल युधिष्ठिर बचे। कहते हैं कि उनके लिए स्वर्ग से एक रथ आया और वे सदेह स्वर्ग चले गये क्योंकि युधिष्ठिर धर्मराज थे और उन्होंने आजीवन धर्म और सत्य का पालन किया था।

—करुणापति त्रिपाठी

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. पांडवों के अज्ञातवास के बाद विराट की सभा में क्या निश्चय हुआ ?
२. श्रीकृष्ण के सन्धि-प्रस्ताव का क्या परिणाम हुआ ?
३. युद्धस्थल में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को क्या उपदेश दिये ?
४. भीष्म का वध किस प्रकार हुआ ?
५. द्रोण किस प्रकार मारे गये ?
६. रथ का पहिया निकालते समय भी अर्जुन ने कर्ण को क्यों मार डाला ?
७. दुर्योधन का अन्त किस प्रकार हुआ ?
८. युधिष्ठिर के लिए स्वर्ग से विमान क्यों आया ?

**अभ्यास**

१. निम्नलिखित शब्दों तथा मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

हस्त-लाघव, धराशायी, प्रलय ढाना, खेत रहना, विचार-विमर्श छिन्न-भिन्न होना, रण-कौशल, किंकर्तव्यविमूढ़।

२. कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो सदैव एक ही लिंग में प्रयुक्त होते हैं जैसे—पक्षी । इसी प्रकार के पाँच शब्द लिखो जो केवल पुंलिंग में ही प्रयुक्त होते हैं ।

३. कोष्ठकों में दिये गये शब्दों में से उपयुक्त शब्द छाँट कर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

(अ) अर्जुन को अपने सम्बन्धियों को युद्ध के लिए सामने देखकर……हुआ । (अनुराग, क्रोध, मोह, पश्चात्ताप)

(ब) श्रीकृष्ण अपनी……भूलकर चक्र लेकर भीष्म को मारने दौड़ पड़े । (सुध-बुध, प्रतिज्ञा, नैतिकता, कर्तव्यशीलता) ।

(स) द्रोण को……भीम की वार्ता पर विश्वास नहीं हुआ । (सहसा, कदाचित्, सदैव, तब)

४. 'तदनन्तर उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया ।' वाक्य में 'उन्होंने' अन्य पुरुष सर्वनाम 'वह' के कर्त्ताकारक बहुवचन का रूप है, जो आदरसूचक रूप में प्रयुक्त हुआ है । 'वह' के अन्य कारकों के रूपों को छाँटो तथा अपने वाक्यों में उनका प्रयोग करो ।

**आदेश**—महाभारत युद्ध की प्रमुख घटनाओं का वर्णन करो ।

## टिप्पणी

**रणभेरी**=युद्ध का बाजा । **शूल**=एक प्राचीन शस्त्र विशेष, भाला या बरछी । **नाराच**=लोहे का बाण । **संहार**=विनाश । **विरत होना**=अलग होना । **पारंगत**=निपुण । **अक्षौहिणी**=चतुरंगिणी सेना की एक इकाई, जिसमें १,०९,३५० पैदल, ६५,६१० घोड़े, २१,८७० रथ और २१,८७० हाथी होते थे । **महारथी**=वह योद्धा, जो अकेला दस सहस्र धनुर्धरों से लड़ सके ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ ६

# साइकिल की सवारी

[ श्री सुदर्शन हिन्दी के प्रसिद्ध कहानी लेखक थे । उनकी कहानियां तुमने पहले पढ़ी हैं । उनकी यह कहानी हास्य रस की एक प्रसिद्ध कहानी है । ]

भगवान ही जानता है, जब मैं किसी को साइकिल की सवारी करते या हारमोनियम बजाते देखता हूँ, तो मुझे अपने ऊपर कैसी दया आती है । सोचता हूँ—भगवान ने ये दोनों विद्याएं भी खूब बनायी हैं । एक से समय बचता है, दूसरी से समय कटता है । मगर मजा देखिए, हमारे प्रारब्ध में बीसवीं सदी की ये दोनों विद्याएं नहीं हैं । न साइकिल चला सकते हैं, न बाजा बजा सकते हैं । पता नहीं, कब से यह धारणा हमारे मन में बैठ गयी है कि हम सब कुछ कर सकते हैं, मगर ये दो काम नहीं कर सकते ।

शायद १९३२ की बात है । बैठे-बैठे खयाल आया—चलो साइकिल चलाना सीख लें । और, इसकी शुरुआत यों हुई कि हमारे लड़के ने चुपचुपाते में यह विद्या सीख ली और हमारे सामने से सवार होकर निकलने लगा । अब आपसे क्या कहें कि लज्जा और घृणा के कैसे-कैसे खयाल हमारे मन में उठे । सोचा, भई, क्या हमीं संसार भर में फिसड्डी रह गये हैं । सारी दुनिया चलाती है, जरा-जरा से छोकरे चलाते हैं, मूर्ख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


और गँवार चलाते हैं। हम तो परमात्मा की कृपा से फिर भी पढ़े-लिखे हैं। क्या हमीं नहीं चला सकेंगे ? आखिर इसमें मुश्किल क्या है ? कूदकर चढ़ गये और ताबड़तोड़ पाँव मारने लगे। और जब देखा कि कोई राह में खड़ा है, तो टन-टन करके घंटी बजा दी। न हटा तो क्रोधपूर्ण आँखों से उसकी तरफ देखते हुए पास से निकल गये। हमने निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो जाय, परवाह नहीं। सीखेंगे और यार-दोस्तों को हैरान कर देंगे।

दूसरे दिन हमने अपने फटे-पुराने कपड़े तलाश किये और उन्हें ले जाकर श्रीमतीजी के सामने पटक दिया कि जरा मरम्मत तो कर दो।

श्रीमतीजी ने हमारी तरफ अचरज-भरी दृष्टि से देखा और कहा, "इन कपड़ों में अब जान ही कहाँ है, जो मरम्मत करूँ ? ये तो फेंक दिये थे। आप कहाँ से उठा लाये ? वहीं जाकर डाल आइए।"

हमने मुसकराकर श्रीमतीजी की तरफ देखा। इसका मतलब यह था कि तुम्हें क्या मालूम, हमारे क्या-क्या इरादे हैं। फिर कहा, "तुम हर समय बहस न किया करो। आखिर मैं इन्हें ढूँढ़-ढाँढ़कर लाया हूँ, तो ऐसे ही तो नहीं उठा लाया। कृपा करके इनकी मरम्मत कर डालो जल्दी से।"

मगर श्रीमतीजी बोलीं, "पहले बताओ, इनका बनेगा क्या ?"

झख मारकर बताना पड़ा कि रोज-रोज का ताँगे का खर्च मारे डालता है। साइकिल चलाना सीखेंगे और पैसे बचायेंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



श्रीमतीजी ने बच्चे को सुलाते हुए हमारी तरफ देखा और मुसकरा कर बोलीं, "मुझे तो आशा नहीं कि आपसे यह बेल मँढ़े चढ़ सके। ख़ैर, कोशिश कर देखिये। मगर इन कपड़ों का क्या करोगे ?"

हमने जरा रोब से कहा, "आखिर बाइसिकिल से एक-दो बार गिरेंगे या नहीं ? और गिरने से कपड़े फटेंगे या नहीं ? जो जाहिल हैं, वे नये कपड़ों का नुकसान कर बैठते हैं। जो बुद्धिमान हैं, वे पुराने कपड़ों से काम चलाते हैं। और हमारा खयाल है, हम बुद्धिमान हैं।"

मालूम होता है, हमारी इस युक्ति का जवाब हमारी स्त्री के पास कोई न था, क्योंकि उन्होंने हमारी बात का जवाब न दिया और उसी समय मशीन मँगवाकर उन कपड़ों की मरम्मत शुरू कर दी।

इधर हमने बाजार जाकर जम्बक के दो डिब्बे खरीद लिये कि चोट लगने पर उसी समय इलाज किया जा सके। इसके बाद बाहर जाकर एक खुला मैदान तलाश किया, ताकि दूसरे दिन से साइकिल-सवारी का सबक शुरू किया जा सके।

अब हमारे सामने यह सवाल आया कि अपना उस्ताद किसे बनायें ? पहले तो यह सोचा कि बिना उस्ताद के सीखो। हमारे लड़के ने क्या किसी की शागिर्दी की थी ? कहता था, मैंने तो ऐसे ही सीख लिया। एक बार गिरा, दो बार गिरा, तीसरी बार गिरने की नौबत ही नहीं आयी। मगर फिर सोचा कि आदमी जो काम सीखना चाहे, नियम से सीखे, नहीं तो नुकसान उठाता है और दुनिया उस पर हँसती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसलिए यह तो निश्चय कर लिया कि किसी को उस्ताद बनायें। मगर यह निश्चय न कर सके कि किसे बनायें। इसी उधेड़-बुन में बैठे थे कि तिवारी लक्ष्मीनारायण आ गये और बोले, "अमां! हो जाय एक बाजी शतरंज की। जरा आवाज दो लड़के को। शतरंज और मुहरे उठा लाये। आज हम तुम्हें हरायेंगे।"

हमने सिर हिलाकर जवाब दिया, "नहीं तिवारी! आज तो जी नहीं चाहता। आज नहीं खेलेंगे हम।"

तिवारी ने अपने घुटे हुए सिर से टोपी उतार कर हाथ में ले ली और चोटी पर हाथ फेरकर बोले, "हम तो इतनी दूर से चलकर आये हैं कि एक-दो बाजियां खेलेंगे। तुमने कह दिया, जी नहीं चाहता।"

हमने कहा, "अगर जी न चाहे तो कोई क्या करे?"

यह कहते-कहते हमारा गला भर आया। तिवारी का दिल पसीज गया। हमारे पास बैठकर बोले, "अरे भाई! मामला क्या है? घरवाली से झगड़ा तो नहीं हो गया?"

हमने कहा, "तिवारी भैया! क्या कहें, सोचा था, लाओ, साइकिल की सवारी ही सीख लें। मगर अब कोई ऐसा आदमी नहीं दिखायी देता, जो हमारी मदद करे। बताओ, है कोई ऐसा आदमी तुम्हारे खयाल में, जो हमारा उस्ताद बनने के योग्य हो।"

तिवारी ने हमारी तरफ बेबसी की आँखों से ऐसे देखा, मानो हमको कोई खजाना मिल रहा है, और वे खाली हाथ रहे जाते हैं। बोले, "मेरी मानो तो यह रोग न पालो। अब

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस उम्र में साइकिल पर चढ़ोगे ? और फिर यह भी कोई सवारियों में सवारी है। अजी, लानत भेजो इस खयाल पर; और आओ एक बाजी खेलो।" कहने लगे, "साइकिल चलाना सीखोगे ! क्या ताँगे टूट गये हैं ?"

मगर हमने भी कच्ची गोलियां नहीं खेली थीं। साफ समझ गये कि तिवारी ईर्ष्या की आग में फुँका जाता है। हमने मुँह फुलाकर कहा, "भई तिवारी ! हम तो जरूर सीखेंगे, कोई आदमी बताओ।"

तिवारी सोच में पड़ गया। हमने फिर आग्रह किया, "भई, बताओ भी।"

तिवारी—"आदमी तो ऐसा है एक। मगर वह मुफ्त में नहीं सिखायेगा। फीस लेगा। दे सकोगे ?"

हम—"कितने दिन में सिखा देगा ?"

तिवारी—"यही दस-बारह दिन में, और क्या ?"

हम—"और फीस क्या लेगा हमसे ?"

तिवारी—"औरों से पचीस लेता है। तुमसे बीस ले लेगा हमारी खातिर। इससे कम पर राजी न होगा।"

हमने सोचा, दस दिन में सिखायेगा और बीस रुपये फीस लेगा। दस दिन, बीस रुपये। बीस रुपये, दस दिन। अर्थात दो रुपये रोजाना, अर्थात साठ रुपये महीना, और वह भी एक-दो घंटों के लिए। ऐसी तीन-चार ड्यूटियां मिल जायँ, तो ढाई-तीन सौ रुपया महीना हो गया। हमने तिवारी से तो इतना ही कहा कि जाकर मामला तय कर आओ। मगर जी में खुश हो रहे थे कि साइकिल चलाना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



आ जाय तो एक ट्रेनिंग स्कूल खोल दें, और तीन-चार सौ रुपया महीना कमाने लगें। मौज हो जाय, आमदनी की एक और मद खुल जाय।

इधर तिवारीजी मामला तय करने गये, उधर हमने यह शुभ समाचार जाकर श्रीमतीजी को सुना दिया कि कुछ दिनों बाद हम एक ऐसा स्कूल खोलने वाले हैं, जिसमें तीन-चार सौ रुपया महीने की आमदनी होगी और हम उस स्कूल में लड़कों को साइकिल चलाना सिखायेंगे।

श्रीमतीजी बोलीं, "पहले आप तो सीख लो, फिर स्कूल भी खोल लेना। मैं तो समझती हूँ कि तुम सीख ही न सकोगे, दूसरों को सिखाना तो दूर की बात है।"

हमने बिगड़कर कहा, "यह तुममें बड़ी बुरी आदत है कि हर काम में टोक देती हो। हमसे बड़े-बड़े सीख रहे हैं, तो हम क्यों न सीख सकेंगे? और पहले तो शायद सीखते या न सीखते, मगर अब जब तुमने टोका है, तो जरूर सीखेंगे। तुम भी क्या कहोगी।"

श्रीमतीजी बोलीं, "मैं तो कहती हूँ, तुम हवाई जहाज चलाओ, यह बाइसिकिल क्या चीज है। पर तुम्हारे स्वभाव से डर लगता है। एक बार गिरोगे तो देख लेना, बाइसिकिल वहीं फेंक-फाँक कर भाग आओगे।"

इतने में तिवारी ने बाहर से आवाज दी। हमने जाकर देखा, उस्ताद साहब खड़े हैं। काला रंग, नाटा कद, भद्दी-सी शक्ल-सूरत, मोटी गर्दन, गले में काला तागा, मैली लुंगी, पाँव में कसूरी जूता जो पहलवान लोग पहनते हैं, छोटी-छोटी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


आँखें । पहले तो मन में आया, कह दें, हमें यह उस्ताद पसन्द नहीं । फिर सोचा, हमें साइकिल चलाना सीखना है । हमें इनको किसी फिल्म में हीरो थोड़े ही बनाना है । यह सोचकर हमने शरीफ विद्यार्थियों के समान श्रद्धा-भाव से हाथ बाँधकर प्रणाम किया और चुपचाप खड़े हो गये । उस्ताद ने हमें घूरकर देखा । हमने कहा, "उस्ताद ! कल सवेरे ही सवेरे आ जाना । हम तैयार रहेंगे ।"

अब रात को आराम की नींद कहाँ ? बार-बार चौंकते थे और देखते थे कि कहीं सूरज तो नहीं निकल आया । जरा भी ऊँघ जाते, तो साइकिल के सपने आते । एक बार देखा कि हम साइकिल से गिरकर घायल हो गये हैं, अस्पताल में एक अंग्रेज हमारा आपरेशन कर रहा है । दूसरी बार देखा कि हम जमीन पर खड़े हैं, और हमारी साइकिल आसमान पर चल रही है । फिर ऐसा मालूम हुआ कि हमारे उस्ताद ने हमें गोद में उठाकर उछाल दिया । दूसरे क्षण में देखा, तो हम साइकिल पर सवार हैं, साइकिल आप से आप हवा में उड़ी जा रही है और लोग हमारी तरफ आँखें फाड़-फाड़ कर देख रहे हैं । एकाएक शैतान ने आकर हमारे कन्धे पर हाथ रख दिया, और हम जमीन पर गिर पड़े । इतने में हमारी आँख खुल गयी—देखा, यह सब सपना था । हम चारपाई पर थे और हमारी स्त्री हमारा कन्धा हिला-हिला कर जगा रही थी ।

उठकर देखा तो दिन निकल आया था । इसी समय उस्ताद भी आ गये, और हम हरि का नाम लेकर बाग की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


तरफ चल दिये। लेकिन अभी घर से निकले ही थे कि बिल्ली रास्ता काट गयी, और एक लड़के ने छींक दिया। क्या कहें, हमें कैसा क्रोध आया उस नामुराद बिल्ली पर और उस शैतान लड़के पर। मगर क्या करते? दाँत पीसकर रह गये। एक बार फिर भगवान का नाम लिया और आगे बढ़े। पर बाजार में पहुँचकर देखा कि हर आदमी जो हमारी तरफ देखता है, मुसकराता है। अब हम हैरान थे कि बात क्या है। और यह लोग मुसकराते क्यों हैं? एकाएक हमने देखा कि हमने जल्दी और घबराहट में पाजामा और अचकन दोनों उलटे पहन लिये हैं, और लोग इसी पर हँस रहे हैं। सिर मुँड़ाते ही ओले पड़े। पहला कदम ही गलत।

हमने उस्ताद से माफी माँगी और घर लौट आये। अर्थात पहला दिन व्यर्थ गया।

दूसरे दिन निकले तो हमारे घर के पास जो लाला साहब रहते हैं, वे सामने आ गये और मुसकराकर बोले, "कहिए, कहाँ जा रहे हैं?"

हमने जल-भुन कर जवाब दिया, "नरक को जा रहे हैं। आप भी चलेंगे क्या? बड़ी अच्छी जगह है।"

लालासाहब—"अरे! मैंने तो केवल यह पूछा था कि आप कहाँ जा रहे हैं।"

हम—"और हमने प्रार्थना की है कि नरक को जा रहे हैं। दो आदमियों की जगह खाली है।"

लाला—"भगवान जानता है, मुझे यह मालूम न था कि आप किसी जरूरी काम से जा रहे हैं।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


हम—"तो हम बेकार घूमा करते हैं ? मानो हमारा दिमाग खराब है।"

उधर उस्ताद साहब ने साइकिल की घंटी बजाकर हमें अपने पास बुलाया और बोले, " मैं एक गिलास लस्सी पी लूँ। आप जरा साइकिल को थामिये दो मिनट के लिए।"

उस्ताद साहब जब लस्सी पीने लगे तो हमने साइकिल के पुर्जों की ऊपर-नीचे से परीक्षा शुरू कर दी। फिर कुछ जी में जो आया तो उसका हैंडिल पकड़ कर जरा चलने लगे। मगर दो ही कदम गये होंगे कि ऐसा मालूम हुआ, जैसे साइकिल सीने पर चढ़ी आती है। दूसरे क्षण में साइकिल अपने पूरे जोर से हमारे पाँव पर गिरी और हमारी राम-दुहाई बाजार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक गूँजने लगी। उस्तादजी लस्सी छोड़कर दौड़े आये और दयावान लोग भी जमा हो गये। सब ने मिल-मिलाकर हमारा पाँव साइकिल से निकाला। उस्ताद ने साइकिल को अच्छी तरह देखकर कहा—"यह तो टूट गयी, बनवानी पड़ेगी।"

आज का दिन भी गया।

और यह हम पहले से ही जानते थे। यह लालाजी के खूनी 'कहाँ' की तासीर थी। मगर हमारे वीर हृदय का साहस और धीरज देखिए—अब भी मैदान में डटे रहे। कई बार गिरे, कई बार शहीद हुए, घुटने तुड़वाये, हाथ-पाँव छिलवाये, कपड़े फड़वाये। पर जनाब, क्या मजाल जो जी छूट जाये। आठ-नौ दिन में साइकिल चलाना सीख गये। मगर अभी तक उस पर चढ़ना नहीं आता था। कोई सहारा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



देकर चढ़ा देता, तो फिर लिये चले जाते थे। हमारे आनन्द की कोई सीमा न थी।

उस दिन उस्ताद ने हमें साइकिल पर चढ़ा दिया और सड़क पर छोड़ दिया कि लिये जाओ, अब तुम सीख गये।

अब हम साइकिल चला रहे थे और दिल ही दिल में फूले न समाते थे। मगर हाल यह था कि कोई आदमी दो सौ गज के फासले पर भी होता तो हम गला फाड़-फाड़ कर चिल्लाना शुरू कर देते, "साहब ! जरा बायीं तरफ हट जाइयेगा। हम नये सवार हैं और साइकिल हमारे बस में नहीं है।" दूर फासले पर कोई गाड़ी दिखायी देती और हमारे प्राण सूख जाते।

सहसा सामने तिवारी आते दिखायी दिये। हमने उन्हें भी दूर से ही अल्टीमेटम दे दिया, "ओ तिवारी ! बायीं तरफ हो जाओ, वरना साइकिल तुम्हारे ऊपर चढ़ा देंगे।"

तिवारी ने अपनी छोटी-छोटी आँखों से हमारी तरफ देखा और मुसकराकर कहा, "जरा, एक बात तो सुनते जाओ।"

हमने एक बार हैंडिल की तरफ तो दूसरी बार तिवारी की तरफ देखकर जवाब दिया, "इस समय कैसे बात सुन सकते हैं ? देखते नहीं हो, साइकिल पर सवार हैं।"

तिवारी—"तो क्या जो साइकिल चलाते हैं, वे किसी की बात नहीं सुनते। जरा उतर आओ। फिर चढ़ जाना।"

हमने लड़खड़ाते हुए, साइकिल को सँभालते हुए जवाब दिया, "उतर आयें, तो फिर चढ़ायेगा कौन ? अभी चलाना सीखा है, चढ़ना नहीं सीखा। चढ़ना कल सीखेंगे।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साइकिल और साइकिल सवार ताँगे के नीचे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



तिवारी चिल्लाते ही रह गये, हम आगे निकल गये। इतने में सामने से एक ताँगा आता नजर आया। हमने उसे भी दूर ही से डाँट दिया, "बायीं तरफ रहना भाई ! अभी नया चलाना सीखा है। नौसिखिए हैं हम।"

ताँगा बायीं तरफ मुड़ गया। हम अपने रास्ते चले जा रहे थे। एकाएक पता नहीं, घोड़ा भड़क उठा, या ताँगे वाले को शरारत सूझी। जो भी हो, ताँगा हमारे सामने आ गया। हमारे हाथ-पाँव फूल गये। जरा-सा हैंडिल घुमा देते, तो हम दूसरी तरफ निकल जाते। मगर बुरा समय आता है, तो बुद्धि पहले भ्रष्ट हो जाती है। उस समय हमें खयाल ही न आया कि हैंडिल घुमाया भी जा सकता है। उस समय तो ऐसा मालूम हुआ कि विधाता ने हमारी साइकिल के लिए वही रास्ता नियत कर दिया है, जिस पर ताँगा आ रहा है।

क्षण भर में हमारे जीवन की सारी घटनाएं हमारी आँखों में फिर गयीं, और दूसरे क्षण में हम और हमारी साइकिल दोनों ताँगे के नीचे।

जब होश में आये तो हम अपने घर में थे और हमारी देह पर न जाने कितनी पट्टियां बँधी थीं। हमें होश में देखकर श्रीमतीजी ने कहा, "क्यों ? अब क्या हाल है ? मैं कहती न थी, साइकिल चलाना न सीखो। उस समय तो किसी की सुनते ही न थे।"

हमने सोचा, लाओ, सारा इलजाम तिवारी पर थोप दें, और आप साफ बच जायँ। बोले, "यह सब तिवारी की शरारत है।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


श्रीमती ने मुसकराकर जवाब दिया, "यह तो तुम उसको चकमा दो, जो कुछ जानता न हो। उस ताँगे पर मैं ही तो बाल-बच्चों को लेकर घूमने निकली थी कि चलो सैर भी कर आयेंगे और तुम्हें साइकिल चलाते भी देख आयेंगे।"

मैंने लाजवाब होकर आँखें बन्द कर लीं।

इस दिन के बाद फिर कभी हमने साइकिल को हाथ नहीं लगाया।

—सुदर्शन

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. लेखक ने साइकिल चलाना सीखने का निश्चय क्यों किया ?
२. लेखक की स्त्री ने उन्हें साइकिल चलाना सीखने से क्यों मना किया ?
३. जब लेखक ने साइकिल का ट्रेनिंग स्कूल खोलने की बात की तो उनकी स्त्री ने क्या कहा ?
४. पहले दिन लेखक बिना साइकिल चलाना सीखे क्यों लौट आया ?
५. अन्तिम दिन की दुर्घटना किस कारण हुई ?
६. कहानी में हास्यपूर्ण स्थल कहाँ-कहाँ हैं ?
७. कहानी के हास्य रस में लेखक की पत्नी का क्या योग है ?

**अभ्यास**

१. निम्नलिखित के समानार्थक शब्द लिखो—
दिल, तासीर, उस्ताद, शागिर्दी, वरना, लाजवाब, शुरुआत, मुश्किल, अल्टीमेटम।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताओ और उनका प्रयोग अपने वाक्यों में करो—

झख मारना, नौबत न आना, गला भर आना, दिल पसीज जाना, रोग पालना, लानत भेजना, कच्ची गोलियां खेलना, दाँत पीसना, सिर मुड़ाते ओले पड़ना, हाथ-पाँव फूल जाना, चकमा देना।

३. 'ढूंढ़-ढांढ़' और 'फेंक-फांक' शब्द-युग्मों को देखो। इनमें 'ढांढ़' और 'फांक' स्वतन्त्र रूप में यहां अर्थहीन हैं। इस तरह के पांच शब्द-युग्म लिखो।

४. 'मछुवे ने आकर देखा' वाक्यांश में 'देखा' प्रधान क्रिया है और 'आकर' (आ+कर) पूर्वकालिक क्रिया है। 'कर' लगकर बनी अन्य पूर्वकालिक क्रियाओं को चुनो तथा अपने वाक्यों में उनका प्रयोग करो।

आदेश—१. अपने अनुभव की किसी घटना के आधार पर एक हास्यपूर्ण कहानी की रचना करो।

२. इस कहानी को तिवारीजी अथवा अन्य दर्शक के शब्दों में लिखो।

३. साइकिल सीखने वाले पात्र का चरित्र-चित्रण करो।

## टिप्पणी

**फिसड्डी**=जो काम में सबसे पीछे रहे। **ताबड़तोड़**=लगातार। **चुपचुपाते**=चुपचाप। **अल्टीमेटम**=अन्तिम चेतावनी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ७

# चल पड़े जिधर दो डग

[इस कविता के रचयिता हिन्दी के प्रसिद्ध कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी हैं। द्विवेदीजी ने देशभक्ति की अनेक बालोपयोगी कविताएं लिखी हैं। इस कविता में उन्होंने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के व्यापक प्रभाव का सजीव चित्र अंकित किया है।]

चल पड़े जिधर दो डग मग में
चल पड़े कोटि पग उसी ओर,
पड़ गयी जिधर भी एक दृष्टि,
गड़ गये कोटि दृग उसी ओर,

जिसके सिर पर निज धरा हाथ
उसके सिर-रक्षक कोटि हाथ,
जिस पर निज मस्तक झुका दिया
झुक गये उसी पर कोटि माथ,

हे कोटिचरण! हे कोटिबाहु!
हे कोटिरूप! हे कोटिनाम!
तुम एकमूर्ति, प्रतिमूर्ति कोटि,
हे कोटिमूर्ति! तुमको प्रणाम।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



युग बढ़ा तुम्हारी हँसी देख,
युग हटा तुम्हारी भृकुटि देख,
तुम अचल मेखला बन भू की
खींचते काल पर अमिट रेख,
तुम बोल उठे, युग बोल उठा
तुम मौन बने, युग मौन बना,
कुछ कर्म तुम्हारे संचित कर
युग - धर्म जगा, युग - धर्म तना,
युग-परिवर्तक ! युग-संस्थापक !
युग-संचालक ! हे युगाधार !
युग-निर्माता ! युग-मूर्ति ! तुम्हें
युग-युग तक युग का नमस्कार।

—सोहनलाल द्विवेदी।

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. गाँधीजी के प्रभाव का वर्णन कवि ने किस प्रकार किया है ?
२. गाँधीजी को 'कोटिचरण' और 'कोटिबाहु' क्यों कहा गया है ?
३. गाँधीजी 'युग-संस्थापक' क्यों कहे गये हैं ?
४. उन्हें 'युग-मूर्ति' कहने का क्या आशय है ?
५. निम्नलिखित में से सबसे सही कारण चुनकर वाक्य पूरा करो—
लोग महात्मा गाँधी की भृकुटि देखकर पीछे हट जाते थे क्योंकि—
(क) वे जानते थे कि गाँधीजी बड़े क्रोधी हैं।
(ख) वे जानते थे कि अगर गाँधीजी का कहना न मानेंगे, तो वे अपने प्राण दे देंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


(ग) उन्हें गांधीजी के विवेक में पूरा विश्वास था ।
(घ) वे जानते थे कि आँख बन्द कर गांधीजी का अनुकरण ही हमारा कर्तव्य है ।

**अभ्यास**

१. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो--

(क) तुम अचल मेखला बन भू की
खींचते काल पर अमिट रेख ।

(ख) कुछ कर्म तुम्हारे संचित कर
युग-धर्म जगा, युग-धर्म तना ।

२. जिस समय का चित्र इस कविता में दिया गया है, उसके विषय में जानकारी प्राप्त करो और लिखो ।

**आदेश**--इस कविता को कंठस्थ करो ।

## टिप्पणी

**मेखला**=करधनी । **परिवर्तक**=परिवर्तन करने वाला । **संचालक**=चलाने वाला, प्रेरणा देने वाला ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ८

# वीरमाता जीजाबाई

**[माता से बड़ा दूसरा शिक्षक नहीं है। बालक-बालिकाओं के प्रारम्भिक जीवन पर माता की शिक्षा का अमिट प्रभाव होता है। प्रस्तुत पाठ में वीरमाता जीजाबाई और बालक शिवाजी के उदाहरण से यह बात भलीभाँति स्पष्ट है।]**

सन्तान के चरित्र-निर्माण में माता का बहुत बड़ा हाथ रहता है। अपने बालक को वह जिस साँचे में ढालना चाहती है, उसी में वह ढल जाता है। जीजाबाई ऐसी ही आदर्श माता थीं। उन्होंने अपने पुत्र शिवाजी को ऐसी शिक्षा-दीक्षा दी कि उससे प्रेरणा ग्रहण कर वे मराठा राज्य की नींव डाल सके।

जीजाबाई देवगिरि के यादव वंशी लखूजी जाधवराव की पुत्री थीं। जाधवराव अहमदनगर के निजामशाह के दरबार में प्रभावशाली सरदार थे। उनके अधिकार में दस हजार सवार थे, जिनके खर्च के लिए उन्हें पर्याप्त जागीर मिली हुई थी। जाधवराव की सेना में मालोजी भोंसले नामक एक साधारण सैनिक था। एक बार होली के अवसर पर जाधवराव के यहाँ उनके बहुत से सैनिक एकत्र थे। मालोजी के साथ उनका पाँच वर्ष का पुत्र शाहजी भी था, जो बड़ा सुन्दर था। जाधवराव ने इस बालक को बड़े प्रेम से अपनी गोद में बैठा लिया। उसी समय उनकी तीन वर्ष की पुत्री जीजाबाई

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


भी वहाँ आ गयी। उन्होंने उसे भी गोद में बैठा लिया। दोनों बालक वहाँ रखा हुआ अबीर-गुलाल उठाकर एक दूसरे पर छिड़कने लगे। जाधवराव बालकों की इस क्रीड़ा को देखकर हर्ष-विभोर हो उठे। उनके मुँह से निकला, 'यह जोड़ी कितनी सुन्दर है।'

जाधवराव ने यह बात हँसी में कही थी परन्तु मालोजी तुरन्त उठ कर खड़े हो गये और बोले, "आप सब लोग साक्षी हैं। आज से जाधवराव जी हमारे समधी हुए।" उत्सव समाप्त होने के बाद जब जाधवराव ने अपनी पत्नी को यह बात सुनायी तो वह क्रोध में आकर पति से बोलीं, "इस साधारण सिपाही के पुत्र के साथ मेरी पुत्री का विवाह नहीं हो सकता।" दूसरे ही दिन जाधवराव ने मालोजी को नौकरी से निकाल दिया। मालोजी अपने गाँव को लौट आये और खेती करने लगे।

कालान्तर में मालोजी धनी और सम्पन्न हो गये। इस सम्बन्ध में एक कथा प्रसिद्ध है। एक दिन मालोजी ने एक विशाल सर्प को बिल से बाहर आते हुए और थोड़ी देर बाद फिर उसी में घुसते हुए देखा। उन्होंने सुन रखा था कि साँप जमीन में गड़े हुए धन की रक्षा करता है। अतः उन्होंने उस बिल को खोदना शुरू किया। उसमें उन्हें स्वर्ण-मुद्राओं से भरी लोहे की सात कड़ाहियां मिलीं।

अब क्या था। मालोजी ने दान-धर्म करके अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। उन्होंने बहुत से तालाब-कुएं बनवाये और बहुत से मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया। थोड़े ही दिनों में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


मालोजी की ख्याति इतनी फैली कि निजामशाह ने उन्हें अपना सेनापति बनाया और उन्हें शिवनेर, चाकण, सूपा आदि की जागीर दे दी। अब निजामशाह के कहने से जाधवराव ने अपनी पुत्री जीजाबाई का विवाह मालोजी के पुत्र शाहजी भोंसले के साथ कर दिया। इस विवाह में स्वयं निजामशाह भी उपस्थित थे।

इस समय मरहठों की स्थिति बड़ी शोचनीय थी। वे भाड़े के सिपाही थे। उन्हें कभी दिल्ली के मुगल सम्राट की ओर से और कभी दक्षिण के मुसलमान बादशाहों की ओर से लड़ना पड़ता था। निजामशाही सुलतान द्वारा धोखे से जीजाबाई के पिता और भाई का वध भी किया गया था। इससे भी वे दुखी थीं। इन दिनों वे शिवनेर के दुर्ग में रहती थीं। उन्होंने दुर्ग की अधिष्ठात्री शिवाई देवी से प्रार्थना की कि मुझे ऐसा वीर पुत्र प्राप्त हो, जो महाराष्ट्र में एक स्वतन्त्र मरहठा राज्य की स्थापना करने में सफल हो। १० अप्रैल सन् १६२७ को जीजाबाई ने एक पुत्र-रत्न को जन्म दिया, जिसका नाम शिवाई देवी के नाम पर ही उन्होंने शिवाजी रखा। यही बालक आगे चलकर छत्रपति शिवाजी के नाम से विख्यात हुआ और उसने अपनी माता के स्वतन्त्र महाराष्ट्र राज्य के स्वप्न को पूरा किया।

माता जीजाबाई बड़े प्रेम से बालक शिवाजी को पूर्वजों के शौर्य और देश के प्राचीन वैभव की कहानियां सुनातीं और उनके हृदय में साहस, वीरता और महत्त्वाकांक्षा की भावनाएं भरतीं। रामायण और महाभारत की कहानियां शिवाजी बड़े

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


चाव से सुनते। फलस्वरूप कथा-पुराण सुनने और देवताओं में आस्था रखने में उनकी प्रवृत्ति बाल्यकाल से ही हो गयी। इस प्रकार माता जीजाबाई की शिक्षा पाकर शिवाजी का धर्मनिष्ठ, मातृभक्त एवं महत्त्वाकांक्षी वीर युवक के रूप में विकास हुआ।

जब शिवाजी लगभग बारह वर्ष के थे तो उनके पिता शाहजी उन्हें तथा उनकी माता जीजाबाई को बीजापुर ले गये। वहाँ वे सुलतान के मुख्य मन्त्री थे। उस समय तक माता जीजाबाई की शिक्षा का बालक शिवाजी पर इतना प्रभाव पड़ चुका था कि उन्हें बीजापुर का दरबारी जीवन पसन्द न आया। उन्हें अपने पिता का बीजापुर के सुलतान को झुककर सलाम करना अच्छा न लगता था। वे माता जीजाबाई से आकर दरबार की बातें बताते और अपने पिता की आलोचना करते। माता जीजाबाई उनके स्वतन्त्र विचारों की सराहना करतीं और उन्हें अलग राज्य स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करतीं, जिससे आत्मसम्मान की रक्षा हो सके। शाहजी ने देखा कि बालक शिवाजी को दरबारी जीवन पसन्द नहीं है तो उन्होंने उनको जीजाबाई के साथ पूना भेज दिया। पूना में रहकर शिवाजी स्वतन्त्रतापूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे और वहीं उन्होंने अपनी माता से जागीर के प्रबन्ध की शिक्षा ग्रहण की।

माता जीजाबाई की प्रेरणा से शिवाजी ने छोटे-छोटे किले जीत कर स्वतन्त्र महाराष्ट्र राज्य स्थापित करने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया। इससे उनकी ख्याति फैल गयी और आस-पास के शासक उनसे डरने लगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



एक बार माता जीजाबाई ने शतरंज के खेल में शिवाजी को मात दे दी। शिवाजी ने अपनी पराजय स्वीकार की और कहा, "माँ, आप अपनी इस जीत के लिए मुझसे कुछ भी माँग लें।" माँ बोली, "अगर देना ही चाहते हो तो मुझे सिंहगढ़ का दुर्ग दो।" सिंहगढ़ का पहाड़ी दुर्ग मुगलों के हाथ में था और वह अजेय समझा जाता था। उदयभानु नामक एक राजपूत सरदार मुगलों की ओर से उसका प्रबन्ध करता था। उदयभानु के पास बहुत बड़ी मुगल सेना थी, यह शिवाजी को भलीभाँति ज्ञात था। अतः उन्होंने अपने मित्र तानाजी मालसुरे के पास सन्देश भेजा कि माता जीजाबाई तुरन्त बुला रही हैं। तानाजी अपने पुत्र के विवाह की तैयारी में लगे थे, परन्तु जीजाबाई का सन्देश पाते ही वे चल पड़े। यह ज्ञात होने पर कि उन्हें सिंहगढ़ जीतना है, अपने छोटे भाई सूर्याजी को लेकर उन्होंने एक हजार सैनिकों के साथ सिंहगढ़ को घेर लिया। भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें उदयभानु और तानाजी दोनों मारे गये। किला मरहठों के हाथ आ गया। शिवाजी को दुर्ग पर अधिकार हो जाने का हर्ष हुआ, परन्तु तानाजी की मृत्यु के समाचार से उनका हृदय विदीर्ण हो गया। वे माता जीजाबाई के पास जाकर रुँधे हुए कंठ से बोले, "गढ़ आला, पण सिंह गेला," अर्थात् गढ़ तो आ गया पर सिंह चला गया। माता जीजाबाई को भी तानाजी की मृत्यु से पुत्र-वियोग का सा दुःख हुआ।

जीजाबाई ने शिवाजी को स्त्री मात्र का आदर करने की शिक्षा दी थी। इसीलिए शिवाजी ने अपने सैनिकों को विशेष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


रूप से आज्ञा दे रखी थी कि युद्ध में कभी भी स्त्रियों को बन्दी न बनाया जाय और यदि कभी शत्रु-पक्ष की कोई स्त्री मिल जाय तो उसे सम्मानपूर्वक उसके संरक्षकों के पास भेज दिया जाय। जब शिवाजी के सेनापति आवाजी सोनदेव ने कल्याण प्रदेश के शासक मुल्ला अहमद की सुन्दर पुत्र-वधू को बन्दी बना लिया तो शिवाजी ने उस बन्दिनी में अपनी माँ के ही दर्शन किये और उसे बड़े आदर के साथ उसके ससुर के पास भेज दिया।

धर्म के सम्बन्ध में जीजाबाई बड़ी उदारहृदया थीं और उनकी इस उदारता की शिवाजी पर भी पूरी छाप थी। वे भी सब धर्मों का सम्मान करते थे। उन्होंने यह आज्ञा दे रखी थी कि कभी युद्ध में किसी मसजिद को क्षति न पहुँचायी जाय और कुरान शरीफ का उचित सम्मान किया जाय। ६ जून, १६७४ ई० को शिवाजी का छत्रपति शिवाजी के रूप में रायगढ़ के दुर्ग में बड़ी धूमधाम के साथ राज्याभिषेक हुआ। उस समय 'शिवराज की जय,' 'छत्रपति शिवाजी की जय' के साथ-साथ 'माता जीजाबाई की जय' का गगन-भेदी नाद भी गूँज उठा।

शिवाजी के राज्याभिषेक के बारह दिन बाद अस्सी वर्ष की आयु में जीजाबाई का शरीरान्त हो गया। एक स्वतन्त्र महा-राष्ट्र साम्राज्य की स्थापना का उनका स्वप्न पूरा हो चुका था।

—डा० संकटाप्रसाद उपाध्याय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


## अध्ययन

**प्रश्न**

१. जीजाबाई कौन थीं ?

२. शाहजी से उनका विवाह किस प्रकार हुआ ?

३. उस समय मरहठों की क्या दशा थी ?

४. शिवाजी का यह नाम क्यों रखा गया ?

५. बालक शिवाजी का लालन-पालन किस प्रकार हुआ ?

६. शिवाजी को बीजापुर का दरबारी जीवन क्यों अच्छा नहीं लगा ?

७. उन्होंने सिंहगढ़ पर विजय कैसे प्राप्त की ?

८. वे कौन से दृष्टान्त हैं, जिनके आधार पर हम कह सकते हैं कि माता जीजाबाई की शिक्षा का शिवाजी के जीवन पर अमिट प्रभाव पड़ा ?

९. लेखक ने जीजाबाई को 'वीरमाता' क्यों कहा है ?

**अभ्यास**

१. कालान्तर, जीर्णोद्धार, महत्त्वाकांक्षा, शरीरान्त, राज्याभिषेक शब्दों का सन्धि-विच्छेद करते हुए प्रत्येक का अर्थ बताओ।

२. पाठ के प्रथम अनुच्छेद से सकर्मक क्रियाएं छांटो और प्रत्येक की पद-व्याख्या करो।

**आदेश**––पुस्तकालय से शिवाजी के जीवनचरित पर कोई पुस्तक प्राप्त करके पढ़ो और उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं का सारांश लिखो।

## टिप्पणी

**जीर्णोद्धार**=पुराने भवनों की मरम्मत। **आस्था**=विश्वास। **धर्मनिष्ठा**=धर्म में दृढ़ता या अनुराग। **अधिष्ठात्री**=स्वामिनी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ ६

# रामराज

**[प्रस्तुत पाठ में रामराज के स्वरूप का दिग्दर्शन कराया गया है। वर्तमान भारत के लिए भी उसी के समान समृद्ध और सुखी राज्य की कल्पना की गयी है।]**

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भारत में फिर से रामराज लाने का स्वप्न देखा था। उनकी कल्पना के रामराज की तुलसी के 'मानस' में विस्तृत व्याख्या है। गाँधीजी का विचार था कि जिस प्रकार व्यक्ति के सामान्य जीवन में धर्म, न्याय और सत्य की महत्ता है, उसी प्रकार राजनैतिक जीवन में भी। 'रामचरितमानस' में वर्णित रामराज भी व्यक्ति के आचरण की पवित्रता पर आधारित है। गोस्वामीजी का निश्चित मत था कि यदि लोग दृढ़ता के साथ नीतिपूर्ण आचरण करते रहें तो भौतिक सुख और समृद्धि अनायास ही प्राप्त हो जायगी। 'माँगे बारिद देहिं जल, रामचन्द्र के राज' से यही निष्कर्ष निकलता है।

रामराज की व्याख्या करते हुए गोस्वामीजी ने कहा है कि रामचन्द्रजी के राज्य में सब लोग अपने-अपने धर्म का पालन करते थे। उनके आचरण में अनीति नहीं थी। समाज में किसी प्रकार का वैमनस्य नहीं था। लोगों में पारस्परिक स्नेह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था। इसका परिणाम यह था कि किसी को दंड देने की आवश्यकता ही न पड़ती थी। सब सुखी थे और प्रजा में किसी प्रकार का शोक-सन्ताप नहीं था—

रामराज बैठे त्रैलोका।
हरषित भयउ गयउ सब सोका॥

रामराज का प्रमुख तत्त्व था नीतिपूर्ण आचरण। रामचन्द्र जी स्वयं आजीवन नीतिपूर्ण कार्य करते रहे और राजगद्दी पर बैठने के बाद, उन्होंने नागरिकों की सभा में भी नीति-पालन का ही उपदेश दिया। इसी सभा में उन्होंने कहा कि यदि मुझसे भी कोई अनीतिपूर्ण बात हो जाय तो आप लोग निर्भय होकर मुझे रोक दें—

जो अनीति कछु भाखौं भाई।
तौ मोहि बरजेहु भय बिसराई॥

दूसरी प्रमुख बात जिस पर तुलसीदासजी ने बल दिया है, वह है श्रम की महत्ता। घर में अनेक सेवक-सेविकाओं के होते हुए भी घर का सारा काम-काज महारानी सीता स्वयं करती थीं—

जद्यपि गृह सेवक सेवकिनी।
बिपुल सदा सेवा बिधि गुनी॥
निज कर गृह परिचरजा करईं।
रामचन्द्र आयसु अनुसरईं॥

अयोध्या से सुग्रीव की विदाई के समय भी तुलसीदास ने श्रम और स्वावलम्बन की ओर संकेत करते हुए कहा है कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुग्रीव को उन्होंने वे वस्त्र और आभूषण पहनाये, जिन्हें भरत ने स्वयं बनाया था—

सुग्रीवहिं प्रथमहि पहिराये।
बसन भरत निज हाथ बनाये॥

रामराज की तीसरी विशेषता है समानता। रामचन्द्रजी के राज्य में किसी प्रकार का भेदभाव और विषमता नहीं थी—'राम प्रताप विषमता खोयी'। जो घाट राजाओं के लिए बना था, उस पर सबको बिना भेद-भाव के स्नान करने का अधिकार था—

राज-घाट सब विधि सुन्दरबर।
मज्जहिं तहाँ बरन चारो नर॥

रामराज में सभी अन्न-वस्त्र से सम्पन्न थे, सभी शिक्षित थे, न कोई रोगी था और न किसी की अकाल मृत्यु होती थी—

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना।
नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना॥
अल्प मृत्यु नहिं कवनिहुँ पीरा।
सब सुन्दर सब निरुज सरीरा॥

आज भी रामराज की हमारी जो कल्पना है उसमें हम समानता का यही आदर्श चाहते हैं।

रामराज की पृष्ठभूमि त्याग और तपस्या के आधार पर तैयार हुई थी। भरत ने चौदह वर्ष तक तप और त्याग का जीवन व्यतीत कर रामराज के लिए अनुकूल वातावरण बनाया था। वे ननिहाल से लौट कर अयोध्या की गद्दी पर नहीं बैठे। उन्होंने राम की ओर से चौदह वर्ष तक राज्य का प्रबन्ध किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


तपस्वी का जीवन व्यतीत करते हुए उन्होंने प्रजा के सामने त्याग और कर्तव्यपरायणता का आदर्श रखा—

तेहि पुर बसत भरत बिनु रागा।
चंचरीक जिमि चम्पक बागा॥

इस पवित्र वातावरण में अयोध्या का सारा कलुष धुल गया और वह रामराज के लिए तैयार हो गयी।

उधर रामचन्द्रजी राक्षसों का दमन करके अयोध्या को निष्कंटक बना रहे थे और भारत को एक सूत्र में बाँध कर 'एक भूप रघुपति कोसला' को सार्थक कर रहे थे। वे अत्याचारी व्यक्तियों और अनीतिपूर्ण राज्यों का अन्त करके राजनीतिक स्थिति को दृढ़ कर रहे थे। विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा के लिए वे ताड़का, सुबाहु आदि का संहार पहले ही कर चुके थे। वनवासकाल में उन्होंने दंडक वन के खर, दूषण और त्रिशिरा बन्धुओं का संहार किया। बालि का वध कर उसके छोटे भाई सुग्रीव को और रावण का वध कर उसके छोटे भाई विभीषण को राज्य दे कर पृथ्वी को आसुरी प्रवृत्तियों से मुक्त किया। इस प्रकार अनीति और अत्याचार की शक्तियों का संहार कर उन्होंने नीति और न्याय का पथ प्रशस्त किया। निषादराज गुह, पम्पापुर के राजा सुग्रीव और लंका के राजा विभीषण से मैत्री करके सद्भावना का वातावरण बनाया।

अपने वनवासकाल में रामचन्द्रजी ने जो एक और महत्त्वपूर्ण कार्य किया, वह था रामेश्वरम में शिव की स्थापना। शिवजी दक्षिणवासियों के प्रमुख आराध्यदेव थे। उनकी स्थापना और पूजा करके उन्होंने दक्षिण वालों का हृदय जीत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिया। यह एक प्रकार से भावनात्मक एकता का शिलान्यास था, जिस पर रामराज का निर्माण हो सका।

यह है रामराज का रूप, जिसकी व्याख्या तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में की है। गाँधीजी चाहते थे कि स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद देश में रामराज स्थापित हो—ऐसा राज्य, जिसमें भौतिक सम्पन्नता और समानता हो, सब सुखी हों तथा जिसके मूल में हो—धर्म, सत्य और न्याय।

—ब्रजभूषण शर्मा

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. 'रामचरितमानस' में वर्णित रामराज का क्या आधार है ?
२. गोस्वामीजी द्वारा वर्णित रामराज में समाज की क्या दशा थी ?
३. रामराज की कौन-कौन सी प्रमुख विशेषताएं थीं ?
४. भरत ने किस प्रकार रामराज की पृष्ठभूमि तैयार की ?
५. भावनात्मक एकता का शिलान्यास राम ने किस प्रकार किया ?
६. वनवास-काल में राम ने किन-किन राजाओं को मित्र बनाया ?

**अभ्यास**

१. नीचे लिखे शब्दों के विलोम लिखो—
स्वावलम्बन, विषमता, राग, सार्थक, आसुरी, नीति, दूरदर्शिता, स्वतन्त्रता।

२. 'त्रिलोक' यह एक समास-पद है। इसके आरम्भ में 'त्रि' संख्या वाचक शब्द दिया हुआ है। ऐसे समास को जिसके पूर्व में संख्या वाचक शब्द हो द्विगु समास कहते हैं जैसे 'चौराहा', 'पंचवटी', आदि। द्विगु समास के तीन अन्य उदाहरण लिखो।

३. 'निष्कंटक' शब्द निस् + कंटक के योग से बना है। यहां स् का ष् के रूप में परिवर्तन हुआ है। इसी प्रकार के अन्य शब्द छांटो जिनमें सन्धि की अवस्था में स् का ष् अथवा श् हो गया हो। देखो स् कब ष् और कब श् हो जाता है।

आदेश—निम्नलिखित शब्दों की सहायता से रामराज की प्रमुख विशेषताओं का अपने शब्दों में उल्लेख करो—

आचरण, समृद्धि, वैमनस्य, स्नेह, श्रम की महत्ता, स्वावलम्बन, सद्भावना।

## टिप्पणी

**समृद्धि**=सम्पन्नता। **निष्कर्ष**=परिणाम। **वैमनस्य**=शत्रुता। **आजीवन**=जीवन-पर्यन्त। **सम्पन्न**=युक्त। **अकाल मृत्यु**=असामयिक मृत्यु। **निष्कंटक**=बाधारहित। **आसुरी प्रवृत्तियां**=राक्षसी स्वभाव। **शिलान्यास**=नींव डालना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ १०

# दीनबन्धु एण्डूज

[ दीनबन्धु एण्डूज अंग्रेज थे। उन्होंने भारत की सेवा उस समय की जब अंग्रेजी शासन स्वतन्त्रता-आन्दोलन को दबाने में लगा हुआ था। इस पाठ में एण्डूज की भारत के प्रति की गयी सेवाओं का वर्णन है। इसके लेखक हिन्दी के प्रसिद्ध पत्रकार पं० बनारसीदास चतुर्वेदी हैं। ]

जिस अंग्रेज जाति के साम्राज्य में सूर्य कभी अस्त नहीं होता था और जिसके नाविक समुद्र की लहरों पर शासन करते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



थे, उस शासक जाति के प्रतिनिधि होने पर भी जिस महा-पुरुष ने पराजित और पददलित भारतीयों के साथ अपने को एक करके अपनी ही जाति के निरंकुश शासकों से जीवन भर संघर्ष किया, उस महान व्यक्ति का नाम सी० एफ० एण्डूज है। उनकी उदारता, दीनवत्सलता और करुणा के सदाव्रत का द्वार समान रूप से विश्व भर की सन्तप्त और दुखी आत्माओं के लिए खुला रहा। वे पश्चिमी सभ्यता के विलासमय जीवन को स्वेच्छा से त्याग कर शान्तिनिकेतन की कुटिया में भारतीय ऋषियों की भाँति सात्विक जीवन बिताते रहे। गाँधीजी ने एण्डूज को स्नेहपूर्वक 'दीनबन्धु' की उपाधि प्रदान की थी।

बात लगभग पचास वर्ष पहले की है। दक्षिण अफ्रीका में वर्ण-विद्वेष की आग धधक रही थी। भारतीय और अफ्रीकी उन सड़कों पर नहीं चल सकते थे जिन पर गोरे चलते थे। उन दिनों तो गोरे कालों की छाया से भी बचते थे। उन्हीं दिनों वहाँ एण्डूज पहुँचे। उनके स्वागत के लिए अनेक भारतीय उपस्थित थे। जहाज से उतर कर उन्होंने अपने एक अंग्रेज मित्र पोलक से पूछा, "गाँधीजी कहाँ हैं?" गाँधीजी पास ही खड़े थे। वे तुरन्त ही बोले, "मैं ही गाँधी हूँ।" उनके दर्शन करते ही एण्डूज ने गाँधीजी की चरण-रज अपने माथे पर लगा ली। अफ्रीका की भूमि पर किसी अंग्रेज के लिए यह बड़े साहस का काम था। एण्डूज का यह कार्य उनके भारत और भारतीय संस्कृति के प्रति अनन्य प्रेम का परिचायक था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


सच पूछिए तो भारत के प्रति एण्ड्रूज का प्रेम बाल्यावस्था से ही था। कहीं किसी किताब में उन्होंने पढ़ रखा था कि हिन्दुस्तान के आदमी भात बहुत खाते हैं। इसलिए वे भी अपनी माता से जिद करके भात बनवाते और कहते कि माँ मैं हिन्दुस्तान जाऊँगा। माँ बहुत हँसती और कहती, "चार्ली, तुम किसी न किसी दिन हिन्दुस्तान जरूर जाओगे।" माता की यह भविष्यवाणी आगे चल कर सत्य सिद्ध हुई और एण्ड्रूज २० मार्च, १९०४ को भारत आ पहुँचे। २० मार्च को वे अपना द्वितीय जन्म-दिवस मानते थे।

लन्दन से विदा होते समय वे उस बस्ती में गये थे, जहाँ उन्होंने गरीबों के बीच चार वर्ष तक काम किया था। वहाँ एक भोली-भाली बुढ़िया बोली, "एण्ड्रूज, मैंने सुना है कि हिन्दुस्तान के लोग नरमांस-भक्षी हैं। वे आदमियों को खा जाते हैं। मैं दिन-रात तुम्हारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करती रहूँगी कि वे तुम्हें न खा जायँ।" भारतवर्ष के प्रति ऐसी धारणा सुनकर एण्ड्रूज मुसकरा दिये।

सी० एफ० एण्ड्रूज केम्ब्रिज मिशन के मिशनरी बनकर भारत आये थे। मिशन द्वारा संचालित दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कालेज में वे अध्यापक हो गये। एण्ड्रूज बड़े प्रतिभाशाली और सर्वप्रिय अध्यापक थे। अतः साल भर के बाद ही अधिकारियों का विचार हुआ कि उन्हें कालेज का प्रिंसिपल बना दिया जाय।

पंजाब के लार्ड विशप ने एण्ड्रूज से कहा, "किसी अंग्रेज को ही प्रिंसिपल बनाना ठीक होगा, क्योंकि हिन्दुस्तानी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



अभिभावक अंग्रेज प्रिंसिपल पर ही विश्वास करेंगे। हिन्दुस्तानी प्रिंसिपल कालेज में अनुशासन भी नहीं रख पायेगा और संकट के समय विद्यार्थियों से दब जायगा। इसीलिए आप प्रिंसिपल बनना स्वीकार कर लीजिए।" एण्ड्रूज ने उत्तर दिया, "श्रीयुत सुशील कुमार रुद्र इस कालेज में बीस वर्ष से प्रोफेसर हैं और वे इस पद के सर्वथा योग्य भी हैं। उन्हीं को प्रिंसिपल बनाना उचित होगा। अगर वर्णभेद के कारण श्री रुद्र प्रिंसिपल नहीं बनाये गये तो मैं इस कालेज से त्यागपत्र दे दूँगा। मैं वर्णभेद की नीति को कदापि सहन नहीं कर सकता।" परिणाम यह हुआ कि प्रोफेसर रुद्र ही कालेज के प्रिंसिपल बनाये गये और एण्ड्रूज ने सहर्ष उनके अधीन काम किया। इस घटना से एण्ड्रूज की न्यायप्रियता और त्याग की भावना प्रकट होती है।

सन् १९०७ में जब एण्ड्रूज ने लाला लाजपतराय के देश निकाले जाने की बात सुनी तो उन्होंने सरकार के इस कार्य की निन्दा की और स्टीफेंस कालेज में उनके सभापतित्व में इसी आशय का एक निन्दात्मक प्रस्ताव भी पास हुआ। इसी प्रकार जब लाजपतराय जेल से छूटकर बाहर आये तो प्रिंसिपल रुद्र की अनुपस्थिति में छात्रों ने एण्ड्रूज से कहा, "हमारे पूज्य नेता आज जेल से छूटे हैं। इसलिए हम लोग आज कालेज में रोशनी करना चाहते हैं। आपसे आज्ञा लेने आये हैं।" एण्ड्रूज ने तुरन्त उत्तर दिया, "जरूर, आप खूब दिवाली मनाइए।" इस प्रकार की घटनाओं से मिशनरी लोग एण्ड्रूज से शंकित हो गये और उनसे चिढ़ने भी लगे। एण्ड्रूज ने भी यह समझ लिया कि नौकरी करते हुए मैं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग नहीं ले सकता और आगे चलकर उन्होंने नौकरी छोड़ ही दी।

सन् १९१३ ई० में गाँधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया। गाँधीजी वहाँ भारतीयों के अधिकार के लिए लड़ रहे थे। अतः उनकी सहायता के लिए गोपालकृष्ण गोखले ने चन्दा एकत्र करना प्रारम्भ किया। एण्ड्रूज ने जब चन्दे की बात सुनी तो उन्होंने चार हजार रुपये चन्दे में दिये। यही उनकी जीवन भर की कमाई थी। इस प्रकार के त्याग के उदाहरण भी कम ही मिलते हैं। इसके बाद गोखले के आदेशानुसार एण्ड्रूज भी दक्षिण अफ्रीका चले गये और फिर वहाँ से भारत लौटने पर शान्तिनिकेतन में रहने लगे।

शान्तिनिकेतन में एण्ड्रूज की कुटी सादगी और सरलता का नमूना थी। बाँस के झुरमुटों के निकट एक छोटा-सा घर, उसमें न कोई सजावट और न दिखावट, समाचारपत्रों का ढेर, पुस्तकें तितर-बितर, तीन-चार कुर्सियां ौर कुछ मोढ़े, एक-दो कुर्सियां तो ऐसी कि जिन पर बैठना खतरे से खाली नहीं, मेज पर कोई कपड़ा भी नहीं, उस पर माता-पिता के चित्र, दवात, होल्डर, चाकू, किताब, अखबार और छोटी-सी सन्दूकची भी—यही थी शान्तिनिकेतन में दीनबन्धु एण्ड्रूज की कुटी।

इसी कुटी से एण्ड्रूज ने भारतीयों की विविध रूपों में सेवा की। यहीं से उन्होंने प्रवासी भारतीयों की रक्षा के लिए फिजी, आस्ट्रेलिया, पूर्व और दक्षिण अफ्रीका, ट्रिनीडाड,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



ब्रिटिश-गायना, मलाया तथा सीलोन आदि ब्रिटिश उपनिवेशों की यात्रा की। अस्सी वर्ष तक शर्तबन्दी की 'कुली-प्रथा' में सहस्रों ही भारतीय उपनिवेशों को भेजे जा चुके थे और वहाँ उनके साथ पशुओं जैसा व्यवहार किया जाता था। दीनबन्धु एण्ड्रूज ने इस नृशंस प्रथा को बन्द कराया। उन्होंने भारत को पूर्ण स्वराज्य दिलाने के लिए लेख लिखे, जिन्हें पढ़कर आज भी आश्चर्य होता है कि शासक जाति के होते हुए भी वे भारतीयों की भावनाओं का इतना सच्चा चित्रण कैसे कर सके। वास्तव में दीनबन्धु एण्ड्रूज ने भारतीयों के साथ अपने को एक कर लिया था। उन्हें भारत में ही जन्म लेना चाहिए था। इंग्लैंड में उनका जन्म विधाता की एक भौगोलिक भूल जान पड़ती है। उनके विषय में महात्मा गाँधी ने लिखा था—'सी० एफ० एण्ड्रूज से बढ़कर सच्चा, उनसे बढ़कर विनीत और उनसे अधिक भारत-भक्त तथा भारत-सेवक दूसरा विद्यमान नहीं।' राजर्षि गोखले ने उन्हें भारतीय विद्यार्थियों का सर्वोत्तम मित्र बताया था।

यद्यपि दीनबन्धु एण्ड्रूज का सम्पूर्ण जीवन भारतीयों की सेवा करते ही बीता तथापि उन्हें केवल भारतीयों का ही समर्थक मान लेना भारी भूल होगी। वे तो मानव-मात्र के प्रेमी थे और मानवता के सच्चे पुजारी। वस्तुतः वे विश्व-नागरिक थे।

—बनारसीदास चतुर्वेदी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


## अध्ययन

**प्रश्न**

१. सी० एफ० एण्ड्रूज को हम कृतज्ञता के साथ क्यों स्मरण करते हैं ?
२. एण्ड्रूज २० मार्च को अपना द्वितीय जन्मदिवस क्यों मानते थे ?
३. एण्ड्रूज की न्यायप्रियता और त्याग के कुछ उदाहरण दो ।
४. एण्ड्रूज ने भारतीयों के हित के क्या-क्या काम किये ?
५. गाँधीजी एण्ड्रूज को 'दीनबन्धु' क्यों कहते थे ?

**अभ्यास**

१. निम्नलिखित वाक्यांशों का भाव अपने शब्दों में स्पष्ट करो—
(क) जिसके नाविक समुद्र की लहरों पर शासन करते थे ।
(ख) वर्ण-विद्वेष की आग धधक रही थी ।
(ग) एण्ड्रूज ने भारतीयों के साथ अपने को एक कर लिया था।
(घ) इंग्लैंड में उनका जन्म विधाता की एक भौगोलिक भूल जान पड़ती है ।

२. "इस कुटी से…दूसरा विद्यमान नहीं ।" अनुच्छेद में आये हुए सर्वनामों की पद-व्याख्या करो ।

**आदेश**—दीनबन्धु का जीवन चरित प्राप्त करके पढ़ो और उसका सारांश लिखो ।

## टिप्पणी

**दीनवत्सलता**=गरीबों पर प्रेम । **सन्तप्त**=दुखी । **स्वेच्छा**=अपनी इच्छा । **प्रवासी**=अपने देश से दूसरे देश में जाकर रहने वाले । **नृशंस**=निर्दय । **फिजी**=आस्ट्रेलिया से पूर्व की ओर एक छोटा द्वीप । **ट्रिनीडाड**=पश्चिमी द्वीप समूह का एक द्वीप । **ब्रिटिश गायना**=दक्षिणी अमेरिका का देश ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ ११

# मनभावन सावन

[ इस कविता में कवि ने सावन की वर्षा का ऐसा सजीव वर्णन किया है कि उसका दृश्य हमारे सामने उपस्थित हो जाता है। इन्द्रधनुष के झूले में कवि अपने साथ हम सबको झुलाना चाहता है। इसके रचयिता श्री सुमित्रानन्दन पन्त की गणना आधुनिक समय के सर्वश्रेष्ठ कवियों में है। उनकी रचनाओं में प्रकृति का मनोरम वर्णन हुआ है। इसीलिए उन्हें 'प्रकृति का सुकुमार कवि' माना जाता है। प्रस्तुत कविता 'स्वर्णधूलि' से ली गयी है। ]

झम-झम झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के,
छम-छम-छम गिरती बूंदें तरुओं से छन के।
चम-चम बिजली चमक रही रे उर में घन के,
थम-थम दिन के तम में सपने जगते मन के।

पंखों से रे, फैले-फैले ताड़ों के दल,
लम्बी-लम्बी अँगुलियां हैं, चौड़े करतल।
तड़-तड़ पड़ती धार वारि की उन पर चंचल
टप-टप झरती कर मुख से जल बूंदें झलमल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नाच रहे पागल हो ताली दे-दे चल-दल ,
झूम-झूम सिर नीम हिलातीं सुख से विह्वल !
हर सिंगार झरते बेला-कलि बढ़ती प्रतिपल ,
हँसमुख हरियाली में खगकुल गाते मंगल !

दादुर टर-टर करते झिल्ली बजती झन-झन ,
'म्याव' 'म्याव' रे मोर, 'पीउ' 'पिउ' चातक के गण !
उड़ते सोनबलाक, आर्द्र सुख से कर क्रन्दन ,
घुमड़-घुमड़ घिर मेघ गगन में भरते गर्जन !

रिमझिम रिमझिम क्या कुछ कहते बूँदों के स्वर ,
रोम सिहर उठते, छूते वे भीतर अन्तर !
धाराओं पर धाराएं झरतीं धरती पर ,
रज के कण-कण में तृण-तृण की पुलकावलि भर !

पकड़ वारि की धार झूलता है मेरा मन ,
आओ रे सब मुझे घेर कर गाओ सावन !
इन्द्रधनुष के झूले में झूले मिल सब जन ,
फिर-फिर आये जीवन में सावन मनभावन !

—सुमित्रानन्दन पन्त

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. सावन के मेघों की वर्षा से क्या ध्वनि आ रही है ?
२. कवि के मन में किस प्रकार के भाव उठते हैं ?
३. ताड़ के पत्ते कवि को किस प्रकार लगते हैं ?
४. उन पर वर्षा की बूंदों के पड़ने पर क्या ध्वनि निकल रही है ?
५. और कौन-कौन सी ध्वनियाँ सुनायी दे रही हैं ?
६. अन्तिम पंक्तियों में कवि ने क्या इच्छा व्यक्त की है ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


**अभ्यास**

१. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो—

(क) उड़ते सोनबलाक, आर्द्र सुख से कर क्रन्दन।

(ख) रोम सिहर उठते, छूते वे भीतर अन्तर।

(ग) रज के कण-कण में तृण-तृण की पुलकावलि भर।

२. बरसते मेघ, गिरती बूँदें, चमकती बिजली तथा मन के सपने का वर्णन करने में कवि ने जिन शब्दों का प्रयोग किया है, उन्हें बताओ। इस कविता में आये हुए इसी प्रकार के अन्य प्रयोग भी छाँटो और बताओ कि उनका प्रयोग कवि ने क्यों किया है।

**आदेश**—१. इस कविता को कंठस्थ करो और वर्षा के जिन दृश्यों का वर्णन इसमें किया गया है, उनको अपने शब्दों में लिखो।

२. वर्षा ऋतु के कुछ अन्य दृश्यों का उल्लेख करो, जो इस कविता में नहीं आये हैं।

३. इस कविता का काव्य-सौन्दर्य अपने शब्दों में लिखो।

## टिप्पणी

**थम-थम**=रुक-रुक कर। **दल**=पत्ते। **घन**=बादल। **करतल**=हथेली। **चल-दल**=पीपल। **सोनबलाक**=सुनहरा बगुला। **आर्द्र सुख**=सुख में मग्न। **सिहरना**=काँपना। **अन्तर**=हृदय। **सावन**=सावन के गीत।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ १२

# उड़ीसा

[क्षेत्रफल और जनसंख्या की दृष्टि से उड़ीसा भारतीय संघ का एक छोटा-सा राज्य है, किन्तु प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं वर्तमान औद्योगिक दृष्टि से हमारे देश का वह महत्त्वपूर्ण अंग है। प्रस्तुत पाठ में इन सभी दृष्टियों से उड़ीसा का वर्णन है। ]

जिस प्रदेश के असीम बलिदानों से अशोक को अहिंसा की प्रेरणा मिली और विश्व के इतिहास को एक नया मोड़ मिला, वह प्रदेश उड़ीसा है। उड़ीसा भारत के पूर्वी तट पर स्थित है। इस राज्य के लगभग चार सौ तिरासी किलोमीटर लम्बे समुद्र-तट को बंगाल की खाड़ी की चंचल लहरें चूमती रहती हैं। राज्य के पूर्वीय क्षेत्र में पहाड़ियां हैं, जो सघन वनों से आच्छादित हैं। समुद्र-तट के मैदान वाला भाग सबसे अधिक उपजाऊ है। इस मैदान में आम, नारियल और ताड़-कुंजों के बीच धान के खेत लहलहाते हैं। महानदी, ब्राह्मणी और वैतरणी राज्य की प्रमुख नदियां हैं, जो दक्षिण-पूर्व की ओर समान्तर बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं।

उड़ीसा के प्राचीन नाम उत्कल और कलिंग भी हैं। सम्राट अशोक के समय में कलिंग एक सबल राज्य था। अशोक ने २६३ ई० पू० अपने राज्यकाल के आठवें वर्ष में कलिंग पर विजय प्राप्त करने के लिए एक विशाल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सेना भेजी। कलिंगवासियों ने अशोक की सेना का डट कर सामना किया। भीषण नर-संहार के बाद अशोक को विजय तो मिली किन्तु युद्ध के विनाशकारी दृश्यों एवं कलिंगवासियों के करुण-क्रन्दन से वह इतना द्रवित हुआ कि उसने आजीवन युद्ध न करने की प्रतिज्ञा कर ली। इस युद्ध ने ही अशोक को 'चंडाशोक' से 'देवानांप्रिय' एवं 'प्रियदर्शी' अशोक बना दिया। अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी और अहिंसा का पुजारी हो गया।

अशोक की मृत्यु होते ही कलिंग पुनः स्वाधीन हो गया। उड़ीसा के राजाओं में सबसे प्रसिद्ध महाराज खारवेल हुए हैं। वे जितने वीर थे, उतने ही कला-प्रेमी। उनके समय में कलिंग की पताका जावा, सुमात्रा आदि पूर्वी द्वीपों तक फहराती थी। उन्हीं के समय कलिंग विदेशों से व्यापार का सबसे बड़ा केन्द्र हो गया था। कलिंग के बन्दरगाह से भारतीय व्यापारियों के जलपोत मूल्यवान वस्त्र-आभूषण लेकर जाते थे और विदेशों से सोना, चाँदी, रत्न आदि लेकर लौटते थे। यहाँ के राजाओं ने राज्य की उन्नति के लिए भरसक प्रयत्न किये तथा अनेक विशाल मन्दिरों का निर्माण कराया, जिनसे उनकी कीर्ति आज तक अक्षुण्ण है।

उड़ीसा अधिक घना बसा हुआ नहीं है। यहाँ के निवासी शान्त एवं सरल प्रकृति के हैं और उनके जीवन एवं उनकी कला में ग्रामीण प्रभाव की अधिकता है। यहाँ के अधिकांश निवासी ताड़ एवं आम्र-निकुंजों के बीच सुन्दर ग्रामों में निवास करते हैं। उनके घर सुन्दर चित्रों से सुसज्जित रहते हैं। इन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
चित्रों में उड़ीसा के वातावरण में उपलब्ध धान की बाल, हाथी, चीते एवं विशाल मन्दिर अंकित हैं। उड़ीसा निवासियों का मुख्य भोजन चावल और मछली है। धर्म में लोगों की बड़ी निष्ठा है।

उड़ीसा प्रदेश की भाषा उड़िया है। यह बँगला भाषा से बहुत मिलती-जुलती है। उड़िया भाषा का साहित्य काफी प्राचीन है। चौदहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध कवि सरलदास की 'चंडी पुराण', 'विलंका रामायण' और 'उड़िया महाभारत' महत्त्वपूर्ण रचनाएं हैं। उपेन्द्रभंज (१६७०-१७२८) प्राचीन उड़िया के युगस्रष्टा कविसम्राट के रूप में प्रसिद्ध हैं। उन्होंने ४२ काव्यग्रन्थों की रचना की, जिनमें 'वैदेहीशविलास', 'प्रेम सुधानिधि' और 'सुभद्रापरिणय' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आधुनिक उड़िया-कविता के प्रवर्तक राधानाथ, मधुसूदन और फकीरमोहन माने जाते हैं। श्री सच्चिदानन्द राउत राय और गोपीनाथ महन्ती आजकल के प्रमुख साहित्यकार हैं। कथाकार महन्ती को 'अमृतेर सन्तान' पर और राय को उनके कविता-संग्रह पर साहित्य अकादमी से पुरस्कार भी मिल चुके हैं।

उड़ीसा की कुल जनसंख्या का दो-तिहाई भाग आदिवासियों का है। राज्य के पश्चिमी भाग में स्थित मयूरभंज जिले में तो छियालिस प्रतिशत आदिवासी ही निवास करते हैं। उनकी बस्तियां जंगलों में पहाड़ियों और पहाड़ी टीलों पर बनी हैं। आदिवासियों की अनेक जातियां हैं, जिनकी अपनी-अपनी बोलियां, रहन-सहन तथा रीति-रिवाज हैं। कुछ समय पूर्व

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आदिवासियों का जीवन आधुनिक दुनिया से बिलकुल अलग था, किन्तु देश स्वतन्त्र होने के पश्चात आदिवासियों के बालकों के लिए स्कूल खोले गये हैं, तथा उन्हें अन्य सुख-सुविधाएं भी उपलब्ध करायी जा रही हैं। इससे अब बहुत से आदिवासी उड़ीसा के डोलोमाइट, चूना-पत्थर और लोहे की खानों तथा इस्पात के कारखानों में काम करने लगे हैं और वहाँ के अन्य निवासियों के साथ घुलमिल रहे हैं।

उड़ीसा प्रदेश में ही भारत के चार धामों में से एक श्रीजगन्नाथ धाम है। जगन्नाथजी का मन्दिर पुरी में है, जहाँ भारत के कोने-कोने से लोग दर्शन के लिए आते हैं। यह विशाल मन्दिर दो परकोटों के भीतर है, जिसमें चारों ओर प्रवेश-द्वार हैं। पूर्व की ओर सिंहद्वार, दक्षिण की ओर अश्वद्वार, पश्चिम में व्याघ्रद्वार और उत्तर में हस्तिद्वार है। मन्दिर उनसठ मीटर ऊँचा है। सिंहद्वार के सम्मुख एक अरुण स्तम्भ है, जो कोणार्क के सूर्य मन्दिर से यहाँ लाकर स्थापित किया गया है। मन्दिर में भगवान जगन्नाथ, उनके भाई बलभद्र और बहिन सुभद्रा की मूर्तियां हैं। प्रतिवर्ष आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को पुरी में रथ-यात्रा महोत्सव होता है। यह उत्सव भगवान कृष्ण की गोकुल से मथुरा-यात्रा की स्मृति में मनाया जाता है। चौदह मीटर ऊँचे और ग्यारह मीटर लम्बे, ग्यारह मीटर चौड़े विशाल रथ में जगन्नाथजी की सवारी निकलती है। इस रथ को चार हजार व्यक्ति खींचते हैं। रथ-यात्रा जगन्नाथ धाम से लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर स्थित 'गुंडीचा बारी' अर्थात उद्यान-भवन तक ही होती है, परन्तु इसमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

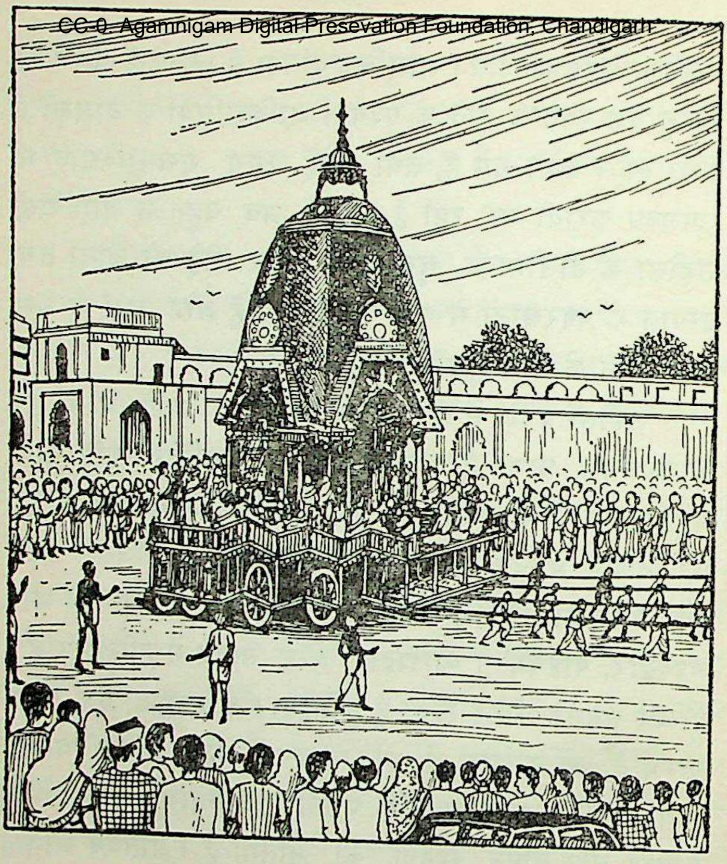

रथ यात्रा

चौबीस घंटे लग जाते हैं। उद्यान-भवन में सात दिन विश्राम करने के बाद भगवान जगन्नाथ फिर अपने धाम में आ जाते हैं।

स्वतन्त्रता से पूर्व उड़ीसा की राजधानी कटक थी। वर्तमान राजधानी भुवनेश्वर है, जो पुरी से उत्तर की ओर लगभग चालीस किलोमीटर दूर है। इस नगर को प्राचीन उत्कल की राजधानी होने का भी गौरव प्राप्त है। भुवनेश्वर का प्रमुख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

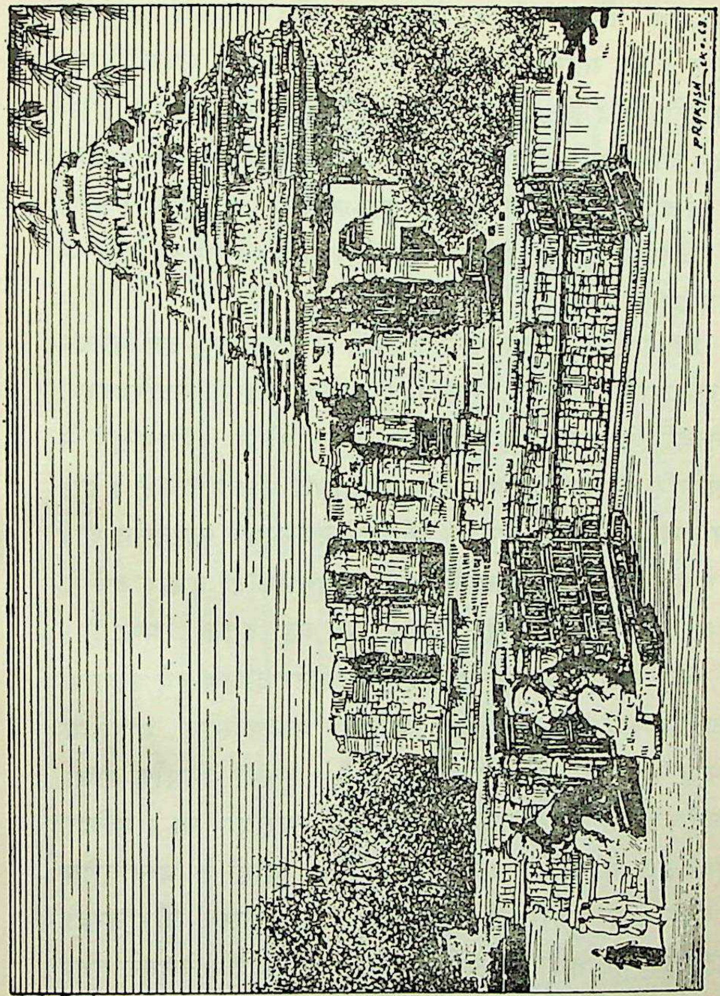

कोणार्क का सूर्य मन्दिर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मन्दिर एक शिव मन्दिर है। यह मन्दिर इतना भव्य एवं विशाल है कि सहस्रों मन्दिरों के बीच इसका उच्च शिखर दर्शक को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। इस मन्दिर की बाहरी दीवारों पर बनी मूर्तियां अत्यन्त सजीव हैं। मन्दिर में पशु-पक्षियों और वृक्ष-लताओं के अनेक चित्रण हैं। भुवनेश्वर के इस मन्दिर का भारतीय स्थापत्य कला में विशेष महत्व है।

इस प्रसिद्ध मन्दिर के उत्तर-पूर्व में तीन अन्य बड़े मन्दिर हैं—राजारानी मन्दिर, मुक्तेश्वर मन्दिर और केदारेश्वर। भुवनेश्वर से लगभग सात-आठ किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में धवलगिरि पर सम्राट अशोक का सुप्रसिद्ध शिलालेख है। इस शिलालेख में कलिंग युद्ध के भीषण नर-संहार का वर्णन है। इसे देखकर आश्चर्य होता है क्योंकि लगभग दो हजार वर्ष से धूप और वर्षा में रहने के उपरान्त भी यह इतना स्पष्ट है।

भुवनेश्वर से लगभग छासठ किलोमीटर दक्षिण-पूर्व कोणार्क का प्रसिद्ध सूर्यमन्दिर है। यह मन्दिर मध्यकालीन भारतीय स्थापत्य कला का सर्वोत्कृष्ट नमूना है। इसका निर्माण राजा नृसिंहदेव प्रथम ने तेरहवीं शताब्दी में कराया था। मन्दिर के पूर्वी द्वार के दोनों ओर रथ के साथ घोड़ों के भग्नावशेष हैं। कहीं नृत्य करती हुई तो कहीं मजीरा, ढोलक और तुरही बजाती हुई युवतियों की अनेक सुन्दर मूर्तियां हैं। बेलबूटे तथा डिजायनें भी अत्यन्त सुन्दर हैं।

उड़ीसा के इन प्राचीन मन्दिरों से कहीं अधिक भव्य और विशाल हैं वहाँ के नये तीर्थ, जिनका निर्माण जनकल्याण को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



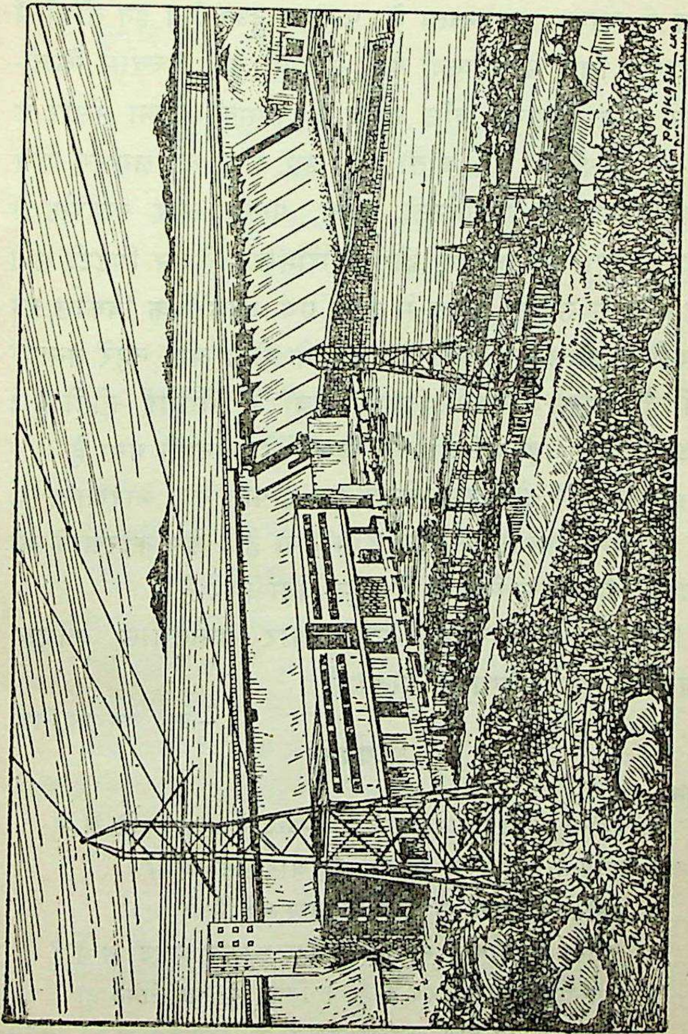

हीराकुड बाँध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



ध्यान में रखकर स्वतन्त्रता के पश्चात हुआ है। इन तीर्थों में सम्बलपुर जिले में महानदी पर बनाया गया पच्चीस किलोमीटर लम्बा हीराकुड बाँध प्रमुख है। इसकी गणना संसार के बड़े-बड़े बाँधों में की जाती है। इस बाँध का लगभग पाँच किलोमीटर भाग तो मिट्टी, चूना, पत्थर और कंकरीट से बना है तथा शेष लगभग बीस किलोमीटर केवल मिट्टी से। इस बाँध से उड़ीसा राज्य में कृषि एवं औद्योगिक विकास को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला है। बाँध के दोनों ओर नहरें बनायी गयी हैं, जिनसे राज्य के विशाल क्षेत्रों में सिंचाई होती है। बाँध के पास बड़ा शक्तिशाली बिजलीघर बनाया गया है।

दूसरा नया तीर्थ राउरकेला का इस्पात का कारखाना है, जो पश्चिमी जर्मनी के सहयोग से बना है। इस कारखाने का देश के औद्योगिक विकास में बहुत बड़ा हाथ है।

उड़ीसा का गौरवमय अतीत और प्रगतिशील वर्तमान उसके स्वर्णिम भविष्य के द्योतक है।

—डा० जयराम मिश्र

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. उड़ीसा के प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध में क्या जानते हो ?
२. वर्तमान उड़ीसा का निर्माण कब और कैसे हुआ ?
३. उड़ीसा के लोगों का मुख्य व्यवसाय क्या है ?
४. उड़ीसा का प्राचीन सांस्कृतिक महत्त्व किन कारणों से है ?
५. जगन्नाथ धाम की रथ-यात्रा के विषय में क्या जानते हो ?
६. लेखक ने 'नये तीर्थ' कहकर उड़ीसा के किन स्थानों का वर्णन किया है ? उन्हें नया तीर्थ क्यों कहा गया है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



**अभ्यास**

१. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़ो—

(क) राज्य के पश्चिमी भाग में स्थित मयूरभंज जिले में तो छियालीस प्रतिशत आदिवासी ही निवास करते हैं।

(ख) उड़ीसा के इन प्राचीन मन्दिरों से कहीं अधिक भव्य और विशाल हैं वहाँ के नये तीर्थ।

पहले वाक्य में रेखांकित शब्द 'तो' और दूसरे में 'कहीं' पर ध्यान दो। इनके प्रयोग से अर्थ-व्यंजना में क्या विशेषता आ गयी है? दोनों तरह के पांच-पांच वाक्य बनाओ, जिससे 'तो' और 'कहीं' के इस प्रकार के विशिष्ट प्रयोग का आशय स्पष्ट हो जाय।

२. 'स्वतन्त्रता के पूर्व……महत्त्व है।' अनुच्छेद में विशेष्य-विशेषण के उदाहरणों को छाँटकर प्रत्येक की पद-व्याख्या करो।

३. 'उन्हें अन्य सुख-सुविधाएं भी उपलब्ध करायी जा रही हैं।' वाक्य में कर्म 'सुविधाएं' का प्रयोग कर्त्ता के रूप में हुआ है। ऐसे स्थानों पर जो क्रियाएं प्रयुक्त होती हैं वे कर्म वाच्य क्रियाएं कहलाती हैं और ऐसे वाक्य भी कर्मवाच्य वाक्य कहलाते हैं। इसी प्रकार के अन्य वाक्य चुनो।

आदेश—उड़ीसा के राउरकेला के इस्पात-कारखाने, हीराकुड बाँध आदि के विषय में जानकारी प्राप्त करो।

## टिप्पणी

**अक्षुण्ण**=अखंड। **विलय**=लीन होना। **सीमावर्ती**=सीमा के पास।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ १३

# पृथ्वी

[ प्रस्तुत पाठ में पृथ्वी की उत्पत्ति, विकास-क्रम तथा उसके गुणों और शक्तियों का उल्लेख है। ]

हमारे जीवन का मूल आधार पृथ्वी ही है। जड़-चेतन सभी को धारण करने वाली पृथ्वी का धरित्री अथवा धरती नाम उचित ही है। इसी पर हम रहते हैं, यही हमें भोजन और वस्त्र देती है और इसी से हम विविध प्रकार की उपयोगी एवं मूल्यवान वस्तुएं प्राप्त करते हैं। गेहूँ, चावल आदि अन्न, अंगूर, अनार आदि फल धरती में ही उत्पन्न होते हैं। सोना, चाँदी, हीरा और माणिक्य आदि रत्नों की खान भी यही है। इसी कारण पृथ्वी का एक नाम 'रत्नगर्भा' भी है।

हम जानते हैं कि पृथ्वी अपनी कीली पर झुकी लट्टू की भाँति घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा करती रहती है। इसके फलस्वरूप दिन और रात होते हैं, कभी छोटे, कभी बड़े। और, इसी कारण ऋतुएं भी बदलती रहती हैं। पृथ्वी कहीं निरन्तर हिमाच्छादित है तो कहीं सूर्य उस पर प्रचंड अग्नि की वर्षा करता रहता है। सोलह सौ किलोमीटर प्रति घंटे से भी अधिक गति से चलने वाली पृथ्वी बिना झटके दिये हमको घुमाती रहती है। अन्तरिक्ष-यात्रियों ने पृथ्वी के विशाल गोले के इस नृत्य को अपनी आखों से देखा भी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



पृथ्वी सौर परिवार का सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रह है। पृथ्वी कैसे और कब बनी, इसकी अभी तक हमें कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं है। हमारी साहित्यिक परम्परा में जल से पृथ्वी की उत्पत्ति मानी गयी है और वह कमठ की पीठ और शेषनाग के फन पर टिकी मानी जाती है। परन्तु वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी की उत्पत्ति सूर्य से हुई है। उनका कहना है कि अब से लगभग दस खरब वर्ष पहले वह किसी कारणवश सूर्य से अलग हो गयी और उसका चक्कर काटने लगी। उस समय वह वायव्य रूप में थी और उसका ताप भी अत्यधिक था। चारों ओर धुआँ-सा भरा हुआ था। धीमे-धीमे सहस्रों वर्षों के पश्चात ताप कम होने पर वाष्प-कण संघटित हुए और मूसलाधार वर्षा होने लगी। पृथ्वी के धरातल की ऊपरी परत अपेक्षाकृत शान्त और स्थायी हुई। ठंडे होने पर उसमें जो सिकुड़न आयी, उससे धरातल कहीं ऊँचा और कहीं नीचा होता गया। नीचे स्थानों पर पानी भर गया और महासागरों तथा महाद्वीपों की रचना हुई।

जिस प्रकार सूर्य से पृथ्वी का जन्म हुआ वैसे ही पृथ्वी से चन्द्रमा का जन्म होना माना जाता है। अनुमान है कि पृथ्वी के शैशव काल में कोई विशाल तारा उसके समीप आ गया और उसके आकर्षण से पृथ्वी का कुछ भाग अलग होकर उसकी परिक्रमा करने लगा।

पृथ्वी के गोले की परिधि चालीस हजार किलोमीटर है। यदि हम पृथ्वी के केन्द्र से होकर यात्रा कर सकते तो लगभग बारह हजार आठ सौ किलोमीटर आरपार चल कर दूसरी ओर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पहुँच जाते। इसका यह अर्थ हुआ कि पृथ्वी के केन्द्र से धरातल का प्रत्येक स्थान छह हजार चार सौ किलोमीटर दूर है। परन्तु हम अभी धरातल के नीचे लगभग तीन किलोमीटर तक ही पहुँच पाये हैं। अतः पृथ्वी के भीतरी भाग का क्या रूप है, इसका प्रत्यक्ष पता नहीं चल सका है। जो कुछ पता लगा है वह भूकम्प-तरंगों तथा पृथ्वी पर गिरने वाले उल्का-खंडों के अध्ययन पर आधारित है। इस अध्ययन के अनुसार यह ज्ञात

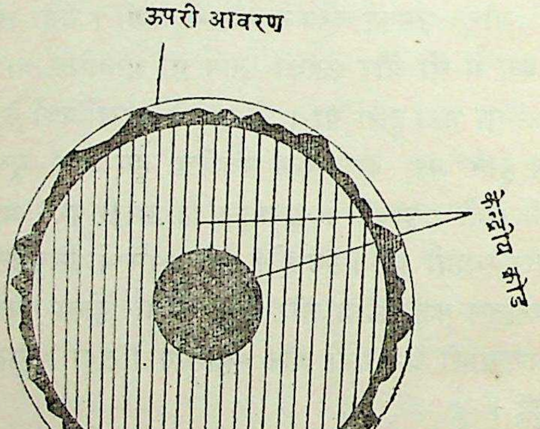


पृथ्वी का अनुभागीय चित्र

हुआ है कि पृथ्वी के आन्तरिक भाग के दो खंड हैं—एक ऊपरी आवरण और दूसरा केन्द्रीय क्रोड। ऊपरी आवरण दो हजार आठ सौ अस्सी किलोमीटर मोटा है और इस आवरण का ऊपरी स्तर केवल बत्तीस किलोमीटर। इसी ऊपरी स्तर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


पर हम लोग रहते हैं। केन्द्रीय क्रोड के दो भाग हैं—एक तरल और दूसरा ठोस। ठोस भाग लोहे और अन्य निकिल का बना हुआ है।

जब पृथ्वी ठंडी होकर जीवधारियों के रहने योग्य हो गयी, तो उस पर वनस्पति एवं जीव-जन्तुओं का जन्म हुआ। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि प्राणियों का विकास धीरे-धीरे हुआ। धरातल के नीचे की शैल-परतों में जीवाश्मों के रूप में सुरक्षित प्राणि-जगत के अवशेषों से पता चलता है कि सबसे पहले वनस्पति का जन्म हुआ जो काई के रूप में थी। इसी से विकसित होकर लता-गुल्मों के पश्चात वृक्ष बने। इसी समय समुद्र के पानी में एककोषीय जीव उत्पन्न हुआ जिसे 'अमीबा' कहते हैं। 'अमीबा' से पहले जलचरों और फिर आज से लगभग बीस करोड़ वर्ष पहले उभयचरों की उत्पत्ति हुई जो जल और थल दोनों पर समान रूप से रह सकते थे। स्थल पर रहने वालों से स्तनपोषी जीवों का विकास हुआ जिनमें मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है। जीव के विकास की कहानी बड़ी लम्बी और संघर्षपूर्ण है। इस संघर्ष में जो जीव अपने को परिस्थिति के अनुकूल न बना सके, वे नष्ट होते गये।

पृथ्वी के गुणों और उसकी शक्तियों का अध्ययन मनुष्य आदिकाल से ही करता आ रहा है। इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि जिस प्रकार सूर्य का गुण रंग, जल का रस, आकाश का शब्द और वायु का स्पर्श है, उसी प्रकार पृथ्वी का गुण गन्ध है। पृथ्वी में यदि यह गुण न होता तो हमें सुगन्धित द्रव्य न मिल पाते।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृथ्वी के इस गुण और उसकी अन्न-उत्पादन-शक्ति का पता तो मनुष्य को बहुत पहले ही लग गया था, परन्तु उसके गुरुत्वाकर्षण की खोज बाद में हुई। पृथ्वी अपने केन्द्र की ओर प्रत्येक वस्तु को आकर्षित करती है। जिस शक्ति से वह वस्तुओं को अपने केन्द्र की ओर आकर्षित करती है वही गुरुत्वाकर्षण है। इसी आकर्षण के कारण हम पृथ्वी पर खड़े हो सकते हैं, बैठ सकते हैं और चल-फिर सकते हैं। यदि पृथ्वी में यह शक्ति न होती तो हम वस्तुओं को यथास्थान रख भी नहीं सकते थे और वे अस्त-व्यस्त रूप में हवा में लटकी रहतीं। पृथ्वी के समान अन्य ग्रहों में भी आकर्षण-शक्ति है। सूर्य और चन्द्रमा की इसी शक्ति के कारण समुद्रों में ज्वार-भाटा आता है।

पृथ्वी का दूसरा विशिष्ट गुण है चुम्बकत्व। पृथ्वी एक विशाल चुम्बक है, जिसके ध्रुव उत्तरी और दक्षिणी भौगोलिक ध्रुवों के समीप हैं। इसी के फलस्वरूप कुतुबनुमा की सुई सदा उत्तर-दक्षिण रहती है। पृथ्वी के इस चुम्बकत्व का निर्माण उन विद्युत-तरंगों से होता है, जो पृथ्वी के मध्य भाग में स्थित तरल क्रोड से उत्पन्न होती हैं। पृथ्वी के घूमने से तरल क्रोड में गति उत्पन्न हो जाती है, जिससे भिन्न ताप तथा विद्युतीय गुण वाले पदार्थ आपस में मिलते हैं और विद्युत-तरंगें उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार पृथ्वी का आन्तरिक भाग एक विशाल प्राकृतिक विद्युत-उत्पादक-यन्त्र का काम करता है।

पृथ्वी की ऊपरी परत यद्यपि अपेक्षाकृत पतली है किन्तु मनुष्य के लिए सबसे अधिक महत्त्व की है। इसी से उसे खनिज सम्पदा मिलती है। इसी परत की मिट्टी में वह अन्न, फल-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


फूल, साग-सब्जी उत्पन्न करता है और इसी में उसे वे पत्थर मिलते हैं जिनसे वह अपने लिए सुखद निवासों का निर्माण कर लेता है।

ऐसी है हमारी पृथ्वी। इसी पर हमारा जन्म होता है और यही हमारे भरण-पोषण का आधार है। इसी की शक्तियों का उपयोग कर हम अपने जीवन को सुखी और सम्पन्न बनाते हैं। अथर्ववेद की यह उक्ति हमारे और हमारी पृथ्वी के सम्बन्धों के बारे में कितनी सार्थक है—

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः

—प्रभाकर द्विवेदी

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. पृथ्वी को 'रत्नगर्भा' क्यों कहा जाता है ?
२. ऋतु-परिवर्वन का क्या कारण है ?
३. पृथ्वी की उत्पत्ति किस प्रकार हुई है ?
४. पृथ्वी के भीतरी भाग का ज्ञान कैसे प्राप्त होता है ?
५. पृथ्वी पर प्राणियों का विकास कैसे हुआ ?
६. पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से तुम क्या समझते हो ?
७. पृथ्वी के ऊपरी धरातल की हमारे लिए क्या उपयोगिता है ?

**अभ्यास**

१. निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ स्पष्ट करो—
(क) अन्तरिक्ष यात्रियों······देखा भी है।
(ख) हमारी साहित्यिक······मानी गयी है।
(ग) पृथ्वी के गुणों······करता आ रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



३. 'कोषीय' शब्द 'ईय' प्रत्यय लगकर बना है और 'चुम्बकत्व' में 'त्व' प्रत्यय है। इसी प्रकार 'ईय' और 'त्व' लगाकर पाँच-पाँच शब्द और बनाओ।

४. 'यदि हम पृथ्वी के केन्द्र से होकर यात्रा कर सकते तो लगभग बारह हजार आठ सौ किलोमीटर आरपार चलकर दूसरी ओर पहुँच जाते।' इस वाक्य में एक वाक्यांश 'यदि' से आरम्भ होता है और दूसरा 'तो' से। इसी प्रकार के पाँच वाक्य बनाओ।

५. 'हमारे जीवन का मूल आधार पृथ्वी ही है'। इस वाक्य में 'हमारे' शब्द उत्तम पुरुष सर्वनाम के सम्बन्ध कारक का बहु वचन का रूप है। उत्तम पुरुष सर्वनाम के अन्य कारकों एवं वचनों के रूपों का उल्लेख करो।

आदेश—पृथ्वी की उत्पत्ति, विकास-क्रम और उसके गुणों का वर्णन करो।

## टिप्पणी

**हिमाच्छादित**=बर्फ से ढकी हुई। **अपेक्षाकृत**=तुलना में। **जीवाश्म**=पथराये हुए जीव। **स्तनपोषी**=स्तन (थन) के दूध से पलने वाले। **अस्त-व्यस्त**=व्यवस्था से रहित, अव्यवस्थित। **क्रोड**=गोद। **माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः**=भूमि मेरी माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ १४

# मैं सुमन हूँ

[सुख-दुःख समान भाव से सहकर हमें किस प्रकार जीवन-यापन करना चाहिए, इसकी शिक्षा हम सुमन से ले सकते हैं। प्रस्तुत कविता में कवि ने यह भाव बड़े प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है।]

व्योम के नीचे खुला आवास मेरा,
ग्रीष्म, वर्षा, शीत का अभ्यास मेरा;
झेलता हूँ मार मारुत की निरन्तर,
खेलता यों जिन्दगी का खेल हँस कर।
शूल का दिन - रात मेरा साथ
किन्तु प्रसन्नमन हूँ
मैं सुमन हूँ ॥ १ ॥

तोड़ने को जिस किसी का हाथ बढ़ता,
मैं विहँस उसके गले का हार बनता;
राह पर बिछना कि चढ़ना देवता पर,
बात है मेरे लिए दोनों बराबर।
मैं लुटाने को, हृदय में
भरे स्नेहिल सुरभि कन हूँ
मैं सुमन हूँ ॥ २ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रूप का श्रृंगार यदि मैंने किया है,
साथ शव का भी हमेशा ही दिया है;
खिल उठा हूँ यदि सुनहरे प्रात में मैं,
मुसकराया हूँ अँधेरी रात में मैं
मानता सौन्दर्य
जीवन की कला का सन्तुलन हूँ।
मैं सुमन हूँ ॥ ३ ॥

—द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी।

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. सुमन को जीवन में किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है ?
२. इन कठिनाइयों का उस पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
३. वह अपने अपकारी का भी किस प्रकार उपकार करता है ?
४. 'सुमन हूँ' से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

**अभ्यास**

१. नीचे बायीं ओर कुछ पंक्तियां दी गयी हैं और दाहिनी ओर उनके भावार्थ। परन्तु वे ठीक क्रम में नहीं हैं। प्रत्येक भावार्थ के सामने सम्बद्ध पंक्तियां लिखो—

(क) शूल का दिन रात मेरा साथ मैं कठिनाइयों में भी प्रसन्न रहता हूँ।

(ख) भरे स्नेहिल सुरभिकन हूँ मैं सन्तुलन को जीवन की कला का सौन्दर्य मानता हूँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(ग) मुसकराया हूँ अँधेरी रात में    मेरा जीवन संकटों में घिरा हुआ है।

(घ) मानता सौन्दर्य जीवन की कला का सन्तुलन हूँ।    मेरा हृदय प्रेम से पूर्ण है।

२. मारुत, सुमन और व्योम शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखो।

**आदेश**—इस कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखो।

## टिप्पणी

**शूल**=कांटा । **स्नेहिल**=प्रिय, प्यारा । **सुरभि**=सुगन्धि । **आवास**=निवास, गृह । **मानता सौन्दर्य जीवन की कला का सन्तुलन हूँ**=मैं जीवन की कला के सन्तुलन को ही सौन्दर्य मानता हूँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ १५

# अर्जुन का मोह

**[महाभारत के युद्ध में अर्जुन के मोह और श्रीकृष्ण के ज्ञान के उपदेश से इस मोह के नाश की कथा प्रसिद्ध है। इसका पूरा वर्णन भगवद्गीता नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ में पाया जाता है। श्रीकृष्ण का यह उपदेश मानव-जाति के इतिहास में अनुपम है। प्रस्तुत पाठ भगवद्गीता के इसी प्रसंग पर आधारित है।]**

(कुरुक्षेत्र के मैदान में कौरवों और पांडवों की अठारह अक्षौहिणी सेना युद्ध के लिए आमने-सामने खड़ी है। पांडवों की सेना में अर्जुन, भीम, धृष्टद्युम्न और अभिमन्यु के समान अनेक महारथी हैं। कौरवों की सेना में भीष्म, कर्ण, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, जयद्रथ और भूरिश्रवा आदि अनेक प्रसिद्ध वीर हैं। कौरवों के सेनापति भीष्म पितामह शंख-ध्वनि करते हैं और उसी के साथ अनेक शंख, नगाड़े, ढोल बज उठते हैं। पांडवों की ओर से युधिष्ठिर अपना अनन्तविजय शंख बजाते हैं। सफेद घोड़ों से युक्त रथ पर अर्जुन दिखायी देते हैं। श्रीकृष्ण रथ हाँक रहे हैं। श्रीकृष्ण अपना पांचजन्य और अर्जुन देवदत्त नामक शंख बजाते हैं।)

**अर्जुन**—हे कृष्ण! मेरा रथ दोनों सेनाओं के बीच में ले चलिए, जिससे मैं देख लूं कि मुझे किन-किन से युद्ध करना है।

**श्रीकृष्ण**—जैसी तुम्हारी इच्छा, पार्थ! (रथ को आगे बढ़ाकर) इस स्थान से तुम अपने पक्ष और विपक्ष दोनों ही दलों के वीरों को देख सकते हो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

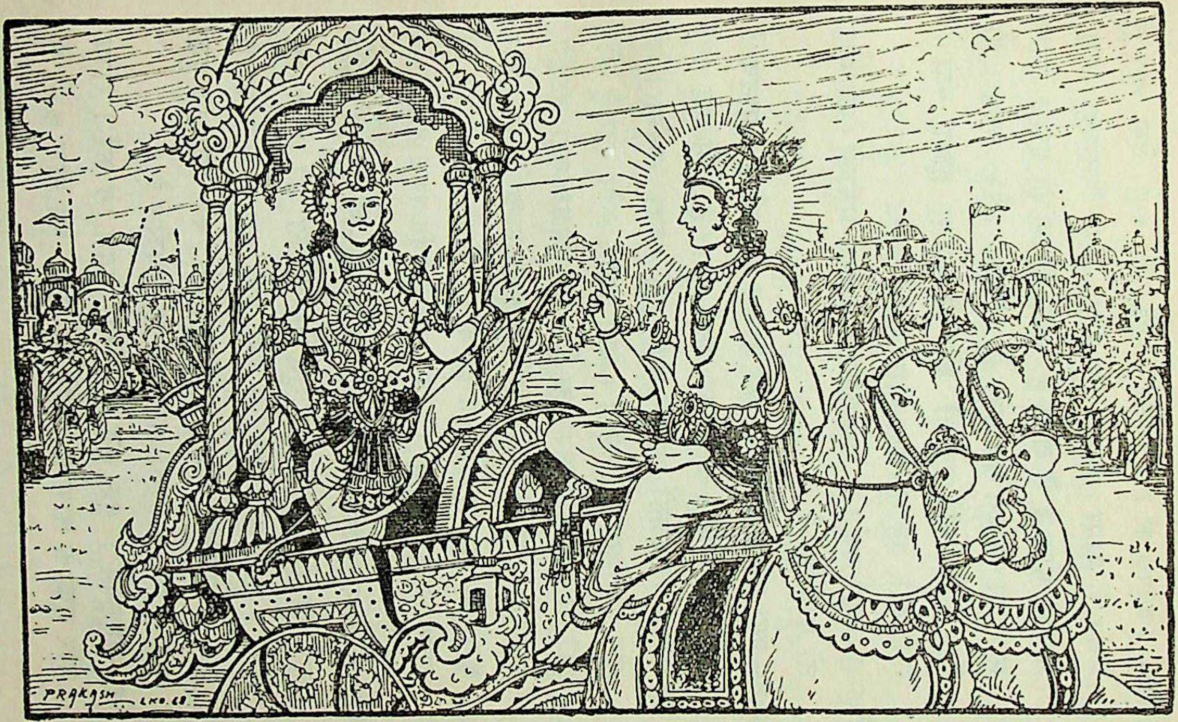


श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को गीता का उपदेश

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

**अर्जुन**—(शत्रुपक्ष की ओर देखकर) यह मैं क्या देख रहा हूँ केशव ! मामा शल्य, गुरु द्रोण और पितामह भीष्म, जिनकी गोद में मैं खेला हूँ, सभी विजय की इच्छा लेकर मरने या मारने को खड़े हैं। विकर्ण और लक्ष्मण भी हैं। अपने भाई-भतीजों को ही मारना होगा क्या ? नहीं-नहीं, यह मुझसे न होगा।

**श्रीकृष्ण**—क्यों अर्जुन ? धर्म-पालन में भाई-भतीजों का मोह तो कायरता है।

**अर्जुन**—क्या सगे-सम्बन्धियों को मारना ही धर्म है, माधव ? यदि यही धर्म है तो फिर अधर्म क्या है ? मैं युद्ध नहीं करूँगा। स्वजनों पर मैं बाण नहीं चला सकूँगा। मेरे अंग शिथिल हो रहे हैं। मेरा शरीर काँप रहा है और हाथ से गांडीव खिसक रहा है। मुझे विजय नहीं चाहिए, जनार्दन ! मुझे राज्य नहीं चाहिए। स्वजनों का संहार कर मुझे इस पृथ्वी का ही क्या, तीनों लोकों का भी राज्य नहीं चाहिए। (यह कहकर अर्जुन अपना गांडीव रख देते हैं।)

**श्रीकृष्ण**—वीर अर्जुन ! तुम यह कैसी कायरों की-सी बातें कर रहे हो ? ऐसी बातें तुम जैसे व्यक्ति को शोभा नहीं देतीं। आज युद्ध-स्थल में तुम्हें यह अज्ञान किस कारण हुआ ? परन्तप ! हृदय की दुर्बलता को छोड़कर युद्ध करो। यह कायरता क्षात्र-धर्म के विपरीत है।

**अर्जुन**—मधुसूदन ! मुझे युद्ध के लिए विवश न करें। राज्य और सुख के लोभ से अपने ही कुल का नाश करने में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


मुझे कोई बुद्धिमानी नहीं दिखायी पड़ती। मैं आचार्य द्रोण और पितामह भीष्म पर हाथ नहीं उठा सकता।

**श्रीकृष्ण**—अर्जुन ! तुम समझते हो कि तुम विद्वान की तरह बातें कर रहे हो। लेकिन तुम्हारी बातों में कोई तत्त्व नहीं है। विद्वान जन्म-मरण के विषय में कभी चिन्ता नहीं करते। वास्तव में न कोई मारता है और न कोई मरता है। आत्मा अजर-अमर है। जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों का त्याग कर नये वस्त्र धारण कर लेता है, वैसे ही आत्मा भी पुराने शरीर का त्याग कर नया शरीर धारण करता है। इसीलिए हे पुरुषश्रेष्ठ ! तुम्हारे लिए इस प्रकार का मोह उचित नहीं है। और फिर तुम यह क्यों भूलते हो कि तुम क्षत्रिय हो। तुम्हारा कर्तव्य धर्म की रक्षा के लिए युद्ध करना है। यदि तुमको वीरगति प्राप्त हुई तो तुम्हें स्वर्ग का सुख मिलेगा और जीवित रहोगे तो पृथ्वी का सुख भोगोगे।

**अर्जुन**—लेकिन मैं स्वर्ग या पृथ्वी के सुख-भोग के लिए युद्ध नहीं करना चाहता, सखे !

**श्रीकृष्ण**—तुम फिर भ्रम में पड़ गये, अर्जुन ! कर्मवीर कभी भी फल की इच्छा से काम नहीं करते। वे तो निष्काम कर्म में विश्वास करते हैं और केवल अपने कर्तव्य का पालन करते हैं। फिर, फल मनुष्य के हाथ में है भी कहाँ ? इसलिए तुम फल की इच्छा छोड़कर अपने कर्तव्य का पालन करो।

**अर्जुन**—यह तो आप ठीक कह रहे हैं, केशव ! किन्तु……

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

**श्रीकृष्ण**—किन्तु क्या ? किसी भी कारण से यदि तुम युद्ध से विरत हुए तो लोग तुम्हें कायर कहेंगे । युग-युगान्तर तक तुम्हारे अपयश और अपकीर्ति की गाथा चलती रहेगी । इसलिए मेरा कहना मानो और यह प्रमाद छोड़ कर युद्ध करो । एक बात का और ध्यान रक्खो । यदि तुम बिना फल की इच्छा के युद्ध करोगे तो तुम्हें किसी प्रकार का पाप भी नहीं लगेगा ।

**अर्जुन**—योगेश्वर ! आपकी बातों को सुनकर मेरी धमनियों में पुनः रक्त का संचार होने लगा है । आततायियों को मारने के लिए मेरी भुजाएं फड़कने लगी है । परन्तु आचार्य द्रोण और पितामह भीष्म……

**श्रीकृष्ण**—फिर तुम भ्रम में पड़े, अर्जुन ! भीष्म, द्रोण तो पहले ही मर चुके हैं । लो प्रत्यक्ष देख लो ।

(यह कह कर श्रीकृष्ण अर्जुन को अपना विराट स्वरूप दिखाते हैं ।)

**अर्जुन**—(आश्चर्यचकित होकर) भगवन ! मैं यह क्या देख रहा हूँ । आपके मुख में तो सारा विश्व लीन हो रहा है । भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कर्ण और हमारे पक्ष के भी योद्धा सब के सब बड़े वेग से आपके मुख में प्रवेश करते जा रहे हैं । (भयभीत स्वर में) भगवन ! आपके इस भयंकर रूप को मैं और अधिक देर तक नहीं देख सकता । आप अपने प्रकृत रूप में आ जाइये ।

**श्रीकृष्ण**—(अपने पूर्व रूप में आकर) अर्जुन ! तुमने देख लिया, जिन योद्धाओं से तुम युद्ध करने जा रहे हो, वे पहले ही मर चुके हैं । इसलिए तुम मेरा कहना मानो और युद्ध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


के लिए तैयार हो जाओ। अपने कर्तव्य का पालन करना सर्वदा श्रेष्ठ होता है। तुम क्षत्रिय हो। क्षत्रिय का धर्म है अत्याचार से लड़ना और धर्म की स्थापना करना।

अर्जुन—हे अच्युत ! आपकी कृपा से अब अज्ञान से उत्पन्न हुआ मेरा मोह नष्ट हो गया है और सारे संशय भी दूर हो गये हैं। मैं अब आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

(अर्जुन अपना गांडीव उठाकर उसकी प्रत्यंचा चढ़ाते हैं और कान तक खींच कर छोड़ देते हैं। धनुष की टंकार से युद्ध-भूमि में घोर नाद भर जाता है। चारों ओर फिर शंख-ध्वनि होने लगती है। महाभारत का युद्ध प्रारम्भ हो जाता है। )

—अयोध्यानाथ शर्मा

## अध्ययन

### प्रश्न

१. अर्जुन युद्ध के लिए क्यों तैयार नहीं हो रहे थे ?
२. कृष्ण ने अर्जुन का कार्य क्षात्र-धर्म के विपरीत क्यों बताया ?
३. भीष्म पितामह और द्रोणाचार्य से युद्ध करने के लिए अर्जुन के मन में सबसे अधिक हिचक क्यों थी ?
४. श्रीकृष्ण ने अर्जुन का मोह किस प्रकार दूर किया ?
५. इस पाठ का मुख्य सन्देश क्या है ?

### अभ्यास

१. निम्नलिखित पर परिचयात्मक टिप्पणियां लिखो—
भीष्म, कर्ण, अश्वत्थामा, जयद्रथ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२. 'अपकीर्ति' शब्द 'अप' उपसर्ग के संयोग से बना है। इसी प्रकार 'अप' लगाकर बने हुए अन्य शब्द लिखो।

३. 'स्वजनों का संहार करके मुझे इस पृथ्वी का क्या तीनों लोकों का राज्य भी नहीं चाहिए।' इस वाक्य में 'क्या' शब्द के प्रयोग पर ध्यान दो। पूरे वाक्य का क्या अर्थ होगा? इस तरह के पाँच वाक्य बनाओ।

## टिप्पणी

**परन्तप**=शत्रु को दुःख देने वाला, अर्जुन का एक नाम। **आततायी**=दुःख देने वाला। **प्रमाद**=असावधानी। **प्रकृत**=यथार्थ, असली।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ १६

# इब्राहिम गार्दी

[सुप्रसिद्ध उपन्यासकार एवं कहानी लेखक श्री वृन्दावनलाल वर्मा ने इस कहानी में इब्राहिम गार्दी की राष्ट्र-निष्ठा एवं देशभक्ति का बड़ा प्रभावपूर्ण चित्रण किया है। इब्राहिम गार्दी सच्चे अर्थ में मुसलमान था और अपनी मातृभूमि के प्रति उसमें श्रद्धा और निष्ठा कूट-कूट कर भरी थी।]

सन् १७६१ में पानीपत के युद्ध में मराठे अहमदशाह अब्दाली से हार गये। मराठों का सरदार इब्राहिम गार्दी बन्दी हुआ। वह अन्त तक लड़ता रहा था और घायल हो जाने के कारण पकड़ लिया गया था। घायल इब्राहिम गार्दी को अवध के नवाब शुजाउद्दौला के टोले में, जो अफगान शाह अब्दाली की छावनी के भीतर ही था, पकड़कर रख लिया गया। शुजाउद्दौला घायल का वध नहीं करना चाहता था परन्तु अहमदशाह अब्दाली को इब्राहिम खाँ के नाम से घृणा थी। इब्राहिम के पकड़े जाने और शुजा के टोले में होने का समाचार उसको मिल गया था। इसलिए उसने इब्राहिम को अपने सामने पेश किये जाने के लिए शुजा के पास दूत भेजा।

शुजाउद्दौला इब्राहिम की उपस्थिति से इनकार न कर सका। उसने अनुरोध किया, "इब्राहिम काफी घायल हो गया है, अच्छा हो जाने पर पेश कर दूंगा।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूत ने अपने शाह का हठ प्रकट किया, "उसको हर हालत में इसी पल जाना होगा।"

शुजा का प्रतिवाद क्षीण पड़ गया। फिर भी उसने कहा, "सोचिए, इब्राहिम मराठों के दस हजार सिपाहियों का सालार था। घायल हुआ है, कैद में है। कम से कम इस वक्त तो नहीं बुलाया जाना चाहिए।"

दूत ने नहीं माना। उसको अहमदशाह अब्दाली का स्पष्ट आदेश था। शुजाउद्दौला को उस आदेश का पालन करना पड़ा।

अहमदशाह के सामने इब्राहिम गार्दी लाया गया।

अहमदशाह ने पूछा, "तुम मराठों की दस पलटनों के जनरल थे ?"

उसने उत्तर दिया, "अवश्य था।"

"पहले तुम फ्रांसीसियों के नौकर थे ?"

"जी हाँ।"

"फिर हैदराबाद के निजाम के यहाँ नौकर हुए ?"

"सही है।"

"तुमने निजाम की नौकरी क्यों छोड़ दी ?"

"क्योंकि निजाम के रवैये को मैंने अपने उसूल के खिलाफ पाया।"

"तुम्हारे उसूल ? तुमने फिरंगी जुबान भी पढ़ी है ?"

"जी हाँ।"

"मुसलमान होकर फिरंगी जुबान पढ़ी। फिर मराठों की नौकरी की। खैर, अब जो कुछ तुमने किया, उस पर तुमको तोबा करनी चाहिए। तुमको शरम आनी चाहिए।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घाव की परवाह न करते हुए इब्राहिम बोला, "तोबा और शरम, आप क्या कहते हैं, अफगान शाह ! आपके देश में अपने मुल्क से मुहब्बत करने और उस पर जान देने वालों को क्या तोबा करनी पड़ती है ? और क्या उसके लिए सिर नीचा करना पड़ता है ?"

"तुम जानते हो किसके सामने हो, किससे बातें कर रहे हो ?" अहमदशाह ने तेज होकर कहा ।

"जानता हूँ । और न भी जानता होता तो जान जाता । पर यह यकीन है कि आप खुदा के फरिश्ते नहीं हैं ।"

"मैं इतनी बड़ी फतह के बाद गुस्से को अपने पास नहीं आने देना चाहता । ताज्जुब है, मुसलमान होकर तुमने जिन्दगी को इस तरह बिगाड़ा ।"

"तब आप यह जानते ही नहीं कि मुसलमान कहते किसको हैं। जो अपने मुल्क के साथ घात करे, जो अपने मुल्क को बरबाद करने वाले परदेशियों का साथ दे वह मुसलमान नहीं ।"

"मुझको मालूम हुआ है कि तुम फिरंगियों के कायल रहे हो । उनकी शागिर्दी में ही तुमने यह सब सीखा है । क्यों, क्या तुम नमाज पढ़ते हो ?"

"हमेशा, पाँचो वक्त ।"

अहमदशाह के चेहरे पर व्यंग्य भरी मुसकराहट आयी और आँखों में वध की क्रूरता । बोला, "फिरंगी या मराठी जुबान में नमाज पढ़ते होगे, खुदा को राम कहते होगे ।"

इब्राहिम ने घावों की पीड़ा दबाते हुए कहा, "खुदा अरबी, फारसी या पश्तो जबान को ही समझता है ? क्या

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वह मराठी या फ्रांसीसी को नहीं जानता ? क्या खुदा राम नहीं है और क्या राम खुदा नहीं है ?"

अहमदशाह अब्दाली की नाक में नासूर था। उसमें से फुफकार निकल पड़ी। बोला, "क्यों कुफ्र बकता है ? तोबा करो, नहीं तो टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायँगे।"

"मेरे इस तन के टुकड़े हो जाने से रूह के टुकड़े तो होंगे नहीं।" इब्राहिम ने दृढ़ स्वर में कहा।

घायल इब्राहिम के ठंडे स्वर से अहमदशाह की क्रूरता कुंठित हुई। एक क्षण सोचने के बाद बोला, "अच्छा, हम तुमको तोबा करने के लिए वक्त देते हैं। तोबा कर लो तो हम तुमको छोड़ देंगे। अपनी फौज में अच्छी नौकरी भी देंगे। तुम फिरंगी तरीके पर कुछ दस्ते तैयार करना।"

कराह में दबाये हुए इब्राहिम के ओठों पर एक रीनी-झीनी हँसी आ गयी। इब्राहिम अहमदशाह के उस खिलवाड़ को समाप्त करना चाहता था।

उसने कहा, "अगर छूट जाऊँ तो पूना में ही फिर पलटनें तैयार करूँ और फिर इसी पानीपत के मैदान में उन अरमानों को निकालूँ, जिनको आज निकाल न पाया और जो मेरे कलेजे में धधक रहे हैं।"

"अब समझ में आ गया कि तुम असल में बुतपरस्त हो।"

"जरूर हूँ, लेकिन मैं ऐसे बुत को पूजता हूँ जो दिल में बसा हुआ है और स्वाद में मीठा है। जिन बुतों को बहुत से हिन्दू पूजते हैं, और आप लोग भी, मैं उनको नहीं पूजता।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


"हम लोग भी ! खबरदार ।"

"हाँ, आप लोग भी । मरे हुए सिपाहियों के सिरों के ढेर जो हर तम्बू के सामने लगाये हैं और जिनके सामने आपके पठान और रुहेले सिपाही नाच-नाचकर जश्न मना रहे हैं, वह सब क्या है ? क्या वह बुतपरस्ती नहीं ?"

"हूँ, तुम बहुत बदजबान हो । तुम्हारा भी वही हाल किया जायगा जो तुम्हारे सदाशिवराव भाऊ का हुआ है ।"

चकित इब्राहिम के मुँह से निकल पड़ा, "क्यों, उनका क्या हुआ ?" उत्तर मिला, "मार दिया गया, सिर काट लिया गया ।"

"ओफ !" घायल इब्राहिम ने दोनों हाथों से सिर थाम-कर कहा ।

अब्दाली को उसकी पीड़ा रुची । बोला, "तुम लोगों का वह खूबसूरत छोकरा विश्वासराव भी मारा गया ।"

इब्राहिम की बुझती हुई आँखों के सामने और भी अँधेरा छा गया । उसने कुपित स्वर में कहा, "विश्वासराव ! मेरे मुल्क का ताज, मेरे सिपाहियों के हौसलों का ताज । ओफ···!" इब्राहिम गिर पड़ा ।

अहमदशाह उसके तड़पने पर प्रसन्न था । उसकी निर्ममता ने सोचा, शहीदों को जीत लिया । इब्राहिम जरा-सा उठकर भरभराते हुए स्वर में बोला, "पानी !"

अब्दाली कड़का, "पहले तोबा कर !"

जहाँ के तहाँ पड़कर इब्राहिम ने कहा, "तोबा ! शहीद कहीं तोबा करता है । तोबा करें वे लोग जो कैदियों, घायलों और निहत्थों का कत्ल करते हैं ।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


अब्दाली से नहीं सहा गया । इब्राहिम भी नहीं सह पा रहा था ।

अब्दाली ने उसके टुकड़े-टुकड़े करके वध करने की आज्ञा दी ।

एक अंग कटने पर इब्राहिम की चीख में से निकला, "मेरे ईमान पर पहली नियाज ।" दूसरे पर क्षीण स्वर में निकला, "हम हिन्दू-मुसलमानों की मिट्टी से ऐसे सूरमा पैदा होंगे, जो वहशियों और जालिमों का नामोनिशान मिटा देंगे ।"

फिर अन्त में मराठों के ब्रिगेडियर जनरल इब्राहिम खाँ गार्दी के मुँह से केवल एक शब्द निकला "अल्लाह" जिसको फरिश्तों के पंखों और इतिहास के पन्नों ने सावधानी के साथ छिपा लिया ।

—वृन्दावनलाल वर्मा

## अध्ययन

**प्रश्न—**

१. मराठे अहमदशाह अब्दाली से कब पराजित हुए ?
२. अहमदशाह अब्दाली ने इब्राहिम के लिए क्या आदेश दिया ?
३. शुजाउद्दौला इब्राहिम गार्दी को अहमदशाह के हवाले क्यों नहीं करना चाहता था ?
४. इब्राहिम के चरित्र से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?

**अभ्यास—**

१. निम्नांकित का हिन्दी रूपान्तर करो—
पेश करना, सालार, उसूल, खिलाफ, जुबान, तोबा करना, मुहब्बत, मुल्क, फतह ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



२. 'प्रतिवाद' शब्द में 'प्रति' उपसर्ग है। इसी प्रकार 'प्रति' उपसर्ग लगाकर पाँच अन्य शब्द बनाओ।

३. निम्नांकित प्रश्न के तीन उत्तर दिये जा रहे हैं, जिनमें से केवल एक उत्तर ठीक है। ठीक उत्तर बताओ—

इब्राहिम गार्दी ने तोबा करना क्यों नहीं स्वीकार किया ?

(क) इसलिए कि वह मुसलमान था।

(ख) इसलिए कि वह राष्ट्र-भक्त था।

(ग) इसलिए कि वह कई भाषाओं का ज्ञाता था।

४. 'जिसको फरिश्तों के पंखों......छिपा लिया' का अर्थ समझा कर लिखो।

**आदेश**—अहमदशाह अब्दाली और इब्राहिम गार्दी के वार्तालाप को अपनी भाषा में संक्षेप में लिखो।

## टिप्पणी

**प्रतिवाद**=विरोध। **तोबा**=पश्चात्ताप, प्रायश्चित्त। **कुफ्र**=इस्लाम के विरुद्ध बात। **कुंठित हो गयी**=मन्द पड़ गयी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ १७

# भारतीय जलपोत

[प्रस्तुत पाठ में भारतीय जलपोत के निर्माण के क्रमिक विकास का वर्णन है। स्वतन्त्रता के उपरान्त भारतीय इतिहास का नया अध्याय आरम्भ हुआ और तब से समुद्र-यात्रा के क्षेत्र में भारत ने सर्वतोमुखी प्रगति की है।]

जलपोतों का निर्माण प्राचीनकाल में भारत का एक प्रमुख उद्योग था। जलमार्ग द्वारा पूर्व और पश्चिम के पड़ोसी देशों और द्वीपों के साथ भारत के सम्बन्ध बहुत पुराने समय से रहे हैं। इन देशों से भारत का व्यापार भी हुआ और संस्कृति का आदान-प्रदान भी। हमारे पूर्वजों ने तरह-तरह की नावें और जहाज बनाये, जलमार्गों की खोज की और दूर-दूर तक यात्राएं भी कीं। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई में प्राप्त एक नौका के अवशेष और एक मुद्रा पर लंगर के चित्र से स्पष्ट है कि पूर्व वैदिक काल में भी गहरे जल में चलने वाले जलयानों का निर्माण होता था। गुजरात में भी उस समय के एक विशाल नौकागार की खोज हुई है। बेबीलोन के खंडहरों से प्राप्त भारतीय सागोन की लकड़ी का सामान यहाँ की तत्कालीन उन्नत व्यापारिक परम्परा की ओर संकेत करता है।

वैदिक काल में भी हमें लम्बी-लम्बी समुद्र यात्राओं के वर्णन मिलते हैं। ऋग्वेद में इस बात का उल्लेख है कि यहाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


के व्यापारी धन की खोज में विदेशों की समुद्र-यात्रा करते थे। तुंग ऋषि द्वारा अपने पुत्र भुज्य को एक बड़े जहाज में युद्ध के लिए भेजने का उल्लेख मिलता है। उसमें यह भी लिखा है कि वरुण और वशिष्ठ महासागर के मध्य तक पहुँच गये थे। मनुस्मृति-काल में भारतीयों की जलयान-निपुणता की बात कही गयी है—समुद्रयानकुशलः देशकालार्थ दर्शिनः।

समुद्र-यात्रा की यह परम्परा पौराणिक काल तक अखंडित रही। उस समय के 'युक्ति कल्पतरु' नामक ग्रन्थ में जलयान-निर्माण का सविस्तार वर्णन है। उसमें लिखा है कि जलयान-निर्माण के लिए क्षत्रिय काष्ठ उत्तम होता है, जो हलका परन्तु कठोर होता है। उसमें यह भी चेतावनी है कि जलयान के तल-काष्ठ को लोहे की कीलों से नहीं जोड़ना चाहिए अन्यथा 'लौह कान्त' ( चुम्बकीय चट्टान ) से यान नष्ट हो जाने की आशंका है। 'युक्ति कल्पतरु' में नदियों और समुद्रों में चलने वाले जलयानों का अलग-अलग वर्णन है। नदियों में चलनेवाला सबसे बड़ा जलयान 'मन्थरा' पचपन मीटर लम्बा और अट्ठाइस मीटर चौड़ा होता था। समुद्री जलयान दो प्रकार के होते थे—दीर्घा तथा उन्नता। 'वेगिनी' सबसे बड़ा जलयान था, जो सत्तावन मीटर लम्बा, दस मीटर चौड़ा और ग्यारह मीटर ऊँचा होता था। जलयान नीले, पीले, लाल और श्वेत रंग से रँगे जाते थे। बड़े जलयानों में चार मस्तूल और अलग-अलग कक्ष होते थे। जिन जहाजों के पूरे धरातल पर कक्ष बने रहते थे, वे 'सर्वमन्दिरा' कहलाते थे और जिनके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

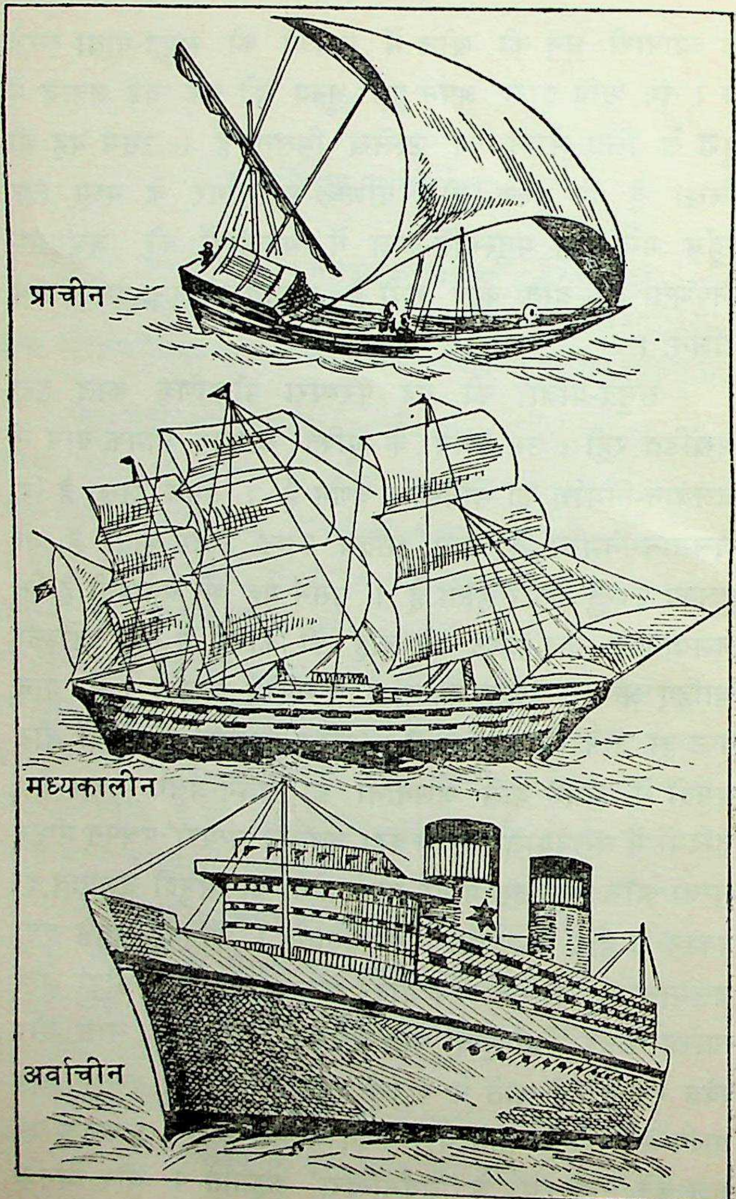


भारतीय जलपोत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



बीच में ही कक्ष होते थे, वे 'मध्यमन्दिरा'। सोने-चाँदी अथवा ताँबे से उनका अलंकरण भी किया जाता था।

मध्ययुग तक भारत का समुद्री व्यापार पश्चिम की ओर बेबीलोन, अरब, मिस्र, यूनान तथा रोम से होता रहा तथा पूर्व में ब्रह्मा, श्याम, कम्बोडिया, चीन, जापान, जावा, सुमात्रा आदि देशों से। उस समय जावा को यवद्वीप और सुमात्रा को स्वर्णद्वीप कहते थे। इन द्वीपों में भारतीय बस गये और अपने साथ इस देश की संस्कृति और कला भी लेते गये। यहाँ पर उन्होंने बड़े-बड़े नगरों, महलों और मन्दिरों का भी निर्माण किया, जिन पर भारतीय कला की स्पष्ट छाप है। इन देशों में मुख्य रूप से लोहे और वस्त्रों का निर्यात भारत से होता था।

पश्चिमी देशों का व्यापार सिन्ध के देवल और मद्रास के कोलममली बन्दरगाहों से होता था। देवल व्यापार की बहुत बड़ी मंडी थी और कोलममली में जहाज बनाने और उनकी मरम्मत करने का कारखाना था। कावेरी के मुहाने पर एक प्रकाश-स्तम्भ का वर्णन भी अरब वालों ने किया है और कहा है कि उस पर तेल की मशाल जलती रहती थी। व्यापार का मार्ग लाल सागर होकर था, जिसे उस समय लोहित सागर कहते थे। भारत से अरब को मोती, जवाहरात और सुगन्धित द्रव्यों का निर्यात होता था। एक यात्री ने हजरत उमर से अपनी यात्रा का वर्णन करते हुए कहा था, "भारत का समुद्र 'मोती' है, उसका पर्वत 'लाल' है और उसका वृक्ष 'इत्र'।"

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में लिखा है कि नौ-विभाग का संचालन नौकाध्यक्ष करता था और जलयानों का निर्माण राज्य

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh 

द्वारा ही किया जाता था। दिशा-ज्ञान के लिए मत्स्य-यन्त्र का प्रयोग होता था। समुद्र में मार्ग न मिलने पर नाविक कभी-कभी पक्षियों को उड़ाकर समीपस्थ स्थल का पता लगाते थे क्योंकि पक्षी स्वभावत: स्थल की ओर ही उड़ते हैं। अशोक के समय में जल-यात्रा को और अधिक प्रोत्साहन मिला जब कि विदेशों से सम्पर्क बढ़ा और धर्म-प्रचार के लिए भिक्षु सुदूर देशों तक आने-जाने लगे।

भारतीय जलपोत की यह परम्परा मुसलमान शासकों के समय तक चलती रही। गुप्त-युग में गुजरात तथा कोनकन तट पर नये पत्तनों का विकास हुआ। प्रसिद्ध यात्री मार्को पोलो ने तत कालीन भारतीय जलयानों का विस्तृत वर्णन किया है। उसने लिखा है कि यान के तल पर चूना, सन तथा एक विशेष वृक्ष के तेल का मिश्रण लगा दिया जाता है, जिससे उस पर जल का प्रभाव नहीं पड़ता। यानों की विशालता का वर्णन करते हुए उसने लिखा है कि इनमें से कुछ पर एक सौ पचास से लेकर तीन सौ तक नाविक कार्य करते थे।

चौदहवीं शताब्दी में भारतीय जलयानों का आकार तो इतना बड़ा हो गया था कि उनमें सात सौ यात्री तक एक साथ यात्रा कर सकते थे। अकबर के समय में जलयान का निर्माण मौर्य युग की भाँति राज्य के अधीन था। जलयान विभाग का मुख्य अधिकारी 'मीर बहरी' कहलाता था। जब पुर्तगाल, फ्रांस और अंग्रेजों के जलयान भारत आने लगे तो भारत के तटवर्ती राजाओं ने अपनी नौ-सेनाएं भी संगठित कीं। जल-दस्युओं से यात्रियों की सुरक्षा के लिए भी रक्षक नौ-सेना का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



निर्माण हुआ। छत्रपति शिवाजी की नौ-सेना पर्याप्त सुदृढ़ थी। उसके संगठनकर्त्ता कान्होजी अंग्रे का नाम अमर रहेगा। उन्होंने विदेशियों और मुगलों की नौ-सेनाओं को भी परास्त कर दिया था। उन्होंने देश के लिए उस समय जो महान सेवा की उसके उपलक्ष्य में बम्बई के एक प्रसिद्ध नौ-संस्थान का नाम 'आई० एन० एस० अंग्रे' रखा गया है। विजयदुर्ग, कोलाबा, सिन्धु-वर्ग और रत्न-गिरि में मरहठों के प्रसिद्ध नौकागार थे, उनके युद्ध-पोतों में तीस से सौ तक तोपें रहती थीं। 'सदाशिव भास्कर' और 'शमशेर' उनके प्रसिद्ध युद्ध-पोतों के नाम थे।

उन्नीसवीं शताब्दी तक भारत में जलपोत-कला विकसित होती रही। जब इंग्लैंड के पूँजीपतियों ने देखा कि वे भारत निर्मित जलपोतों की समता नहीं कर सकते तो उन्होंने यहाँ के इस उद्योग को बन्द करा दिया। उस समय बम्बई में वाष्प-चालित लोहे के जलयान भी बनने लगे थे। लगभग एक शताब्दी में भारत के विदेशी शासकों ने यहाँ की इस परम्परा को इतना नष्ट कर दिया कि सामान्य भारतवासी देश के इस गौरवपूर्ण इतिहास को भूल-सा ही गये।

सन् १९४७ में देश के स्वतन्त्र होते ही भारत सरकार का ध्यान जलयान-निर्माण और नौ-सेना-संगठन की ओर गया। वास्तव में इसके पूर्व भी एक नौ-निर्माण-केन्द्र विशाखापट्टम में स्थापित हो चुका था, जिसका शिलान्यास देशरत्न स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद ने किया था। विशाखापट्टम आन्ध्र प्रदेश के पूर्वी तट पर एक पत्तन है, जहाँ जलयान बनाने की पूरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुविधा है । सन् १९४६ में यहाँ जलयान-निर्माण का कार्य प्रारम्भ हुआ, जो भारतीय नौ-इतिहास का एक नवीन पृष्ठ था। पहला जलयान 'जल उषा' १४ मार्च, १९४८ को समुद्र में उतारा गया । दो वर्ष बाद 'जल प्रभा' लौहपुरुष सरदार पटेल द्वारा समुद्र में उतारा गया । अब इस केन्द्र का पर्याप्त विस्तार हो गया है । इस समय भारत का जलयान उद्योग कुछ भारत सरकार के हाथ में है और कुछ सरकार द्वारा मान्य कम्पनियों के ।

भारतीय जलयान का इतिहास बहुत पुराना है । यह इतिहास भाग्यवश या स्वतः ही नहीं बन गया । यह हमारे अथक परिश्रम, विद्या, बुद्धि और विवेक का फल है। इस उत्तराधिकार की हमको बड़ी सजगता से रक्षा करनी है। सौभाग्य से हमें छह हजार चार सौ किलोमीटर लम्बा समुद्र-तट भी प्राप्त है। वस्तुतः स्वतन्त्र भारत के इतिहास का वह दिन बड़ा ही गौरवमय होगा, जब भारत में ही निर्मित आधुनिकतम जलयान विश्व के समस्त पत्तनों में जाकर अपनी पताका भी फहरायेंगे ।

—देवदत्त भार्गव

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. मानव-जीवन को समुद्र किस प्रकार प्रभावित करता है ?
२. बेबीलोन कहाँ है और उसकी सभ्यता कितनी प्राचीन है ?
३. 'युक्ति-कल्पतरु' में जलयानों का किस रूप में वर्णन किया गया है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. प्राचीन काल में भारत का समुद्री व्यापार किन-किन देशों से होता था ?

५. स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात भारत ने जलपोत निर्माण के क्षेत्र में क्या प्रगति की है ?

**अभ्यास**

१. निम्नांकित पंक्तियों के भाव स्पष्ट करो—
   (क) भारतीयों की प्रवृत्ति......स्वाभाविक ही है।
   (ख) समुद्र-यात्रा की......अखंडित रही।
   (ग) इस उत्तराधिकार......रक्षा करनी है।

२. निम्नलिखित शब्दों में सविग्रह समास निर्देश करो—
   समुद्र-यात्रा, आदान-प्रदान, लौहपुरुष, नौकागार।

**आदेश**—भारतीय जलपोत-निर्माण की परम्परा पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखो।

## टिप्पणी

**बेबीलोन**=पश्चिमोत्तर एशिया का एक प्राचीन देश। **धन-धान्य**=धन-सम्पत्ति। **निर्यात**=बाहर भेजना। **प्रचुर**=बहुत। **उपनिवेश**=वह विजित देश, जिसमें विजेता शासन करने के लिए बस जाते हैं। **कौटिल्य**=चाणक्य का एक नाम। **पत्तन**=बन्दरगाह (इसका प्रयोग नगर के अर्थ में भी होता है।) **दस्यु**=डाकू। **नौ-सेना**=समुद्री लड़ाई लड़ने वाली सेना, जल सेना। **आधिपत्य**=प्रभुत्व।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ १८

# जलाओ दिये

[हमें प्रकाश चाहिए, किन्तु बाहरी प्रकाश ही हमारे सुखी होने के लिए पर्याप्त नहीं है। हमारे मन और हृदय भ्रातृभाव, समता, न्याय, त्याग और दया के प्रकाश से प्रकाशित होने चाहिए। इस कविता में कवि ने इस भाव को बड़े मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। इसके रचयिता श्री गोपालदास 'नीरज' हैं।]

जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाये।

नयी ज्योति के धर नये पंख झिलमिल,
उड़े मर्त्य मिट्टी गगन-स्वर्ग छू ले,
लगे रोशनी की झड़ी झूम ऐसी,
निशा की गली में तिमिर राह भूले,
खुले मुक्ति का वह किरण द्वार जगमग,
उषा जा न पाये, निशा आ न पाये।

जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाये।

सृजन है अधूरा अगर विश्व भर में,
कहीं भी किसी द्वार पर है उदासी,
मनुजता नहीं पूर्ण तब तक बनेगी,
कि जब तक लहू के लिए भूमि प्यासी,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


चलेगा सदा नाश का खेल यूँ ही,
भले ही दिवाली यहाँ रोज आये ।

जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाये ।

मगर दीप की दीप्ति से सिर्फ जग में,
नहीं मिट सका है धरा का अँधेरा,
उतर क्यों न आयें नखत सब गगन के,
नहीं कर सकेंगे हृदय में उजेरा,
कटेगी तभी यह अँधेरी घिरी, जब
स्वयं धर मनुज दीप का रूप आये ।

जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाये ।।

—'नीरज'

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. यह कविता किस अवसर पर लिखी गयी प्रतीत होती है ?
२. कवि किस प्रकार के दिये जलाने को कहता है ?
३. केवल दीपकों के प्रकाश से पृथ्वी का अँधेरा क्यों नहीं मिट सकता ?
४. इस कविता के द्वारा कवि वास्तव में हमे क्या सन्देश देना चाहता है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



**अभ्यास**

१. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो—

(क) उड़े मर्त्य मिट्टी गगन स्वर्ग छू ले।

(ख) निशा की गली में तिमिर राह भूले।

(ग) कटेगी तभी यह अँधेरी घिरी, जब
स्वयं धर मनुज दीप का रूप आये।

२. इस कविता का सारांश लिखो।

३. दिये, नखत, अँधेरा और दिवाली शब्दों के तत्सम रूप लिखो।

**आदेश**—इस कविता को कंठस्थ करके भावपूर्ण ढंग से सुनाओ।

## टिप्पणी

**मर्त्य**=नश्वर, मरणशील। **नखत**=नक्षत्र, तारे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ १९

# साहस

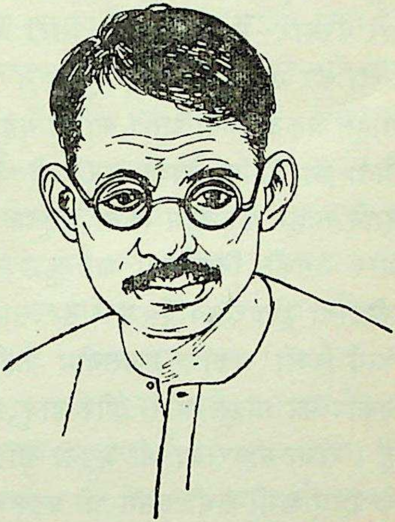

[इस पाठ में साहस का महत्त्व बताते हुए लेखक ने कहा है कि सभी महापुरुष साहसी थे। बिना साहस जीवन में उन्नति असम्भव है। इसके लेखक स्वर्गीय गणेशशंकर 'विद्यार्थी' बड़े साहसी, देशभक्त और प्रसिद्ध पत्रकार थे, जो हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रयत्न में शहीद हो गये।]

संसार के काम—बड़े अथवा छोटे साहस के बिना नहीं होते। संसार के सभी महापुरुष साहसी थे। बिना किसी प्रकार का साहस दिखलाये किसी जाति या किसी देश का इतिहास ही नहीं बन सकता। अपने साहस के कारण ही अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु इत्यादि आज हमारे हृदयों में जागरूक हैं। आल्प्स पर्वत के विशाल शिखरों को पार करने वाले हनीवल और नेपोलियन का नाम वीरवरों के नामों के साथ केवल उनके अतुलनीय साहस के कारण ही लिया जाता है। यह साहस ही का प्रभाव था जिसने तैमूर, बाबर, शिवाजी, क्रोमवेल, रणजीतसिंह और संग्रामसिंह जैसे सामान्य व्यक्तियों को कुछ से कुछ कर दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



सत्साहसी के लिए केवल साहस प्रकट करना ही अभीष्ट नहीं । सूरवंश के क्रूरकर्मा बादशाह मुहम्मद आदिल पर, भरे दरबार में, कितने ही सिरों और धड़ों को धरणी पर गिरा कर एक मुसलमान युवक ने आक्रमण करने का असीम साहस प्रकट किया था । कारण यह था कि बादशाह ने उसके पिता की जागीर जब्त कर ली थी । इसी से उक्त युवक ने इतने साहस का काम किया । युवक मारा गया । उसके साहस और उसकी निर्भीकता का कुछ ठिकाना नहीं है । परन्तु क्रोधान्ध होकर स्वार्थवश ऐसा साहस करने से युवक का यह कार्य किसी प्रकार प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता । इस प्रकार का साहस चोर और डाकू भी कभी-कभी कर गुजरते हैं । राजा-महाराजा भी अपनी कुत्सित इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए कभी-कभी इससे भी बढ़कर साहस के काम कर डालते हैं । ऐसा साहस नीच श्रेणी का साहस है ।

मध्यम श्रेणी का साहस प्रायः शूरवीरों में पाया जाता है । वह उनके उच्च विचार और निर्भीकता को भलीभाँति प्रकट करता है । इस प्रकार के साहस वाले मनुष्यों में बेपरवाही और स्वार्थहीनता की कमी नहीं होती, परन्तु उनमें ज्ञान की कमी अवश्य पायी जाती है । अकबर बादशाह के पास दो राजपूत नौकरी के लिए आये । अकबर ने उनसे पूछा कि तुम क्या काम करते हो ? वे बोले, 'जहाँपनाह, करके दिखलाये या केवल कह कर ?' बादशाह ने करके दिखलाने की आज्ञा दी । राजपूतों ने घोडों पर सवार होकर अपने-अपने बरछे सँभाले और अकबर के सामने ही एक दूसरे पर वार करने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
लगे। थोड़ी देर बाद वे एक दूसरे पर बेतरह टूट पड़े। बादशाह के देखते-देखते दोनों घोड़े से नीचे आ गिरे और मर कर ठंडे हो गये। इस प्रकार का साहस निःसन्देह प्रशंसनीय है परन्तु ज्ञान की आभा की कमी के कारण निस्तेज-सा प्रतीत होता है।

सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए हाथ-पैर की बलिष्ठता आवश्यक नहीं, धन, मान इत्यादि का होना भी आवश्यक नहीं। जिन गुणों का होना आवश्यक है, वे हैं—हृदय की पवित्रता तथा उदारता और चरित्र की दृढ़ता। ऐसे गुणों की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ साहस, तब तक पूर्णतया प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता जब तक उसमें एक और गुण सम्मिलित न हो। इस गुण का नाम है कर्तव्यपरायणता। कर्तव्य का विचार प्रत्येक साहसी मनुष्य में होना चाहिए। इस विचार से शून्य होने पर कोई भी मनुष्य, फिर चाहे उसके और विचार कैसे ही उन्नत क्यों न हों, मानव जाति की कुछ भी भलाई नहीं कर सकता। अपने कर्तव्य से अनभिज्ञ मनुष्य कभी भी परोपकारपरायण या समाज-हित-चिन्तक नहीं कहा जा सकता। बिना इस विचार के मनुष्य अपने परिवार—नहीं-नहीं—अपने शरीर अथवा अपनी आत्मा तक का कोई उपकार नहीं कर सकता। कर्तव्य-ज्ञान-शून्य मनुष्य को मनुष्य नहीं, पशु समझना चाहिए।

उच्चकोटि के साहसी के लिए क़र्तव्यपरायण बनना परमावश्यक है। कर्तव्यपरायण व्यक्ति के हृदय में यह बात अवश्य उत्पन्न होनी चाहिए कि जो कुछ मैंने किया, वह केवल अपना कर्तव्य किया। मारवाड़ के मौरूदा गाँव का जमींदार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बुद्धन सिंह किसी झगड़े के कारण स्वदेश छोड़कर जयपुर चला गया और वहीं बस गया । थोड़े ही दिनों बाद मरहठों ने मारवाड़ पर आक्रमण किया । यद्यपि बुद्धन मारवाड़ को बिलकुल ही छोड़ चुका था तथापि शत्रुओं के आक्रमण का समाचार पाकर और मातृभूमि को संकट में पड़ा हुआ जानकर, उसका रक्त उबल पड़ा । स्वदेश-भक्ति ने उसे बतला दिया, 'यह समय ऐसा नहीं है कि तू अपने घरेलू झगड़ों को याद करे । उठ और अपना कर्तव्य-पालन कर ।'

इस विचार ने उसे इतना मतवाला कर दिया कि वह अपने एक सौ पचास साथियों को लेकर, बिना किसी से पूछे जयपुर से तुरन्त चल पड़ा । देश भर में मरहठे फैले हुए थे । उनके बीच में से होकर निकल जाना कठिन काम था । परन्तु बुद्धन के साहस के सामने उस कठिनता को मस्तक झुकाना पड़ा । एक दिन अपने मुट्ठी भर साथियों को लिये वह मरहठों के बीच से होकर निकल ही गया । इस तरह निकल जाने से उसके बहुत से साथी रण-क्षेत्र रूपी अग्नि-कुंड में हुत हो गये । जीवित बचे हुओं में बुद्धनसिंह भी था । वह समय पर अपने देश और राजा की सेवा करने के लिए पहुँच गया ।

इस घटना को हुए बहुत दिन हो गये, परन्तु आज तक वीर-जाति राजपूत अपने कर्तव्यपरायण वीर बुद्धन की वीरता को सम्मानपूर्वक याद करती है । राजपूत महिलाएँ आज भी बुद्धन और उसके वीर साथियों की वीरता के गीत गाती हैं । मौखदा में आज भी एक स्तम्भ उन वीरों की यादगार में खड़ा हुआ इतिहासवेत्ताओं के हृदय को उत्साहित करता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इन गुणों के अतिरिक्त सत्साहसी के लिए स्वार्थ-त्याग भी परमावश्यक है। इस संसार में हजारों ऐसे काम हुए हैं, जिनको लोग बड़े उत्साह से कहते और सुनते हैं। उन कामों को वे बहुत अच्छा समझते हैं और उनके करने वालों को सराहते हैं। परन्तु उन कामों में थोड़े से ही ऐसे हैं, जो स्वार्थ से खाली हों। समय पड़ने पर अपनी जान पर खेल जाने अथवा असामान्य साहस प्रकट करने में सदा आत्मोत्सर्ग नहीं होता क्योंकि बहुधा ऐसे काम करने वाले—यश के लोभ से, अपने नाम को कलंकित होने से बचाने के इरादे अथवा लूटमार के द्वारा धनोपार्जन करने की इच्छा से ऐसे मदान्ध हो जाया करते हैं कि वे अपने मतलब के लिए कठिन से भी कठिन काम करने में संकोच नहीं करते।

सत्साहसी व्यक्ति में एक गुप्त शक्ति रहती है, जिसके बल से वह दूसरे मनुष्य को दुःख से बचाने के लिए प्राण तक देने को प्रस्तुत हो जाता है। धर्म, देश, जाति और परिवार वालों के ही लिए नहीं, किन्तु संकट में पड़े हुए अपरिचित व्यक्ति के सहायतार्थ भी उसी शक्ति की प्रेरणा से वह सारे संकटों का सामना करने को तैयार हो जाता है। अपने प्राणों की वह लेशमात्र भी परवाह नहीं करता। हर प्रकार के क्लेशों को प्रसन्नतापूर्वक सहता और स्वार्थ के विचारों को वह फटकने तक नहीं देता है।

सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सत्साहस दिखाने का अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में, पल-पल में, आया करता है। देश, काल और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर्तव्य पर विचार करना चाहिए और स्वार्थरहित होकर साहस न छोड़ते हुए कर्तव्यपरायण बनने का प्रयत्न करना चाहिए ।

—गणेशशंकर 'विद्यार्थी'

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. लेखक ने साहस की कितनी श्रेणियां बतायी हैं ?

२. सर्वोच्च श्रेणी के साहस की क्या विशेषता है ?

३. बुद्धनसिंह कौन था और उसने सत्साहस का क्या कार्य किया ?

४. साहसी व्यक्ति के लिए स्वार्थ-त्याग क्यों आवश्यक है ?

५. साहसी व्यक्ति में किन-किन गुणों का होना आवश्यक है ?

**अभ्यास**

१. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट करो :—

(क) इस प्रकार का साहस......प्रतीत होता है ।

(ख) सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए......चरित्र की दृढ़ता ।

२. निम्नलिखित शब्दों और मुहावरों का अर्थ बताते हुए उनका प्रयोग अपने वाक्यों में करो—

विलक्षण, जागरूक, बेतरह टूट पड़ना, ठंडा होना, स्तब्ध करना, धनोपार्जन ।

३. निम्नलिखित शब्दों के विलोम बताओ—

निर्भीक, बलिष्ठ, अनभिज्ञ, आवश्यक ।

४. सन्धि-विच्छेद करो—

आत्मोत्सर्ग, धनोपार्जन, मदान्ध ।

**आदेश**—१. अपने अनुभव की किसी साहसपूर्ण घटना का वर्णन करो ।

२. अपने पुस्तकालय से साहसी बालकों की कहानियां लेकर पढ़ो और उनमें से किसी एक कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखो ।

## टिप्पणी

**कुत्सित**=बुरा । **आत्मोत्सर्ग**=अपने को बलिदान करना । **धनोपार्जन**=धन पैदा करना । **मदान्ध**=मद से अन्धा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २०

# सरदार बल्लभभाई पटेल

[प्रस्तुत पाठ में लौहपुरुष सरदार पटेल का परिचय दिया गया है। इससे हमें उनकी दृढ़ता, कार्यकुशलता और अपूर्व संगठन-शक्ति का पता लगता है। इस पाठ के लेखक श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' प्रसिद्ध कवि और निबन्धकार हैं।]

सुदृढ़ एवं विशाल शरीर, कठोर मुख-मुद्रा और शत्रु के प्रति ललकार भरी आँखें—ऐसे थे सरदार बल्लभभाई पटेल। उनकी आन्तरिक शक्ति का परिचय उनकी प्रत्येक बात और व्यवहार से स्पष्ट था। सीने में तूफान की शक्ति थी, भुजाओं में उत्साह की फड़कन और अंग-प्रत्यंग में अपूर्व उमंग। वीरता उनकी आराध्य देवी थी और साहस उनका अनुचर। वे गरजने वाले नहीं, बरसने वाले मेघ थे। वे ऐसे योद्धा थे जो झुकना जानते ही नहीं। सफल सेनापति के सभी सद्‌गुणों का उनमें अद्‌भुत समन्वय था। इन्हीं गुणों ने बल्लभभाई को साधारण योद्धा से ऊपर उठाकर 'सरदार' के गौरवपूर्ण आसन पर प्रतिष्ठित कर दिया था।

ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये, उनके योद्धा-मानस के अन्दर छिपा हुआ राजनीतिज्ञ भी विकसित होता गया। स्वतन्त्रता के बाद देश का शासन-सूत्र हाथ में आने पर बल्लभभाई ने देश की विषम राजनीतिक गुत्थियों को सरलता से सुलझाया। उनका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

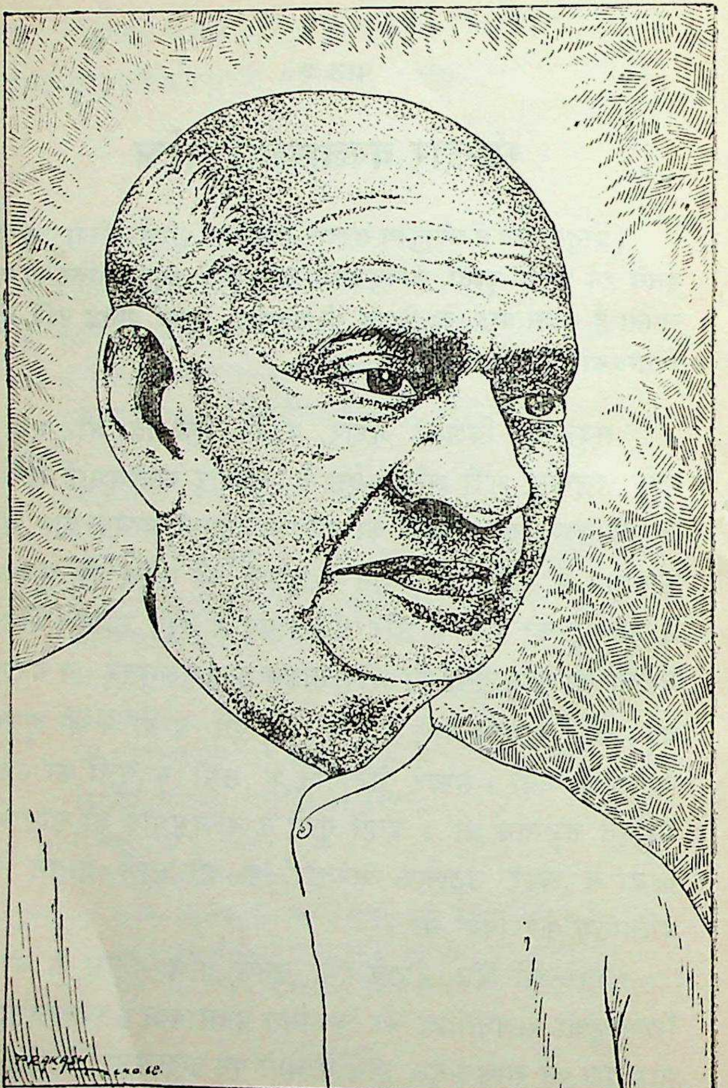


सरदार बल्लभभाई पटेल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नाम भारत की अखंड प्रभुसत्ता के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

बल्लभभाई का जन्म ३१ अक्टूबर, सन् १८७५ को गुजरात के खेड़ा जिले के करमसद नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता श्री झबेरभाई पटेल ईश्वर-भक्त कृषक थे। उन्होंने सन् १८५७ के स्वाधीनता-संग्राम में बुन्देलों से मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी थी। अपने पिता के देश-प्रेम और वीरता की छाप बल्लभभाई के जीवन पर भी थी।

मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात बल्लभभाई की इच्छा उच्च शिक्षा प्राप्त करने की थी, किन्तु घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उन्होंने कालेज में प्रवेश लेने का विचार छोड़ दिया और 'मुख्तारी' की परीक्षा उत्तीर्ण कर सन् १९०० में वे वकालत करने लगे। अपनी कार्यपटुता और अपने अध्यवसाय के कारण उन्होंने शीघ्र ही इस क्षेत्र में बड़ी ख्याति अर्जित कर ली।

एक बार जब भयानक महामारी फैली तो उन्होंने जनता की दिन-रात तत्परतापूर्वक सेवा-शुश्रूषा की। उनकी धर्मपत्नी झबेरवा भी इस कार्य में उनके साथ थीं। महामारी के शान्त होने पर पत्नी को उन्होंने करमसद भेज दिया और स्वयं नडियाद चले गये। करमसद जाकर उनकी पत्नी बीमार हो गयीं और उनकी हालत बिगड़ती गयी। आपरेशन के लिए उन्हें बम्बई छोड़कर वे लौट आये और अपनी वकालत के कार्य में पूर्ववत संलग्न हो गये। एक दिन जब वे अदालत में फौजदारी के एक मुकदमे की पैरवी में व्यस्त थे तो उन्हें एक तार मिला।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पढ़कर उन्होंने उसे चुपचाप जेब में रख लिया और फिर मुकदमे की पैरवी करने लगे । सब काम समाप्त कर लेने के बाद ही उन्होंने मित्रों से उस तार की चर्चा की और बताया कि इसमें उनकी पत्नी की मृत्यु का समाचार था । विपत्ति में धैर्य और साहस बनाये रखने का इससे बढ़कर ज्वलन्त उदाहरण और क्या हो सकता है !

अपनी धर्मपत्नी के देहावसान के समय बल्लभभाई की आयु केवल तेंतीस वर्ष की थी । उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया । देश-सेवा में व्यस्त रहने के कारण वे अपने बच्चों की पढ़ाई अथवा गृहस्थी के अन्य कार्यों की देखभाल नहीं कर पाते थे । किन्तु उनकी पुत्री कुमारी मणिबेन ने उनकी मृत्युपर्यन्त उन्हें इस ओर से निश्चिन्त रखा । सरदार पटेल की राजनीतिक सेवाओं की पृष्ठभूमि में कुमारी मणिबेन की सेवाएं सदा याद की जायेंगी ।

सन् १९१० में बल्लभभाई बैरिस्टरी पास करने के लिए विलायत गये । तीन वर्ष बाद वे विलायत से बैरिस्टरी की परीक्षा उत्तीर्ण करके वापस आये और बम्बई में प्रैक्टिस करने लगे । उनके बड़े भाई विट्ठलभाई भी उन दिनों बम्बई में ही प्रैक्टिस करते थे । दोनों भाइयों में आपस में यह तय हो गया था कि छोटा भाई पैसा कमाकर घर का खर्च चलाये और बड़ा भाई लोक-सेवा करे । पर जो व्यक्ति अपने बड़े भाई को स्वेच्छा से लोक-सेवा करने की सलाह दे सकता था, वह स्वयं उससे कैसे अलग रह सकता था ? गाँधीजी के सम्पर्क में आकर बल्लभभाई भी देश-सेवा के रंग में पूरी तरह रँग गये ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शनैः शनैः बल्लभभाई गुजरात के सच्चे नेता के रूप में जनता के सामने आये। रौलट ऐक्ट के विरुद्ध किये गये सत्याग्रह में उन्होंने अनेक कष्ट उठाकर गाँधीजी का पूरा साथ दिया। पंजाब के हत्याकांड ने जब देश को झकझोर दिया तो गाँधीजी ने सत्याग्रह का बिगुल बजाकर असहयोग आन्दोलन चलाया। गुजरात में उन दिनों असहयोग की ज्वाला बड़ी तीव्र थी। सरदार पटेल बराबर मैदान में डटे रहे। उनके प्रयत्न से ही गुजरात में चरखा और खद्दर की खूब धूम मची। सन् १९२१ में उन्होंने गुजरात प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष का पद सुशोभित किया।

बल्लभभाई को सबसे अधिक ख्याति 'बारडोली' के ऐतिहासिक सत्याग्रह से मिली। उस सत्याग्रह की सफलता के कारण वे न केवल गुजरात बल्कि समस्त देश के 'सरदार' बन गये। उन्होंने किसानों को जिस क्रान्तिकारी भाषा में सत्याग्रह की प्रेरणा दी थी, वह उनकी अटूट निष्ठा और कर्म-तत्परता की परिचायक है। उन्होंने कहा था—

"आप तो किसान हैं। किसान कभी दूसरे की ओर हाथ नहीं पसारता। आप सब कमेरे हैं, फिर डर किसका? न्याय के लिए, प्रतिष्ठा के लिए, बराबर लड़िए। आवश्यकता पड़े तो प्राणों की बाजी लगा दीजिए।" बारडोली में सत्याग्रह का बिगुल बज गया। सरकार के भीषण दमन और अत्याचार करने पर भी सत्याग्रह छह महीने तक बराबर चलता रहा। अन्त में सरकार को झुकना पडा और समझौता हो गया। सरकार ने फिर नये सिरे से बन्दोबस्त कराया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


सन् १९३१ में कराची में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। सरदार पटेल उसके सभापति निर्वाचित हुए, यह अधिवेशन बड़ी गम्भीर तथा महत्त्वपूर्ण परिस्थितियों में हुआ था। लाहौर में सरदार भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फाँसी दिये जाने के कारण देश में नवयुवक अत्यन्त क्षुब्ध थे और कानपुर के साम्प्रदायिक दंगों में हुए अमरशहीद गणेशशंकर 'विद्यार्थी' के बलिदान ने तो वातावरण में भयानक क्षोभ पैदा कर दिया। विषाद, सन्ताप और क्षोभ की उन परिस्थितियों में देश के नेतृत्व की बागडोर सँभालना सरदार जैसे सक्षम व्यक्ति का ही काम था।

१५ अगस्त, सन् १९४७ को स्वतन्त्रता मिलने पर वे भारत के उपप्रधानमन्त्री बने और गृह-विभाग तथा रियासती विभाग उन्हें सौंपे गये। स्वतन्त्रता-संग्राम में जहाँ वे ब्रिटिश सरकार और उसकी सहायक शक्तियों से लोहा लेने में सदैव तत्पर रहे, वहाँ उन्होंने यह भी दिखा दिया कि अत्यन्त विषम परिस्थितियों के होने पर भी शासन सम्बन्धी जटिल समस्याओं को सुलझाने की वे कितनी क्षमता रखते थे। उन्होंने रियासतों की राजनीति में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन किया, वह निःसन्देह भारत के इतिहास में एक नये अध्याय का सूत्रपात था। ऐसी रक्तहीन क्रान्ति का उदाहरण विश्व के इतिहास में अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। अपनी अपूर्व योग्यता से थोड़े ही दिनों में सरदार पटेल ने भारत की लगभग छह सौ रियासतों का एकीकरण कर दिया, दो सौ उन्नीस रियासतों को विभिन्न प्रदेशों में विलीन कर दिया और शेष रियासतों के सघ बनाकर उनमें प्रजातन्त्रीय शासन की स्थापना कर दी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैदराबाद के निजाम ने भारत सरकार के साथ समझौता किया कि एक वर्ष तक उनकी स्थिति यथापूर्व रहे पर निजाम रजाकारों के हाथों में खेलते रहे। उनकी इस नीति के कारण वहाँ अनाचारों और हत्याओं की घटनाएं बढ़ने लगीं। कई बार सरदार के चेतावनी देने पर भी जब निजाम न माने तो अन्त में विवश होकर सरदार को हैदराबाद में 'पुलिस-कार्रवाई' करनी पड़ी और तीन ही दिन में निजाम की 'सार्वभौम सत्ता' का अन्त हो गया। सरदार की इस साहसपूर्ण नीति की प्रशंसा करते हुए तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा था—'इतिहासकार जब पिछली बातों पर दृष्टि डालेंगे तब निःसन्देह वे यह समझेंगे कि रियासतों के एकीकरण का कार्य भारत के इतिहास में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य रहा है।"

सरदार पटेल ऊपर से जितने रूखे, निष्ठुर और अभिमानी से प्रतीत होते थे, भीतर से उतने ही सरल, कोमल और निरभिमानी थे। उनके हृदय में ममता, प्यार और सहृदयता का अथाह सागर हिलोरें मारता रहता था। किसानों की विपन्न और करुण अवस्था देखकर तो उनका हृदय उद्विग्न हो उठता था।

स्वाधीनता का यह अमर सेनानी १५ सितम्बर, सन् १९५०, को हमसे विदा हो गया। भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम के इतिहास में सरदार पटेल सदैव उज्ज्वल नक्षत्र की भाँति चमकते रहेंगे।

—क्षेमचन्द्र 'सुमन'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


## अध्ययन

**प्रश्न**

१. लेखक ने सरदार पटेल के किन-किन गुणों का वर्णन किया है ?

२. स्वतन्त्रता के बाद उन्होंने किन राजनीतिक गुत्थियों को सुलझाया ?

३. अपनी पत्नी की मृत्यु का तार पाकर उन्होंने क्यों रख लिया ?

४. इससे उनके किन गुणों का पता चलता है ?

५. बारडोली सत्याग्रह का सरदार पटेल ने किस प्रकार नेतृत्व किया ?

६. हैदराबाद में सरदार पटेल को पुलिस कार्रवाई क्यों करनी पड़ी ?

७. किसानों के प्रति उनके हृदय में इतना अधिक प्यार क्यों था ?

**अभ्यास**

१. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो—

(क) सीने में तूफान····अपूर्व उमंग ।
(ख) गरजने वाले····मेघ थे ।
(ग) उनका नाम····अंकित रहेगा ।
(घ) उनके हृदय में····रहता था ।

२. निम्नलिखित शब्दों और मुहावरों का अर्थ लिखो और अपने बनाये हुए वाक्यों में उनका प्रयोग करो—

स्वर्णाक्षरों में अंकित रहना, अध्यवसाय, असहयोग आन्दोलन, प्राणों की बाजी लगाना, हिलोरें मारना ।

३. निम्नलिखित शब्दों के आधार पर सरदार पटेल के व्यक्तित्व का चित्रण करो—

मुख-मुद्रा, समन्वय, शासन-सूत्र, विलीन, सहृदयता ।

**आदेश**—इस पाठ के आधार पर सरदार पटेल का जीवन-परिचय अपने शब्दों में लिखो ।

## टिप्पणी

**आराध्य**=आराधना के योग्य। **अनुचर**=पीछे चलने वाला सेवक। **विषम**=सम का विलोम, कठिन । **कार्यपटु**=कार्य में चतुर । **ज्वलन्त**=प्रकाशमान । **सक्षम**=समर्थ । **विपन्न**=दुखी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ २१

# रणयात्रा

[यह कविता श्री श्यामनारायण पाण्डेय के वीर रस के प्रसिद्ध काव्य 'जौहर' से ली गयी है। इस कविता में कवि ने उस समय का वर्णन किया है, जब अलाउद्दीन खिलजी के बन्दीगृह से चित्तौड़ नरेश रतनसिंह को मुक्त करने के लिए राजपूत वीर सात सौ पालकियों में महल से निकल कर शिविर की ओर प्रस्थान करते हैं।]

अन्धकार दूर था,
झाँक रहा सूर था,
कमल डोलने लगे,
कोष खोलने लगे,
लाल गगन हो गया,
मुर्ग मगन हो गया,
रात की सभा उठी,
मुसकरा प्रभा उठी।

घूम-घूम कर मधुप,
फूल चूम कर मधुप,
गा रहे विहान थे,
गूंज रहे गान थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



रात-तिमिर लापता,
चाँद का न था पता,
तुहिन-बिन्दु गत कहीं,
छिप गये नखत कहीं,
पवन मन्द बह चला,
मधु मरन्द बह चला,
अधखिले खिले कुसुम,
डाल पर हिले कुसुम ।

विविध रंग ढंग के,
विविध रूप रंग के,
बोलते विहंग थे,
बाल विहग संग थे ।

जान गमन रात का,
जान समय प्रात का,
वीर सब उछल पड़े,
महल से निकल पड़े,
दिवस के विकास में,
किरण के प्रकाश में,
गोलियां दमक उठीं,
बर्छियां चमक उठीं ।

सात सौ सवारियां,
तीव्रतर कटारियां,
तेग तबर आरियां,
चल पड़ी दुधारियां ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


मखमली उहार थे,
स्यूत रतन तार थे,
सूरमे कहार थे,
जो ज्वलित अँगार थे,
दुर्ग की तरी प्रबल,
राज केसरी प्रबल,
जयति बोलने लगे,
शृंग डोलने लगे।

जयति जय निनाद से,
जयति-जयति नाद से,
गूँजने नगर लगा,
एक-एक घर लगा।

जय उमे, गणेश जय,
रुद्र-हर-महेश जय,
जय निशुम्भमर्दनी,
जय महिषविमर्दनी,
जय असुर-विदारिणी,
जय त्रिशूल-धारिणी,
देवि, पथ प्रशस्त कर,
शत्रु, व्यूह त्रस्त कर।

माँ, न तनिक देर कर,
आज तू अहेर कर,
गरज - गरज हेर कर,
अहित मार घेर कर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



जयति-जयति बोल कर,
बाहु-शक्ति तोलकर,
हाँ, कहार चल पड़े,
वीर उर उछल पड़े,
वीर बहू बन चले,
कुन्त कर वहन चले,
राजपूत जन चले,
काल-दूत तन चले।

मत्त सिंह दल चला,
हाँ, अकूत बल चला,
साथ चलीं डोलियां,
गूँज उठीं बोलियां।

दुर्ग का महारथी,
समर-सूर सारथी,
बोल उठा ताव से,
राजसी प्रभाव से—

तुम अजर, बढ़े चलो,
तुम अमर, बढ़े चलो,
तुम निडर, बढ़े चलो,
आन पर चढ़े चलो।

—श्यामनारायण पाण्डेय

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. कवि ने प्रातःकाल के वर्णन में किन-किन दृश्यों का चित्रण किया है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
२. राजपूत वीर महल से किस उद्देश्य से निकले ?

३. कवि ने वीरों के प्रयाण का वर्णन किस प्रकार किया है ?

४. राजपूत 'बहू' बन कर क्यों चले ?

५. वीरों का प्रयाण-गीत क्या था ?

**अभ्यास**

१. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो—

(क) तुहिन-बिन्दु गत कहीं, छिप गये नखत कहीं ।

(ख) देवि, पथ प्रशस्त कर, शत्रु-व्यूह त्रस्त कर ।

(ग) राजपूत जन चले, काल-दूत बन चले ।

२. निशुम्भ और महिषासुर की अन्तःकथाओं का वर्णन करो ।

**आदेश**—इस कविता को कंठस्थ करो और भावपूर्ण ढंग से सुनाओ ।

## टिप्पणी

**तुहिन**=ओस, पाला । **नखत**=नक्षत्र । **उहार**=पर्दा । **स्यूत**=पिरोये हुए । **निनाद**=ध्वनि । **मर्दनी**=नाश करने वाली । **शत्रु-व्यूह**=शत्रुओं की व्यवस्थित सेना । **अहेर**=शिकार, आखेट । **कुन्त**=भाला । **अकूत**=असीम ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २२

# क्रिकेट

[क्रिकेट विश्व का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण खेल है। प्रस्तुत लेख में क्रिकेट के इतिहास, इसके खेलने की कला, दर्शकों के अनुराग और टेस्ट मैचों के आकर्षक दृश्यों का वर्णन किया गया है।]

क्रिकेट का खेल बड़ा मनोरंजक है। खिलाड़ी तो इसमें उत्साहपूर्वक भाग लेते ही हैं, दर्शकों का भी इसमें कम उत्साह नहीं रहता। 'टेस्ट मैचों' का आनन्द लेने के लिए तो लोग देश के कोने-कोने से एकत्र होते हैं। जो नहीं पहुँच पाते, वे रेडियो पर ही खेल का आँखों-देखा विवरण सुनकर आनन्दित हो लेते हैं। चाय और पान की दुकानों पर मैच की कमेंटरी सुनने के लिए भीड़ लगी रहती है।

क्रिकेट खेलना एक कला है। वर्षों के प्रशिक्षण और अभ्यास के बाद खिलाड़ी कहीं इस कला में दक्ष हो पाते हैं। तभी तो कुशल खिलाड़ियों का खेल इतना आकर्षक होता है कि उसे देखने अथवा उसका वर्णन सुनने के लिए लोग लालायित रहते हैं। अच्छे बल्लेबाज को यह अभ्यास करना पड़ता है कि वह खतरनाक गेंदों को इस प्रकार रोके कि 'आउट' न हो जाय और अनुकूल गेंदों में ऐसा 'हिट' लगाये कि गेंद बाउंडरी के बाहर चली जाय और चौके अथवा छक्के बन जायँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बल्लेबाजी के समान 'बॉलिंग' अथवा गेंद फेंकना भी एक कला है। गेंद फेंकने वाले को सीखना पड़ता है कि वह किस प्रकार तेज, मध्यम अथवा धीमी गति से गेंद फेंके, जिससे बल्लेबाज चक्कर में पड़ जाय और आउट हो जाय।

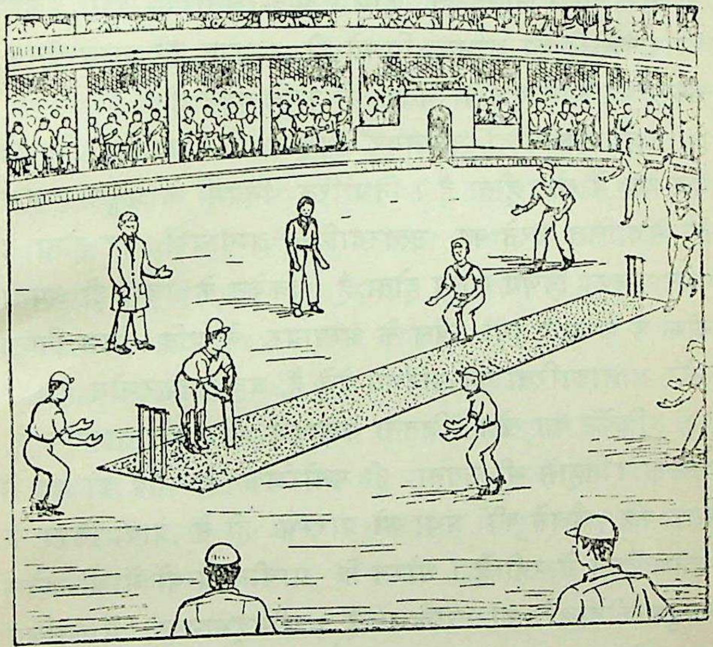

क्रिकेट

क्रिकेट के मैच में टीम के कप्तान को महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ती है। प्रतिपक्षी टीम पर विजय प्राप्त करने के लिए उसे एक कुशल सेनापति की भाँति व्यूह-रचना करनी पड़ती है। उसकी टीम का कोई खिलाड़ी अच्छा बल्लेबाज होता है, कोई अच्छा 'बोलर' अथवा गेंद फेंकने वाला, कोई

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अच्छी 'फीलिंडग' करने वाला और कोई अच्छा 'कैच' लेने वाला। वह अपने सहयोगियों को उनकी योग्यताओं के अनुसार खेल के मैदान में ऐसे स्थानों पर नियुक्त करता है, जिससे प्रतिपक्षी बल्लेबाज सुगमतापूर्वक 'रन' न बना सकें और शीघ्र से शीघ्र आउट हो जायँ। व्यूह-रचना में किसी प्रकार की कमजोरी का आभास मिलते ही कप्तान को उसमें समय-समय पर आवश्यक परिवर्तन भी करने पड़ते हैं।

हर मैच में दो 'अम्पायर' नियुक्त किये जाते हैं, जिनकी देख-रेख में खेल होता है। निर्धारित नियमों के अनुसार खेल को संचालित करने का उत्तरदायित्व अम्पायरों पर होता है और उनका निर्णय मान्य होता है। क्रिकेट के खिलाड़ी अपनी टीम के कप्तान तथा खेल के अम्पायर के प्रति जिस निष्ठा और आज्ञाकारिता का परिचय देते हैं, वह अनुकरणीय है।

क्रिकेट का खेल जितना कलापूर्ण और चित्ताकर्षक है, उसका इतिहास भी उतना ही मनोरंजक है। गेंद को डंडे से मार कर खेलने की प्रथा तो प्रारम्भ ही से प्रायः विश्व के अनेक देशों में रही है। भारत के प्राचीन ग्रन्थों में भी अनेक कन्दुक-क्रीड़ाओं का उल्लेख है। श्रीमद्भागवत में कालिय नाग की एक कथा है। इस कथा में यह वर्णन है कि कृष्ण के एक सखा ने खेलते-खेलते गेंद को डंडे से मार कर यमुना में डाल दिया था और उसे निकाल कर लाने के लिए कृष्ण और कालिय नाग में युद्ध हुआ था।

क्रिकेट के वर्तमान रूप, उसके विकेट, गेंद और बल्ले के आकार, परिमाण तथा अन्य नियमों का विकास इंग्लैंड में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
हुआ। प्रारम्भ में यह खेल इंग्लैंड के गाँवों में खेला जाता था। वृक्षों के तनों से विकेट का काम लिया जाता था। बाद में भेड़ों के बाड़ों के फाटक इस कार्य के लिए अधिक उपयुक्त समझे गये। इन फाटकों के सीधे और आड़े डंडों ने ही कालान्तर में वर्तमान विकेट और गुल्ली का रूप ले लिया। इसी प्रकार हाकी और गदा के मिले-जुले रूप का प्रारम्भिक बल्ला अठारहवीं शताब्दी में वर्तमान बल्ले के आकार का हुआ। सन् १७४४ में क्रिकेट के पहले नियम बनाये गये, जिनके अनुसार बल्ले की चौड़ाई ४$\frac{१}{४}$″ निर्धारित की गयी और गेंद का वजन ५$\frac{१}{२}$ औंस। वर्तमान समय में भी बल्ले की चौड़ाई और गेंद का वजन इतना ही होता है। आजकल के विकेट की लम्बाई २४″ और गोलाई ९″ होती है। विकेट का यह स्वरूप सन् १९३१ में निश्चित किया गया।

क्रिकेट के अच्छे मैचों में दो पालियां होती हैं और हार-जीत का निर्णय प्रत्येक टीम की दोनों पालियों की रन-संख्या पर निर्भर होता है। खेल प्रारम्भ होने के पूर्व मैच की अवधि निश्चित कर ली जाती है और यदि उतने समय में दोनों टीमें अपनी दोनों पाली समाप्त नहीं कर पातीं तो पूर्व निश्चय के अनुसार या तो मैच बराबर माना जाता है या पहली पाली में जिस टीम की रन-संख्या अधिक हो, उसे विजयी घोषित कर दिया जाता है।

उच्च स्तर का पहला क्रिकेट मैच सन् १७०० में इंग्लैंड में खेला गया और इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया के बीच पहला टेस्ट मैच सन् १८८० में ओवल के मैदान में। इस टेस्ट मैच

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में इंग्लैंड ने आस्ट्रेलिया को पाँच विकेट से हरा दिया था परन्तु दो वर्ष पश्चात आस्ट्रेलिया के खिलाड़ी फिर इंग्लैंड आये और उस बार उन्होंने ओवल के मैदान में ही इंग्लैंड की टीम को सात रनों से पराजित किया। इस हार से इंग्लैंड के निवासी बहुत क्षुब्ध हुए। मैच समाप्त होने के दूसरे दिन लन्दन के समाचार पत्र 'मार्निंग स्टार' ने यह समाचार इस रूप में प्रकाशित किया :—

अंग्रेजी क्रिकेट की स्नेहपूर्ण स्मृति में,
जिसकी २९ अगस्त, सन् १८८२ को ओवल में मृत्यु हो
गयी—दिवंगत को शान्ति मिले।

**टिप्पणी**—अन्त्येष्टि-क्रिया सम्पन्न हो जाने के पश्चात
भस्मावशेष आस्ट्रेलिया ले जाये जायेंगे।

इस मैच के पश्चात ही 'दी ऐशेज' (भस्मावशेष) वाक्यांश का प्रयोग इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया के टेस्ट मैचों के सन्दर्भ में किया जाने लगा। आजकल सामान्यतः प्रत्येक शृंखला में पाँच-पाँच दिन की अवधि के पाँच टेस्ट मैच खेले जाते हैं, जिस टीम को अधिक मैचों में विजय मिलती है, वह **'रबर'** जीत लेती है। इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया के टेस्ट मैचों की शृंखला में जो **'रबर'** जीतता है, उसे ही काल्पनिक 'ऐशेज' रखने का अधिकार प्राप्त होता है।

भारत में क्रिकेट का श्रीगणेश नियमित रूप से सन् १७९२ में हुआ, जब 'कलकत्ता क्रिकेट क्लब' की स्थापना हुई। तदुपरान्त इस देश में इस खेल का विकास उत्तरोत्तर होता गया। सन् १८८९ में भारतीय पारसियों की टीम ने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इंग्लैंड का भ्रमण किया और इसके तीन वर्ष पश्चात पहली अंग्रेजी टीम भारत आयी। यद्यपि भारतीय क्रिकेट टीम ने सर्वप्रथम सन् १९११ में इंग्लैंड का दौरा किया पर भारत और इंग्लैंड का पहला टेस्ट मैच सन् १९३२ में हुआ। अब भारत और इंग्लैंड तथा अन्य देशों के बीच क्रिकेट के मैच बराबर होने लगे, जिनमें कुछ भारतीय खिलाड़ियों ने अपने उत्कृष्ट कोटि के खेल से अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है। ऐसे खिलाड़ियों में नवानगर के जामसाहब रंजीत सिंह जी (रंजी), दलीप सिंह जी, सी० के० नायडू, पटौदी के नवाब, वजीर अली, अमर सिंह, मुश्ताक अली, लाला अमरनाथ, वीनू मनकद, विजय हजारे और विजय मर्चेंट के नाम उल्लेखनीय हैं। रंजी का खेल तो इतना उत्तम था कि वे क्रिकेट के जादूगर कहे जाते थे। उन्हीं की स्मृति में हमारे देश में 'रंजी ट्राफी प्रतियोगिता' अन्त:प्रदेशीय स्तर पर आज भी चल रही है।

सन् १९५१-५२ में मद्रास में भारत ने इंग्लैंड को प्रथम बार टेस्ट मैच में पराजित किया। परन्तु भारत की सबसे शानदार विजय तो १९५९-६० में हुई, जब उसने कानपुर के ग्रीन पार्क में आस्ट्रेलिया की टीम को एक सौ उन्नीस रन से पराजित किया। इस खेल में जासू पटेल, उम्रीगर और नारी कंट्रेक्टर ने अपने अपूर्व कौशल दिखाये। जासू पटेल ने अपनी नाचती हुई गेंद से दोनों पालियों में आस्ट्रेलिया के एक दर्जन से अधिक खिलाड़ियों को आउट किया तथा पाली उम्रीगर ने भी विश्वविख्यात खिलाड़ी नील हार्वे और ओ' नील को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आउट कर विपक्षी टीम के छक्के छुड़ा दिये। नारी कंट्रेक्टर ने बल्लेबाजी के कौशल का प्रदर्शन दिया और सबसे अधिक रन बनाये।

इस मैच का अभूतपूर्व उत्साह देखते ही बनता था। जैसे ही भारतीय टीम विजयी घोषित की गयी, ग्रीन पार्क का विशाल प्रांगण चालीस हजार क्रिकेट-प्रेमियों की हर्ष-ध्वनि से गूंज उठा। आस्ट्रेलिया के कप्तान बेनू ने आगे बढ़कर बड़े स्नेह से भारतीय कप्तान रामचन्द्र से हाथ मिलाया, उनके कुशल नेतृत्व की प्रशंसा की और उनकी टीम के खिलाड़ियों के उत्कृष्ट खेल के लिए हार्दिक बधाई दी। जिस स्थल पर पाँच दिन से प्रतिद्वन्द्विता का वातावरण दिखायी पड़ता था, वहाँ अब स्नेह और सौहार्द का वातावरण उमड़ आया था। वस्तुतः खिलाड़ी जय-पराजय को समान समझते हैं और अपने प्रतिपक्षी के अच्छे खेल की मुक्तकंठ से सराहना करते हैं। यही है खिलाड़ियों की विशेषता।

क्रिकेट आज का बड़ा लोकप्रिय खेल है। टेस्ट मैचों के समय रेडियो से प्रसारित होने वाली कमेंटरी ने तो इसे गली-गली और घर-घर पहुँचा दिया है।

—डा० रमेश श्रीवास्तव

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. क्रिकेट के मनोरंजक होने का पता कैसे चलता है ?

२. 'क्रिकेट खेलना एक कला है।' इससे लेखक का क्या अभिप्राय है ?

३. अच्छा बल्लेबाज बनने के लिए किन-किन बातों का अभ्यास करना पड़ता है ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४. कप्तान का प्रमुख कार्य क्या है ?

५. 'अम्पायर' का क्या काम है ?

६. क्रिकेट के खेल का आरम्भ किस प्रकार हुआ ?

७. 'ऐशेज' का क्या तात्पर्य है ?

८. इस खेल में रबर का क्या अभिप्राय है ?

९. क्रिकेट के कुछ प्रसिद्ध भारतीय खिलाड़ियों के नाम बताओ।

१०. कानपुर के ग्रीन पार्क में खेले गये क्रिकेट मैच की क्या विशेषताएं थीं ?

**अभ्यास**

१. निम्नलिखित शब्दों एवं मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

भस्मावशेष, छक्के छुड़ाना, उत्कृष्ट, लोकप्रिय।

२. निम्नलिखित की व्याख्या करो—

टेस्ट मैच, कमेंटरी, अम्पायर, विकेट, रन।

**आदेश**—अपने देखे हुए किसी क्रिकेट मैच का वर्णन करो।

## टिप्पणी

**दक्ष**=प्रवीण। **प्रतिपक्षी**=दूसरे दल वाला। **परिमाण**=तोल। **दिवंगत**=स्वर्गगत, मृत। **अन्त्येष्टि**=मृतक कर्म। **श्रीगणेश**=आरम्भ। **प्रांगण**=आँगन, मैदान। **प्रतिद्वन्द्विता**=होड़। **कैच**=पृथ्वी पर गिरने से पहले गेंद को पकड़ लेना। **फील्डिंग**=क्रिकेट के खेल में गेंद को रोकने का कार्य। **अम्पायर**=निर्णायक। **कमेंटरी**=खेल के आँखों-देखे हाल का वर्णन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ २३

# स्वामी विवेकानन्द

[उन्नीसवीं शताब्दी में हमारे देश में जिन महापुरुषों ने जन्म लेकर अपने महान कार्यों से भारत माता का मुख उज्ज्वल किया, उनमें स्वामी विवेकानन्द प्रमुख हैं। इस पाठ में स्वामीजी के कार्यों और उनकी महानता का प्रभावपूर्ण वर्णन है।]

१२ जनवरी सन् १८६३ को कलकत्ता हाई कोर्ट के एक प्रसिद्ध वकील विश्वनाथ दत्त के घर में एक बालक का जन्म हुआ। इस बालक का नाम नरेन्द्रनाथ रखा गया। यही नरेन्द्रनाथ आगे चल कर स्वामी विवेकानन्द के नाम से विख्यात हुए।

नरेन्द्रनाथ बचपन से ही मेधावी थे। उनकी बुद्धि इतनी प्रखर थी कि वे जो एक बार सुन लेते या पढ़ लेते, उन्हें याद हो जाता। एक वृद्ध पड़ोसी से सुनकर ही उन्होंने संस्कृत के 'मुग्धबोध' व्याकरण के सभी सूत्र कंठस्थ कर लिये थे। उनकी माँ नित्य रामायण और महाभारत का पाठ करती थीं। इन ग्रन्थों के अनेक अंश भी नरेन्द्रनाथ को सुनकर ही याद हो गये थे।

सात वर्ष की अवस्था में नरेन्द्रनाथ को स्कूल में भरती किया गया। वे अंग्रेजी पढ़ने को राजी नहीं हुए। बोले, "यह विदेशी भाषा है। इसे मैं क्यों पढ़ूँ ?" परन्तु जब वे अंग्रेजी पढ़ने लगे तो उन्होंने शीघ्र ही विदेशी भाषा पर पूर्ण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


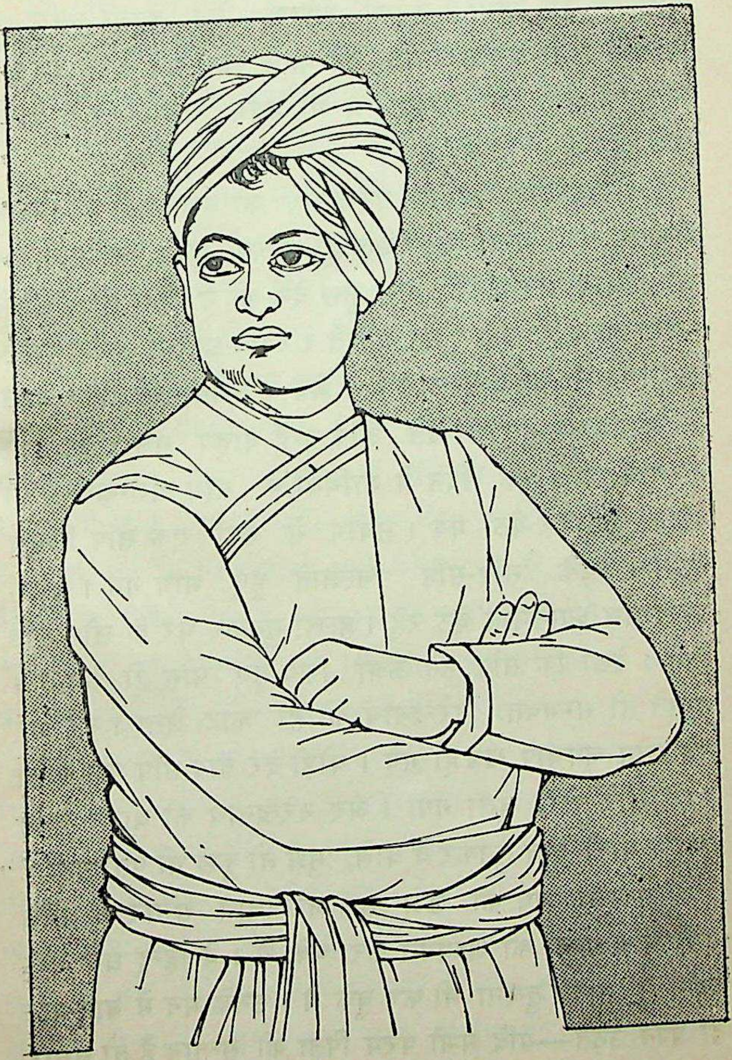

स्वामी विवेकानन्द

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



अधिकार कर लिया। उनकी स्मरण-शक्ति इतनी प्रबल थी कि परीक्षा से केवल चौबीस घंटे पहले ज्यामिति के चारों खंड पढ़कर उन्होंने इस प्रश्नपत्र में भी प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त कर लिये।

दीन-दुखियों के प्रति नरेन्द्रनाथ को बचपन से ही विशेष अनुराग था। गरीब को देखते ही उनका हृदय करुणा से भर जाता और यदि उनके पास कुछ देने को न होता तो वे उसे अपना वस्त्र ही उतार कर दे देते। ध्यान-धारणा और पूजन-वन्दन के भी उनके संस्कार थे। जब वे ध्यान-मग्न होकर बैठते तो अपनी सुध-बुध खो देते और उन्हें बाह्य संसार का ज्ञान ही न रहता। एक दिन वे साथियों के साथ खेल-खल में ही ध्यान लगाकर बैठ गये। संयोग से वहाँ एक साँप निकल आया। लड़के 'साँप-साँप' चिल्लाते हुए भाग गये। परन्तु नरेन्द्रनाथ ध्यानमग्न बैठे रहे। हल्ला सुनकर घर के लोग दौड़ आये। देखा कि साँप फन ऊँचा किये हुए पास ही बैठा है। भगाते तो सम्भवतः नरेन्द्रनाथ को ही काट लेता। डर कर सब लोग चुपचाप खड़े हो गये। थोड़ी देर बाद साँप फन नीचा करके धीरे-धीरे चला गया। अब नरेन्द्रनाथ को बाहर लाया गया। सारी बात सुनकर वे बोले, 'मुझे तो कुछ भी पता नहीं।"

अठारह वर्ष की उम्र तक नरेन्द्रनाथ संसार के अनेक धर्मों और ग्रन्थों का अध्ययन कर चुके थे। वे हिन्दू धर्म और दर्शन से उनकी तुलना भी कर चुके थे। उनके मन में बार-बार दो प्रश्न उठते—यदि सभी परम पिता की सन्तान हैं तो संसार में इतनी विषमता क्यों है ? और क्या किसी ने उस परमपिता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
परमेश्वर के दर्शन किये हैं ? उनके मन की ऐसी स्थिति थी कि एक दिन अचानक एक पड़ोसी के घर श्री रामकृष्णदेव परमहंस से उनकी भेंट हो गयी । श्री रामकृष्णदेव कलकत्ते के पास दक्षिणेश्वर में काली मन्दिर के पुजारी थे । वे संसार की मोहमाया से विरक्त, सिद्ध और हिन्दू सन्त थे, जो सब धर्मों की समानता का उपदेश देते थे । उस दिन नरेन्द्रनाथ ने अपने मधुर कंठ से एक ऐसा गाना गाया, जिसे सुन कर रामकृष्णदेव समाधिस्थ हो गये और उन्होंने नरेन्द्रनाथ को दक्षिणेश्वर आने का निमन्त्रण दिया ।

दक्षिणेश्वर पहुँचकर बातचीत के क्रम में उन्होंने रामकृष्ण देव से भी प्रश्न किया, 'क्या ईश्वर को देखा जा सकता है ?' रामकृष्ण बोले, 'क्यों नहीं ? उन्हें वैसे ही देखा जा सकता है, जैसे मैं तुम्हें देख रहा हूँ । परन्तु वैसा करना कौन चाहता है ? स्त्री-पुत्र के लिए लोग घड़ों आँसू बहाते हैं, रुपये-पैसे के लिए रोज रोते हैं, परन्तु भगवान की प्राप्ति न होने से कौन रोता है ।' रामकृष्णदेव की इस बात से नरेन्द्रनाथ बहुत प्रभावित हुए और दक्षिणेश्वर आने-जाने लगे ।

रामकृष्णदेव नरेन्द्रनाथ को बहुत प्यार करते थे । एक दिन बातचीत करते हुए रामकृष्णदेव ने उनको स्पर्श कर लिया । स्पर्श करते ही नरेन्द्रनाथ सञ्ज्ञाशून्य हो गये । वे मानो किसी और लोक में पहुँच गये । उस समय के अनुभव की कथा नरेन्द्रनाथ के मुँह से ही सुनिये—'उस समय मेरी आँखें खुली हुई थीं । मैंने देखा कि दीवारों के साथ कमरे का सारा सामान तेजी से घूमता हुआ कहीं विलीन हो रहा है । मुझे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


लगा कि सारे ब्रह्मांड के साथ मैं भी एक महाशून्य में लीन हो रहा हूँ। मैं भय से काँप उठा। जब मेरी चेतना लौटी तो मैंने देखा कि ठाकुर रामकृष्णदेव मुसकराते हुए मेरी पीठ पर हाथ फेर रहे हैं।' इस घटना का नरेन्द्रनाथ पर बड़ा असर पड़ा। उन्होंने सोचा कि जिसकी शक्ति के सामने मुझ जैसा दृढ़ इच्छा-शक्ति वाला बलिष्ठ युवक भी बच्चा बन गया, वह व्यक्ति निश्चय ही अलौकिक शक्ति-सम्पन्न है। उनको श्री रामकृष्ण परमहंस पर श्रद्धा हो गयी और वे लगभग पाँच वर्ष तक उनके सम्पर्क में रहे। अपने आध्यात्मिक बल और उदार धार्मिक बुद्धि से ठाकुर ने उन्हें वशीभूत कर लिया। नरेन्द्रनाथ ने उन्हें अपना गुरु मान लिया।

श्री रामकृष्ण की महासमाधि के पश्चात नरेन्द्रनाथ ने संन्यास ले लिया। इसके बाद स्वामी विवेकानन्द की तपस्या और देश-भ्रमण का जीवन प्रारम्भ हुआ। पूरे देश में, हिमालय के बदरी-केदारनाथ से दक्षिण में कन्या कुमारी तक वे घूमते रहे—'करतल भिक्षा, तरुतल वास।' महान और गौरवशाली भारत का रूप देखकर श्रद्धा से उनका मस्तक नत हो गया। परन्तु भारत की सुप्त आत्मा और बन्दिनी भारत माँ की दैन्यपूर्ण मूर्ति देखकर उनका मन करुणा से भर गया। उन्हें भारतीय जनता के जीवन के हर पहलू को अत्यन्त निकट से देखने का मौका मिला। उन्होंने झोंपड़ियां देखीं, आलीशान महल देखे और सम्पन्न व्यक्तियों के हृदय में छोटों के लिए घोर उदासीनता देखी। उनका हृदय रो उठा।

वे जहाँ जाते, लोगों को उपदेश देते। उनकी वाणी में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


अपार शक्ति थी । उनके नेत्रों में सम्मोहन था । जिससे वे मिलते, बातचीत करते, वही मुग्ध हो जाता । उनकी सभाओं में भीड़ होने लगी । राजा-महाराजा भी उनके शिष्य होने लगे । वे सबसे कहते—'मैं पूरा देश घूम कर तुमसे कह रहा हूँ—हम भारतीय पहले हैं, बंगाली, मराठा, गुजराती और मद्रासी बाद में । हम सब मिलकर इस देश के निवासियों की दरिद्रता और अज्ञान को दूर करने की कोशिश करें । मेरे पास सब आओ । राम-कृष्ण की सन्तान, भारत के सब निवासी ! मेरे पास आओ । मैं एक ऐसा धर्म चाहता हूँ, जो जन-जन को अन्न-वस्त्र और शिक्षा देने के साथ उन्हें अपने सभी दुखों ो दूर करने की शक्ति दे ।'

इस प्रकार भ्रमण करते हुए और उपदेश देते हुए जब स्वामीजी गुजरात पहुँचे तो उन्हें सर्वप्रथम अमेरिका के शिकागो नगर में होने वाले विश्व-धर्म-सम्मेलन के आयोजन का समाचार मिला । इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए वे ३१ मई, सन् १८९३ ई० को जहाज से विदेश के लिए चल पड़े । जहाज के डेक से उन्होंने भारत भूमि की ओर देखा और भाव-विभोर हो उठे—'कैसी ज्ञानदायिनी तेजस्वरूपा है यह मेरी मातृभूमि ! कैसा सुन्दर सलोना है इसका महिमामय हिमालय ! पर हाय रे भारतभूमि ! तू पददलित, तिरस्कृत और गुलाम है ।' अपने मन की वेदना व्यवत करते हुए उन्होंने जहाज से मद्रास के अपने युवक शिष्यों को लिखा—'भारत माता हजारों युवकों की बलि चाहती है—याद रखो, मनुष्य चाहिए पशु नहीं ।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

११ दिसम्बर, सन् १८९३ ई० को अमेरिका के शिकागो नगर में विश्व का पहला सर्व-धर्म-सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। इस सम्मेलन में संसार के सभी धर्मों के प्रतिनिधि आये थे। सभा-भवन अमेरिका के छह-सात हजार सुशिक्षित स्त्री-पुरुषों से खचाखच भरा था। सभा का कार्य आरम्भ हुआ। एक-एक प्रतिनिधि सभा के सामने आता और अपने धर्म का परिचय देते हुए संक्षिप्त भाषण देता। सभी अपना भाषण तैयार कर लाये थे किन्तु स्वामीजी कुछ भी लिखकर नहीं लाये थे। जब उनकी बारी आयी तो माँ सरस्वती को प्रणाम कर वे आगे बढ़े। उनके गेरुए वस्त्र और आध्यात्मिक तेज से जगमगाते हुए मुखमंडल ने, लोगों का ध्यान उनकी ओर बरबस आकृष्ट कर लिया। अन्य वक्ताओं की भाँति प्रचलित प्रथा के अनुसार श्रोताओं को सम्बोधित न कर उन्होंने आरम्भ किया—'मेरे अमेरिकावासी बहिनो और भाइयो!' उनका इतना कहना ही था कि सभास्थल करतल ध्वनि से गूँज उठा, श्रोता आत्म-विभोर हो गये। तालियां बजती ही रहीं, मानो किसी ने सम्मोहन कर दिया हो।

जब सभा शान्त हुई तो अपने धर्म का परिचय देते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा—'जो धर्म अनादि काल से सब मतों को समान रूप से ग्रहण करने की शिक्षा देता आया है, मैं उसी धर्म का प्रतिनिधि हूँ। जो धर्म दूसरे धर्मावलम्बियों को केवल समान दृष्टि से ही नहीं देखता वरन उनके मतों को सत्य भी मानता है, मैं उसी धर्म का मानने वाला हूँ। जो जाति युग-युग से सभी धर्मों तथा जातियों के भयभीत और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अत्याचार-पीड़ित मनुष्यों को आदर के साथ आश्रय देती रही है, मैं उसी जाति के अन्तर्गत होने के कारण अपने को गौरवान्वित समझता हो। दो हजार वर्ष पहले रोम के अत्याचार से भागे हुए यूनानियों ने जिस देश में शरण ली थी और जहाँ आज भी वे निर्विघ्न रह रहे हैं, मैं उस देश का रहने वाला होने के कारण अपने को गौरवान्वित समझता हूँ। संसार के सभी स्थानों से मिट कर भी पारसी जाति जिस देश में आज भी है, मैं उसी देश का निवासी होने के कारण अपने को गौरवान्वित मानता हूँ।'

अन्त में उन्होंने कहा, 'सभी धर्मों का गन्तव्य स्थान एक है। जिस प्रकार विभिन्न मार्गों से बहती हुई नदियां समुद्र में ही जाकर गिरती हैं, उसी प्रकार सब मत-मतान्तर परमात्मा की ओर ही ले जाते हैं। मानव धर्म एक है, मानव जाति एक है।'

स्वामीजी की वाणी में भारतीय ऋषियों की वाणी झंकृत हो रही थी। लोग मन्त्रमुग्ध होकर उनकी बातें सुन रहे थे।

सम्मेलन के अन्तिम दिन उन्होंने कहा—'यदि कोई यह स्वप्न देखता है कि एक दिन सभी धर्म विलुप्त हो जायेंगे, केवल उन्हीं का धर्म रहेगा तो मुझे उन पर दया आती है। वे लोग शीघ्र देखेंगे कि उनके विरोध करने पर भी सभी धर्मों के झंडों पर लिखा रहेगा—संग्राम और संघर्ष नहीं—मिलन और शान्ति, विनाश नहीं सृजन।'

इस सम्मेलन के पश्चात स्वामी विवेकानन्द प्रसिद्ध और जनप्रिय हो गये। अमेरिका में उनका स्थान-स्थान पर स्वागत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुआ। वे दो-तीन वर्ष अमेरिका में ही रहे और उन्होंने 'न्यूयार्क वेदान्त सोसाइटी' की स्थापना की।

स्वामीजी इतने दिन विदेशों में रहे फिर भी वे भारत-भूमि को एक क्षण के लिए भी विस्मृत नहीं कर सके। अमेरिका से उन्होंने अपने एक पत्र में लिखा—'हमें आगामी पचास वर्षों तक सभी देवताओं को अपने मन से निकाल देना होगा। हमारा एक मात्र जागृत देवता होगा, हमारा देश। इस विराट की पूजा ही हमारी पूजा होगी। सबसे पहले हम जिस देवता की पूजा करेंगे वह देवता होगा, भारत का देशवासी।'

लगभग चार वर्ष तक विदेश में रहने के बाद वे भारत लौटे तो जैसे ही उन्हें भारत का समुद्र-तट दिखायी दिया, उनकी आँखों से आनन्दाश्रु निकल पड़े। वे हाथ जोड़कर एक-टक समुद्र-तट की ओर देखते रहे और जहाज के किनारे पर लगते ही दौड़ कर भारत-भूमि को साष्टांग प्रणाम कर तट की रेत में इस प्रकार लोटने लगे मानो वर्षों के बाद कोई बच्चा माँ की गोद में पहुँचा हो। भारत लौटने पर स्वामी विवेकानन्द ने अपने देशवासियों की सेवा के लिए, रामकृष्ण के सन्देश के प्रचार के लिए और जगत के कल्याण के लिए मई, सन् १८९७ ई० में 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की। इसके साथ मानो उनके जीवन का मिशन पूरा हुआ।

स्वामीजी माँ भारती के तेजस्वी पुत्र थे। वे आधुनिक भारत के निर्माता थे। उनका व्यक्तित्व बहुमुखी था। वे देश-भक्त सन्त थे और अन्तर्राष्ट्रीय धर्म-गुरु।

—वंशीधर श्रीवास्तव

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. स्वामी विवेकानन्द के प्रारम्भिक जीवन के विषय में तुम क्या जानते हो ?
२. किस बात से पता लगता है कि बचपन से ही वे धार्मिक थे ?
३. रामकृष्ण परमहंस के प्रति उनके मन में श्रद्धा कैसे उत्पन्न हुई ?
४. भारत माता के प्रति उनके मन में कैसे भाव थे ?
५. सर्वधर्म-सम्मेलन में स्वामीजी ने श्रोताओं को किस प्रकार प्रभावित किया ?
६. स्वामीजी के जीवन से हमें क्या मुख्य शिक्षा मिलती है ?

**अभ्यास**

१. निम्नांकित शब्दों की सहायता से स्वामी विवेकानन्द के महत्व पर प्रकाश डालो—
मेधावी, स्मरण-शक्ति, दार्शनिक, वशीभूत, संज्ञाशून्य, सुप्त-आत्मा, भाव-विभोर, जनप्रिय, बहुमुखी, स्थापना ।

२. 'प्र' उपसर्ग से अर्थ में प्रकृष्टता आती है अर्थात् मूल शब्द का जो अर्थ होता है, उसमें विशेषता आ जा जाती है जैसे, 'खर—तीक्ष्ण', 'प्रखर—बहुत तीक्ष्ण ।' इस प्रकार से 'प्र' उपसर्ग लगे हुए पांच और शब्द बताओ तथा उनक अर्थ लिखो ।

३. निम्नलिखित का अर्थ स्पष्ट करो—
( अ ) ध्यान-धारणा और पूजा-वन्दन के भी उनके संस्कार थे ।
(आ ) अलौकिक शक्ति-सम्पन्न ।
( इ ) सभी धर्मों का गन्तव्य स्थान एक है ।
( ई ) झंडों पर लिखा…सृजन ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



**आदेश**—अपने पुस्तकालय से स्वामी विवेकानन्द के व्याख्यान और उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस की जीवनी लेकर पढ़ो और उनकी शिक्षाओं का सारांश अपनी भाषा में लिखो।

## टिप्पणी

**संज्ञाशून्य**=चेतनाहीन, बेहोश। **दैन्यपूर्ण**=दीनता से भरा हुआ। **भाव-विभोर**=भावों में डूबा हुआ। **तिरस्कृत**=अपमानित। **गौरवान्वित**=गौरवयुक्त। **गन्तव्य**=लक्ष्य। **बहुमुखी व्यक्तित्व**=ऐसा व्यक्ति, जिसकी प्रतिभा अनेक दिशाओं में हो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २४

# सूर के पद

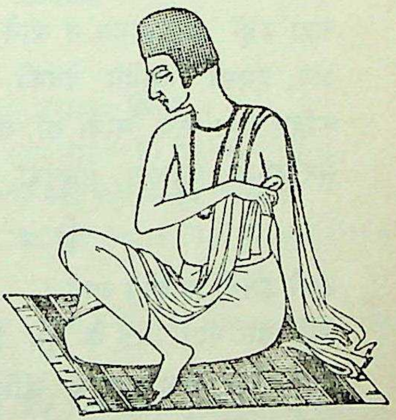

[ ये पद 'सूरसागर' से लिये गये हैं। इनमें कृष्ण के मथुरा जाने और उनके वियोग में ब्रजवासियों के दुखी होने का वर्णन है। कृष्ण का उद्धव के द्वारा माता यशोदा को सन्देश भेजना तथा कृष्ण के वियोग में गायों की दीनदशा का वर्णन बड़ा ही सजीव और मार्मिक है। ]

[ १ ]

मधुबन तुम कत रहत हरे ?
बिरह वियोग स्याम सुन्दर के ठाढ़े क्यों न जरे ?
मोहन बेनु बजावत द्रुम तर, सारंग टेकि खरे।
मोहे थावर अरु जड़ जंगम, मुनि जन ध्यान टरे।
वह चितवनि तू मन न धरत है, फिरि-फिरि पुहुप धरे।
सूरदास प्रभु विरह दवानल, नख सिख लौं न जरे॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



[ २ ]

कह्यौ कान्ह सुनि जसुदा मैया ।
आवहिंगे दिन चार पाँच में, हम हलधर दोउ भैया ।
मुरली बैन बिषान हमारौ, कहूँ अबेर सबेरौ ।
मति लै जाइ चुराइ राधिका, कछुक खिलौना मेरौ ।
जा दिन तैं हम तुम सौं बिछुरे, काहु न कह्यौ कन्हैया ।
प्रात न कियौ कलेऊ कबहूँ, साँझ न पय पियौ घैया ।
कहा कहौं कछु कहत न आवे, जननी जो दुख पायौ ।
अब हमसौं बसुदेव देवकी, कहत आपनौ जायौ ।
कहिए कहा नन्द बाबा सौं, बहुत निठुर मन कीन्हौं ।
सूर हमहिं पहुँचाइ मधुपुरी, बहुरि न सोधौ लीन्हौं ।

[ ३ ]

ऊधौ इतनी कहियौ जाइ ।
अति कृस गात भईं ये तुम बिन, परम दुखारी गाइ ।
जल समूह वरषति दोउ अँखियां, हूँकति लीन्हें नाउँ ।
जहाँ-जहाँ गो दोहन कीन्हौं, सूँघति सोई ठाउँ ।
परति पछार खाइ छिन ही छिन, अति आतुर ह्वै दीन ।
मानहु सूर काढ़ि डारी हैं, वारि मध्य तैं मीन ।।

[ ४ ]

कहाँ लौं कहिऐ ब्रज की बात ।
सुनहु स्याम तुम बिनु उन लोगनि, जैसे दिवस विहात ।
गोपी ग्वाल गाइ गोसुत सब, मलिन बदन कृस गात ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परम दीन जनु सिसिर-हेम-हत, अंबुजगन बिनु पात ।
जो कोउ आवत देखि दूरि तैं, उठि पूछत कुसलात ।
चलन न देत प्रेम आतुर उर, कर चरननि लपटात ।
पिक चातक बन बसन न पावत, बायस बलि नहिं खात ।
सूर स्याम सन्देसनि कै डर, पथिक न उहि मग जात ।।

—सूरदास

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. गोपियां मधुवन को क्या उलाहना देती हैं ?
२. दूसरे पद में कृष्ण ने माता यशोदा को क्या सन्देश भेजा ?
३. श्रीकृष्ण को मथुरा नगरी क्यों नहीं अच्छी लगती ?
४. तीसरे पद में कृष्ण के वियोग में गायों का किस प्रकार का चित्रण किया गया है ?
५. उद्धव ने मथुरा लौट कर कृष्ण से ब्रज की दशा का क्या वर्णन किया है ?
६. अन्तिम पद में कृष्ण के वियोग का प्रभाव किन-किन वस्तुओं पर दिखाया गया है ?

**अभ्यास**

१. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो—

(क) वह चितवनि तू मन न धरत है, फिरि-फिरि पुहुप धरे ।
(ख) जल समूह बरसत दोउ अँखियां, हूँकति लीन्हें नाउँ ।
(ग) परम दीन जनु सिसिर-हेम-हत, अंबुजगन बिनु पात ।
(घ) पिक चातक बन बसन न पावत, बायस बलि नहिं खात ।
सूर श्याम सन्देसनि कै डर, पथिक न उहि मग जात ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



२. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करो—

(क) मधुवन की हरियाली गोपियों को इसलिए अच्छी नहीं लगी कि.........

(ख) मथुरा चले जाने पर कृष्ण के मन में यह आशंका थी कि कहीं उनकी अनुपस्थित में.........

(ग) कृष्ण के वियोग में गायें दुखी थीं मानो.........

(घ) ब्रज का रास्ता पथिक इसलिए छोड़ गये थे कि........

३. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखो—

थावर, पुहुप, सिख, साँझ, निठुर, कृस, सिसिर।

**आदेश**—पहले और तीसरे पद को कंठस्थ करो।

## टिप्पणी

**ठाढ़े**=खड़े। **बेनु**=वंशी। **जड़ जंगम**=अचेतन और चेतन। **दवानल**=वन की आग। **विषान**=(विषाण) सींग से बना बाजा विशेष। **धैया**=दूध की धारा। **जायो**=पैदा किया। **सोधौ**=खबर। **कृसगात**=दुर्बल शरीर। **बिहात**=व्यतीत होते हैं। **सिसिर-हेम-हत**=शिशिर के पाले से नष्ट। **बायस**=कौआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २५

# अंकोरवाट

[दक्षिण-पूर्व एशिया के थाईलैंड, मलाया, इंडोनेशिया आदि वर्तमान देशों पर प्राचीन भारतीय संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ा था। ये देश एक प्रकार से भारत के ही अंग थे। यहाँ की भाषा, कला तथा रीति-रिवाजों में आज भी भारतीय संस्कृति के चिह्न दिखायी देते हैं। प्रस्तुत पाठ में कम्बोडिया के अंकोरवाट के मन्दिर की कला का आँखों देखा वर्णन है।]

१८ मई को प्रातःकाल मैं वायुयान द्वारा बैंकाक से कम्बोडिया की ओर रवाना हुआ। वायुयान में बत्तीस सीटें थीं पर यात्री थे कुल सत्ताइस। ज्यादातर मुसाफिर कम्बोडिया के महान कला-केन्द्र अंकोरवाट को देखने जा रहे थे। मेरे साथ मेरे एक भारतीय मित्र थे।

बैंकाक से निकलते ही पहले नदियों और नहरों का जाल दिखायी दिया, फिर वन-पर्वत आये, तदनन्तर रुई के फायों की भाँति बादल छा गये। पता भी नहीं चला कि कब थाईलैंड की सीमा समाप्त हो गयी और कम्बोडिया की भूमि आरम्भ हो गयी। उड़ान के अन्तिम चरण में मौसम साफ हो जाने से मैदान में नदियों और नहरों का फैलाव बड़ा आकर्षक लगा। कोई डेढ़ घंटे की उड़ान के बाद सीयमरीयप के छोटे से हवाई अड्डे पर उतरे। अंकोरवाट के लिए हवाई मार्ग से यहीं आना पड़ता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


जिस प्रकार हमारे देश में तीर्थ प्राय: रमणीक स्थानों पर पाये जाते हैं, उसी प्रकार अंकोरवाट भी बड़े ही सुन्दर दृश्यों के बीच अवस्थित है। सीयमरीयप से वहाँ तक का लगभग चार मील का रास्ता घने जंगलों में होकर जाता है। ऐसा जान पड़ता है मानो हम किसी वनवासी तपस्वी के आश्रम की यात्रा करने जा रहे हों।

कम्बोडिया और भारत के सम्बन्ध बहुत पुराने समय से रहे हैं। गुप्तकाल के कुछ पहले से कम्बोज देश पर भारत का प्रभाव पड़ने लगा था और गुप्तकाल में तो वहाँ भारतीय संस्कृति और सभ्यता का बोलबाला हो गया। उस काल में कला को असामान्य प्रोत्साहन मिला और ऐसे मन्दिरों का निर्माण हुआ, जो स्थापत्य की दृष्टि से एशिया के अद्वितीय मन्दिर माने जाते हैं। खमेर राज्य के यशस्वी राजाओं में सूर्यवर्मा द्वितीय ने ११९५ ई० के आस-पास यशोधरपुर नामक राजधानी में एक ब्राह्मण मन्दिर का निर्माण कराया। वही आगे चल कर सारे संसार में अंकोरवाट के नाम से विख्यात हुआ। 'अंकोर' कहते हैं नगर को, 'वाट' का मतलब होता है मन्दिर–'अंकोरवाट' माने नगर का मन्दिर।

हम पक्की साफ-सुथरी सड़क पर आगे बढ़ते गये। मोटर-साइकिल-रिक्शावाला कम्बोडिया का एक नौजवान था, जो फ्रेंच तो अच्छी तरह से बोल लेता था, लेकिन अंग्रेजी का उसका ज्ञान दो-चार शब्दों तक ही सीमित था। जब हम उससे कोई बात पूछते तो वह उसे समझ नहीं पाता था और हमारी ओर देख कर मुसकरा पड़ता था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


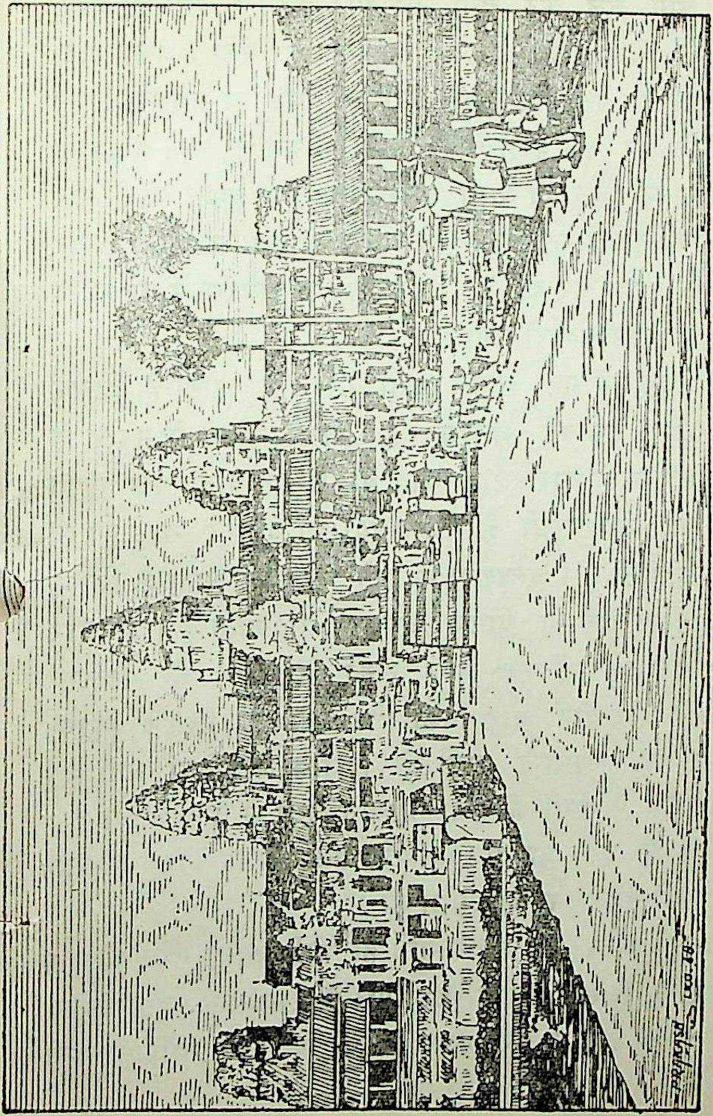

अंकोरवाट का मन्दिर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आगे चल कर चुंगी को पार करने के बाद जो दृश्य दिखायी दिया, उससे हृदय प्रफुल्लित हो उठा। अंकोरवाट का चित्र हम पहले देख चुके थे। इसलिए यह समझते देर न लगी कि हम उस कला-केन्द्र पर पहुँच गये हैं, जिसे देखने के लिए इतनी दूर की यात्रा करके आये थे। हमारे चारों ओर हरियाली ही हरियाली थी और ऊपर बादलों ने अपनी चादर तानकर छाया कर दी थी। उस सारे वातावरण में वह स्थान बहुत ही रोमांचकारी लगा।

सड़क से एक चौड़ा रास्ता मन्दिर को जाता है, जिसके दोनों ओर बड़े-बड़े जलाशय हैं। किसी जमाने में सुरक्षा के लिए मन्दिर के चारों ओर खाई थी, जिसमें पानी भरा रहता था। वह अब सूखी है। जलाशयों को देखकर खाई का ही आभास होता है। जलाशयों से आगे एक द्वार आता है, जिसमें घुसते ही मन्दिर का प्रांगण आरम्भ हो जाता है। इस द्वार से मन्दिर तक कई गज लम्बे रास्ते में पत्थर की पटरियां बिछी हैं और दोनों ओर पक्की ओट लगी है, जिसमें स्थान-स्थान पर फणधारी नागों की विशाल आकृतियां बनी हैं। हमारे देश में नागों की पूजा प्राचीन काल से होती आयी है। सम्भव है इसी भारतीय परम्परा के प्रभाव के कारण ही वहाँ नागों को इतना महत्त्व मिला हो।

प्रवेशद्वार से अन्दर जाते ही कोई आधा मील की एक गैलरी है, जिसमें विष्णु और यक्ष से सम्बन्धित बहुत से चित्र अंकित हैं। द्वार पर ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मन्दिर के प्रांगण में वायीं ओर को बौद्ध भिक्षुओं के निवास-स्थान हैं, जिनका निर्माण हाल में ही हुआ है। सामने मन्दिर के शिखर दिखायी देते हैं। शिखरों को देखकर पहली छाप मन पर यह पड़ती है कि हम दक्षिण भारत के किसी मन्दिर के सामने हैं। शिखरों पर कैसी खुदाई हो रही है, यह दूर से साफ दिखायी नहीं देता, लेकिन उनकी बनावट से मन खिंचकर सहज ही दक्षिण भारत के मन्दिरों की कल्पना को साकार कर देता है।

इस विशाल प्रांगण को पार करने पर कुछ सीढ़ियां आती हैं, जिनके दोनों ओर उछाल-मुद्रा में सिंहों की दो प्रतिमाएं यात्रियों का स्वागत करती हैं। सीढ़ियों से ऊपर पहुँचने पर पुनः सिंहों की दो प्रतिमाएं इधर-उधर मिलती हैं। दायीं ओर को तीन ताड़ वृक्ष प्रहरी की भाँति खड़े दिखायी देते हैं। यहाँ से मन्दिर की इमारत शुरू हो जाती है। दोनों ओर समानान्तर पंक्तियों में अनेक कक्ष बने हैं, जिनकी दीवारों पर बड़े ही सूक्ष्म चित्र उत्कीर्ण हैं। जगह-जगह पर अप्सराओं की मूर्तियाँ हैं। मूर्तियां इतनी सजीव हैं, जैसे अभी बोल पड़ेंगी। इन मूर्तियों के नीचे अलंकरणों का कटाव इतना बारीक और सुडौल है कि दर्शक आश्चर्य-चकित होकर देखते रह जाते हैं। कक्षों की दीवारों के स्तम्भों की बनावट तो अद्भुत है। एक ही पत्थर को स्तम्भ के रूप में लम्बा काटकर उसे कलापूर्ण बनाया गया है। ये चित्र भारतीय प्रसंगों पर आधारित हैं।

पहले परकोटे के बाद पुनः एक छोटा-सा प्रांगण आता है, फिर दूसरा परकोटा। उसके कक्षों की दीवारों और खम्भों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


पर उसी प्रकार की सूक्ष्म कारीगरी की गयी है । फिर छोटे-से प्रांगण को लाँघकर हम मुख्य परकोटे पर पहुँचते हैं । उसके कक्षों में पहले दो परकोटों के कक्षों की भाँति भित्ति-चित्र मिलते हैं । इस परकोटे के अन्दर पाँच शिखर हैं । एक मध्य में और चार चारों कोनों पर । बीच का शिखर शेष चार से कुछ बड़ा है । यहाँ आकर पता चलता है कि दूर से जो कँगूरे जैसे दिखायी देते थे, वे वास्तव में कँगूरे नहीं हैं, बल्कि मूर्तियां हैं, जो बड़े ही कलात्मक ढंग से ऊपर सजायी गयी हैं । अचरज होता है कि लगभग आठ सौ वर्ष से ये पाषाण-खंड वहाँ कैसे टिके हैं । इस लम्बी अवधि में न जाने कितने तूफान आये होंगे, आँधियां आयी होंगी, वर्षा हुई होगी, लेकिन प्रतिमाएं अपने स्थान पर अचल हैं ।

मन्दिर धरती से दो सौ फुट की ऊँचाई पर है । शिखरों पर चढ़ने के लिए सीढ़ियां हैं । उन पर होकर हम ऊपर गये । उनकी दीवारों पर भी बड़े ही मनोहारी चित्र और सजीव मूर्तियां उत्कीर्ण हैं । कक्ष में भगवान बुद्ध की बहुत-सी मूर्तियों का संग्रह था । कुछ प्रतिमाओं में भगवान बुद्ध, स्वामी महावीर की भाँति पद्मासन मुद्रा में हाथ पर हाथ रखे हैं । मन्दिर के शिखर नौ भागों में हैं । उन्हें एक दूसरे से तथा मुख्य देवालय से मिलाने के लिए गैलरियां हैं ।

घूमते हुए जब हम बाहर के एक कक्ष में आये तो वहाँ अष्टबाहु प्रतिमा दिखायी दी । बड़ी विशाल थी वह । इस प्रतिमा को भगवान बुद्ध की प्रतिमा माना जाता है । दीवारों पर खुदे हुए चित्रों में कई चित्र तो भूले नहीं जा सकते—शर-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


शय्या पर पड़े भीष्म का युधिष्ठिर को उपदेश देना, सूर्य और चन्द्र का राहु के विरुद्ध अमृत चुराने का सन्देश लेकर आना, शेषनाग की रस्सी बनाकर देवताओं तथा असुरों का समुद्र-मन्थन करना और शिव का कामदेव को भस्म करना। ऐसे ही अनेक चित्र बार-बार आँखों के सामने आते हैं। गैलरियों में कृष्ण-लीला तथा विष्णु से सम्बन्धित बहुत-सी कथाएँ मिलती हैं।

अंकोरवाट वास्तव में स्थापत्य तथा शिल्पकला का अनुपम केन्द्र है। उसकी दीवारों पर उत्कीर्ण चित्र, मूर्तियों, मन्दिर की आकृति, सबसे ऐसा जान पड़ता है मानो उसके निर्माता और कलाविद भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक रहे हों। अंकोरवाट का मन्दिर ढाई मील के घेरे में है। उसकी विशालता एवं भव्यता को देखकर जहाँ हृदय गद्‌गद होता है, वहाँ उसकी कला कारीगरी को देखकर मन विस्मित हुए बिना नहीं रहता।

—यशपाल जैन

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. अंकोरवाट का क्या अर्थ है?
२. अंकोरवाट के मन्दिर को किसने बनवाया और कब?
३. अंकोरवाट तक कैसे पहुँचा जा सकता है?
४. मन्दिर की निर्माण-योजना का वर्णन करो।
५. उसके भीतर की मूर्तियों की क्या-क्या विशेषताएं हैं?
६. अंकोरवाट के मन्दिर को देखकर लेखक के मन पर क्या प्रभाव पड़ा और क्यों?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



**अभ्यास**

१. 'तदनन्तर' के खंड हैं तत्+अनन्तर=उसके बाद। 'तत्पश्चात' में भी पहला खंड 'तत्' है। इस सन्धि का नियम ज्ञात करो; देखो कि 'त्' का 'द्' कब हो जाता है।

२. स्पष्ट करो—

(अ) हमारे चारों ओर······रोमांचकारी लगा।

(आ) लेकिन उनकी····साकार कर देता है।

(इ) उसकी विशालता····बिना नहीं रहता।

३. अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

विख्यात, प्रफुल्लता, रोमांचकारी, उत्कीर्ण, अनन्य।

**आदेश**—१. दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में मिलने वाली प्राचीन भारतीय संस्कृति के अन्य अवशेषों के विषय में जानकारी प्राप्त करके एक लेख लिखो।

२. 'समुद्र-मन्थन' और कामदेव के भस्म करने की अन्तः कथाओंका उल्लेख करो।

## टिप्पणी

**असामान्य**=विशेष, असाधारण। **स्थापत्य**=भवन-निर्माण। **आभास होना**=प्रतीत होना। **उत्कीर्ण**=खुदी हुई। **विस्मित**=आश्चर्य युक्त। **कलाविद**=कला को जानने वाले, कलाकार। **अनन्य**=जिसके समान कोई दूसरा न हो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ २६

# खनिज-सम्पदा

[प्रस्तुत पाठ में खनिज-सम्पदा का वर्णन है। इसमें बताया गया है कि खनिज-पदार्थों का हमारे जीवन से कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस पाठ में यह भी बताया गया है कि इनका उपयोग हमें सावधानी के साथ क्यों करना चाहिए।]

किसी भी नगर के बाजार की सैर करने निकलें, हमें प्लास्टिक की वस्तुओं से दुकानें भरी मिलेंगी। यह जानकर आश्चर्य होगा कि प्लास्टिक कोयले से बनाया जाता है। कोयले से प्लास्टिक ही नहीं वरन बुरुश, बटन, नेप्थालीन अनेक प्रकार के सुगन्धित तेल, नायलोन और डेकरान जैसे वस्त्रों का निर्माण भी होता है। कोयला एक ऐसा खनिज है, जिसके असंख्य उपयोग हैं। वैज्ञानिकों ने कोयले से दस लाख से भी अधिक वस्तुओं का निर्माण किया है। कोयले की भाँति लोहा, टीन, ताँबा, सोना, टंग्स्टन, मैंगनीज, जिप्सम आदि ऐसे अनेक खनिज हैं, जिन पर आधुनिक सभ्यता की नींव टिकी है। जो देश खनिज-सम्पन्न हैं, वे ही औद्योगिक विकास में अग्रणी हैं। आज की भौतिकवादी सभ्यता की आधार-शिला खनिज ही हैं।

मनुष्य के जीवन में खनिज सदैव महत्त्वपूर्ण रहे हैं। मनुष्य ने प्रत्येक युग में किसी न किसी रूप में किसी न किसी खनिज

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


का अवश्य ही प्रयोग किया है। कुछ खनिज तो इतने अधिक प्रयुक्त हुए हैं कि उनके नाम से युग का ही नामकरण हो गया है। आदिम निवासी ने पत्थर से ही आग जलायी और अस्त्र-शस्त्र बनाये। इतिहासकार इस युग को 'पाषाण युग' कहते हैं। आज से लगभग पन्द्रह हजार वर्ष पूर्व मनुष्य को धातु का पता चला था। यह कहना बड़ा कठिन है कि मनुष्य ने सबसे पहले किस धातु का प्रयोग किया परन्तु ऐसा अनुमान है कि सोना, चाँदी और ताँबा सर्वप्रथम प्रयोग में आये। यही ऐसी धातुएं हैं, जो अमिश्रित रूप में मिल सकती हैं, अन्य धातु 'सच्ची धातुक' के रूप में मिलती हैं अर्थात मिट्टी के साथ मिली रहती हैं।

लगभग छह हजार वर्ष पूर्व मिस्र देश के कुछ लोगों ने, सम्भवतः अकस्मात ही ताँबा और टीन को मिला कर एक मिश्रित धातु बनायी, जिसको काँसा कहते हैं। काँसा ताँबे और टीन से अधिक कड़ा होता है। इसलिए इस धातु से अधिक मजबूत अस्त्र-शस्त्र और बरतन बनने लगे। इस आविष्कार ने संसार के व्यापार-क्षेत्र को एक नया जीवन प्रदान किया। ताँबे और टीन की खोज में लोग दूर-दूर देशों का दौरा करने लगे, और 'काँसा युग' आ गया।

सम्भवतः दूसरी मिश्रित धातु, जिसका आविष्कार मनुष्य ने अकस्मात ही कर लिया वह थी पीतल, जो ताँबे और जस्ते के मिश्रण से बनी। ईसा के जन्म के समय सोना, चाँदी और ताँबे के अतिरिक्त काँसा और पीतल ही ऐसी मिश्रित धातुएं थीं, जिनका सार्वजनिक प्रयोग होता था। आभूषण, घर के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
बरतन, सिक्के, घरों की सजावट की वस्तुएं आदि इन्हीं धातुओं से बनायी जाती थीं।

फिर लोहे का युग प्रारम्भ हुआ। लोहा सर्वप्रथम उल्का-पात से मिला। कुछ उल्काओं में निकिल का भी मिश्रण था। रोम, मिस्र, दक्षिणी अमेरिका में इस लोहे से बनी हुई अनेक वस्तुएं अब भी मिलती हैं।

लोहा 'सच्ची धातु' से कब, कैसे और कहाँ गलाया गया, यह अभी तक एक रहस्य ही है। लगभग चार हजार वर्ष पूर्व आर्यों के पास लोहे के अस्त्र थे, जिससे ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि मनुष्य ने उस समय लोहे को गलाना सीख लिया था। परन्तु असली 'लौह युग' अब से लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ, जब कि लोहे ने काँसे का स्थान पूरी तरह ले लिया था। प्राचीन इमारतों के खंडहरों में लोहे के ताले-कुंजी, कब्जे, कीलें, चाकू तथा अनेक प्रकार के अस्त्र, बरतन आदि मिलते हैं। भारत के निवासी भी लोहे की वस्तुओं के निर्माण में बड़े निपुण हो गये थे। इसके प्रमाण हैं आयुर्वेद एवं चिकित्सा के शल्य यन्त्र, जो ह्वेनसांग के कथनानुसार बाल को भी चीर सकते थे तथा दिल्ली का 'लौह स्तम्भ', जो लगभग पन्द्रह सौ वर्ष से आज भी बिना मोरचा लगे खड़ा है।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में 'इस्पात' का निर्माण प्रारम्भ हुआ, जिसने संसार को एक नया रूप ही दे दिया। यदि इस्पात का आविष्कार न हुआ होता तो न तो गगनचुम्बी इमारतें होतीं और न पानी के बड़े-बड़े जहाज, न वायुयान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


होते और न मोटरगाड़ी और टैंक । आज का युग इस्पात का युग है ।

वैज्ञानिकों ने अब अनेक धातुओं की खोज कर ली है और भट्ठियों में गला कर उनसे भिन्न-भिन्न प्रकार की मिश्रित धातुओं का निर्माण कर लिया है । धातुओं की खोज और मनुष्य की लगन का ही फल है कि आज सम्भव हो सकी हैं हमारी आणविक भट्ठियां, जो असीमित शक्ति की स्रोत हैं, विद्युत चालित मस्तिष्क, जो हजारों प्रश्नों का उत्तर कुछ ही क्षणों में देते हैं, रेडियो तथा ट्रांजिस्टर, जो हजारों मीलों की दूरी से संगीत और समाचार हम तक पहुँचाते हैं, कृत्रिम उपग्रह, जो आकाश के रहस्यों को स्पष्ट रूप से सम्मुख रख रहे हैं और राकेट, जो मनुष्य को ब्रह्मांड की सैर करा रहे हैं ।

खनिज पदार्थ भूपटल पर अथवा पृथ्वी के गर्भ में शैलों के भीतर पाये जाते हैं । जो भाग जितना प्राचीन है, उससे उतने ही अधिक खनिज प्राप्त होते हैं । भूगर्भवेत्ताओं के कथनानुसार भारत का दक्षिणी प्रायद्वीप प्राचीनतम भूखंड है, जिसका जन्म पृथ्वी के अन्य प्राचीनतम भूखंडों के साथ ही 'आरकेइयन युग' में लगभग तीन अरब पचास करोड़ वर्ष पूर्व हुआ था । भारत की अधिकांश खानें इसी कारण उड़ीसा, मध्यप्रदेश, राजस्थान, मैसूर और केरल में पायी जाती हैं ।

खनन-कार्य, विशेष रूप से कोयले का, अत्यन्त खतरनाक होता है । खानें बड़ी गहरी होती हैं । भूगर्भ में कई मंजिलों में छोटा-मोटा गाँव-सा बन जाता है, जहाँ शुद्ध वायु, विद्युत प्रकाश और रेल के आने-जाने का प्रबन्ध करना पड़ता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


कार्यकर्त्ताओं तथा श्रमिकों को प्रत्येक क्षण मृत्यु का भय रहता है। पता नहीं कब जहरीली गैसों से दम घुट जाय, ऊपर से छत गिर जाय या कहीं से पानी का स्रोत ही फूट पड़े और सब की जल-समाधि बन जाय। इसलिए खानों के प्रबन्धकों पर सुरक्षा का बड़ा भारी उत्तरदायित्व होता है।

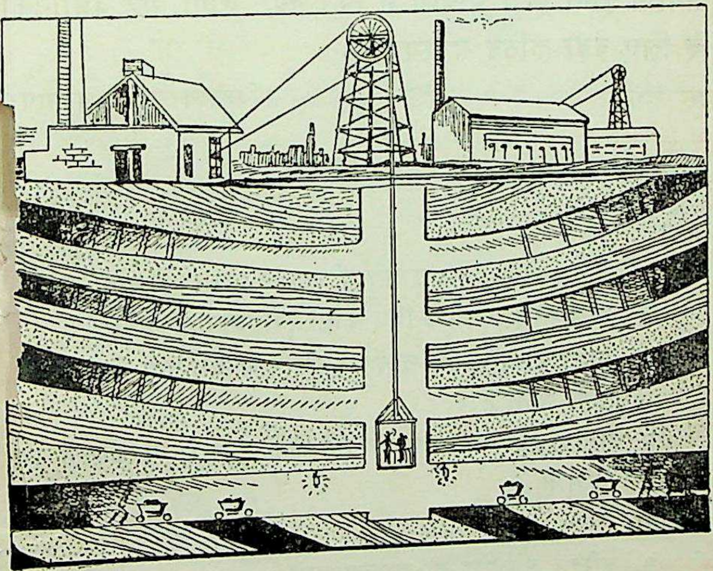

कोयले की खान

भारत सरकार ने खनिज-उद्योग को सफल बनाने के लिए पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत कई संस्थाओं की स्थापना की है, जिनमें भारतीय खान विभाग, भारतीय भूगर्भ निरीक्षण संस्थान, राष्ट्रीय धातु प्रयोगशाला उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण खनिजों का सर्वेक्षण तथा विकास करने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



के लिए 'राष्ट्रीय खनिज विकास निगम' की स्थापना हुई है।

किसी भी खनिज के सही आँकड़ों के अभाव में खनिज-भांडार का वास्तविक अनुमान लगाना बड़ा कठिन है, परन्तु यह तो सत्य है कि इसके उत्पादन में कितनी ही मितव्ययता बरती जाय, पृथ्वी का वर्तमान खनिज-भांडार कभी न कभी समाप्त होगा ही। भविष्य में फिर क्या होगा, यह वैज्ञानिकों के लिए बड़ी कठिन समस्या है।

—विश्वेश्वरस्वरूप भटनागर

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. खनिज को आधुनिक सभ्यता की आधार-शिला क्यों माना गया है

२. अस्त्र-शस्त्र बनाने के लिए काँसा क्यों उपयोगी माना गया है

३. भारत की अधिकांश खानें उड़ीसा, मध्यप्रदेश तथा मैसूर में क्यों पायी जाती हैं ?

४. खनिज-उद्योग को सफल बनाने के लिए भारत सरकार ने क्या किया है ?

**अभ्यास**

१. अन्तिम अनुच्छेद की व्याख्या करो।

२. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखो तथा अपने बनाये हुए वाक्यों में उनका प्रयोग करो—

आविष्कार, अग्रणी, उत्तरदायित्व, प्रयुक्त, सार्वजनिक, मितव्ययता।

३. 'भूत' शब्द में 'इक' प्रत्यय जोड़कर 'भौतिक' शब्द बनाया गया है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में 'इक' जोड़कर शब्द-रचना करो—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिन, नीति, इतिहास, भूगोल, समाज ।

४. वाक्य-विश्लेषण करो—

(क) इसके प्रमाण हैं आयुर्वेद चिकित्सा के......लगे खड़ा है ।

(ख) धातुओं की खोज और मनुष्य की लगन......सैर करा रहे हैं ।

**आदेश**—भारत की खनिज-सम्पदा पर एक छोटा-सा लेख लिखो ।

## टिप्पणी

**टंग्स्टन**=एक धातु, जिसके बहुत पतले तार खींचे जा सकते हैं, जिनका प्रयोग बल्ब के भीतर होता है ।

**मैंगनीज**=एक धातु, जो लोहे को शुद्ध करने में काम आता है ।

**उल्का**=अन्तरिक्ष में घूमने वाले प्रस्तर-खंड जो कभी-कभी पृथ्वी पर भी गिर पड़ते हैं । **शैल**=मिट्टी की परतें । **आरकेइयन युग**=आदि युग ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २७

# अवधेस के बालक

[ प्रस्तुत छन्द गोस्वामी तुलसीदास की 'कवितावली' से लिये गये हैं। ये सवैया छन्द हैं। इनमें राम, लक्ष्मण आदि चारों भाइयों के बालरूप का मनोरम वर्णन किया गया है।]

[ १ ]

पग नूपुर औ पहुँची कर-कंजनि, मंजु बनी मनि-माल हिये।
नव नील कलेवर पीत झगा, झलकैं पुलकैं नृप गोद लिये।
अरविन्द सो आनन, रूप-मरन्द, अनन्दित लोचन-भृंग पिये।
मन में न बस्यो अस बालक जो, तुलसी जग में फल कौन जिये।।

[ २ ]

तन की दुति स्याम सरोरुह, लोचन कंज की मंजुलताई हरैं।
अति सुन्दर सोहत धूरि भरे, छबि भूरि अनंग की दूरि धरैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



दमकें दतियां दुति दामिनि ज्यों, किलकें कल बाल विनोद करैं ।
अवधेस के बालक चारि सदा, तुलसी मन-मन्दिर में बिहरैं ॥

[ ३ ]

कबहूँ ससि माँगत आरि करैं, कबहूँ प्रतिबिम्ब निहारि डरैं ।
कबहूँ करताल बजाय के नाचत, मातु सबैं मन मोद भरैं ।
कबहूँ रिसिआइ कहैं हटि कै, पुनि लेत सोई जेहि लागि अरैं ।
अवधेस के बालक चारि सदा, तुलसी मन-मन्दिर में बिहरैं ॥

[ ४ ]

बर दन्त की पंगति कुन्दकली, अधराधर-पल्लव खोलन की ।
चपला चमकै, घन बीच जगै, छबि मोतिन माल अमोलन की ।
घुँघरारि लटैं लटकैं मुख ऊपर, कुंडल लोल कपोलन की ।
नेवछावरि प्रान करैं तुलसी, बलि जाउँ लला इन बोलन की ॥

—गोस्वामी तुलसीदास

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. पहले छन्द में 'नव नील कलेवर' से किसकी ओर संकेत है ?
२. कवि ने राम की वेशभूषा का किस प्रकार वर्णन किया है ?
३. बालकों की किन क्रीड़ाओं का वर्णन कवि ने तीसरे छन्द में किया है ?
४. अन्तिम छन्द में दाँतों और ओष्ठों की समता किन वस्तुओं से की गयी है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



**अभ्यास**

१. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो—

(अ) अरविन्द सो आनन, रूप मरन्द, अनन्दित लोचन-भृंग पिये।

(ब) छवि भूरि अनंग की दूरि धरैं।

(इ) चपला चमकै घन बीच जगै,
छवि मोतिन माल अमोलन की।

२. 'अरविन्द सो आनन' का अर्थ है—'मुख कमल के समान है।' इसमें राम के मुख की समता कमल से की गयी है। जब किसी वस्तु की समता उससे अधिक प्रकृष्ट गुणयुक्त वस्तु से की जाती है, तो उसे 'उपमा अलंकार' कहते हैं। इस समता को सम, समान, भाँति, तरह आदि शब्दों से प्रकट किया जाता है। इस पाठ में आये हुए उपमा अलंकार छाँट कर लिखो।

३. नीचे बायीं ओर शरीर के अंगों का नाम लिखा हुआ है और दाहिनी ओर बिना क्रम के उन वस्तुओं के नाम अंकित हैं, जिनसे उनकी तुलना की गयी है। हर अंग के सामने उससे सम्बन्धित वस्तु का नाम लिखो—

| | |
|---|---|
| तन | कुन्दकली |
| लोचन | पल्लव |
| दाँत | कंज |
| दाँतों की पंक्ति | दामिनी |
| अधर | सरोरुह |

**आदेश**—इन छन्दों को कंठाग्र करो।

## टिप्पणी

**कलेवर**=शरीर। **झगा**=ढीला-ढाला कुर्त्ता। **आनन**=मुख। **मरन्द**=मकरन्द, फूलों का रस। **अनंग**=कामदेव। **दामिनी**=बिजली। **आरि करैं**=हठ करते हैं। **अरैं**=अड़ते हैं। **अधराधर**=दोनों ओंठ। **लोल**=चंचल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २८

# संयुक्त राष्ट्रसंघ

[संयुक्त राष्ट्रसंघ विश्व के राष्ट्रों की एक ऐसी संस्था है, जो विश्व में शान्ति स्थापित रखने के लिए बनायी गयी है। प्रस्तुत पाठ में इस संस्था के उद्देश्य और उसके विविध अंगों के कार्य बताये गये हैं।]

'इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की, इस विश्व-न्यायालय की रक्षा हर कीमत पर होनी चाहिए, जिससे संसार भविष्य के विनाशकारी भीषण अणु-युद्ध से बच सके तथा राष्ट्रों के बीच शान्ति रह सके।' संयुक्त राष्ट्रसंघ के सम्बन्ध में ये शब्द हैं हमारे भूतपूर्व प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू के।

संयुक्त राष्ट्रसंघ विश्व में शान्ति स्थापित रखने की दिशा में किया गया दूसरा प्रयास है। पहला प्रयास प्रथम महायुद्ध की समाप्ति पर 'लीग आफ नेशंस' के रूप में जनवरी, सन् १९१९ में किया गया था। परन्तु 'लीग आफ नेशंस' न तो निर्बल राष्ट्रों की रक्षा कर सकी और न सबल राष्ट्रों की आक्रामक कार्यवाहियों को ही रोक सकी। परिणाम यह हुआ कि थोड़े ही समय बाद मनुष्य की पाशविक प्रवृत्तियां एक बार पुनः उभर पड़ीं। सन् १९३९ में विश्व में द्वितीय महायुद्ध की ज्वाला धधक उठी और वह छह वर्ष तक जलती रही। अन्त में अणुबमों की संहारक शक्ति ने सर्वनाश का प्रलयकालीन दृश्य उपस्थित कर दिया, जिससे विश्व में हाहाकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



मच गया। अतः प्रत्येक राष्ट्र युद्ध से मुक्ति पाने की प्रबल कामना करने लगा।

अक्टूबर, सन् १९४४ में इंग्लैंड, अमेरिका, रूस और क्योमिंटांग चीन के प्रतिनिधियों ने अमेरिका के डम्बरटन ओक्स नामक स्थान पर एकत्र होकर विचार-विमर्श किया और विश्व में शान्ति बनाये रखने के उद्देश्य से एक नये विश्व-संगठन की योजना बनायी। तदनुसार २६ जून, सन् १९४५ को पचास राष्ट्रों के लगभग पौने दो अरब निवासियों के प्रतिनिधियों ने अमेरिका के सानफ्रांसिस्को नगर में संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना की और यह प्रतिज्ञा की कि हम इस बात का प्रयत्न करेंगे कि संसार में न्याय और कानून का राज्य कायम हो तथा अन्तर्राष्ट्रीय नियमों को भंग न किया जाय। तभी संसार को युद्ध के संकट से बचाया जा सकता है। आज अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा के लिए प्रयत्नशील इस विश्व संस्था के सदस्य-राष्ट्रों की संख्या लगभग सवा सौ हो गयी है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के प्रमुख उद्देश्य हैं—विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में सहयोग और मित्रता की भावना का विकास करना, विश्व में शान्ति और सुरक्षा स्थापित करना, सारे विश्व की जनता के जीवन-स्तर को उन्नत बनाने के लिए आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं चिकित्सा सम्बन्धी क्षेत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की वृद्धि करना तथा पिछड़ी हुई जातियों को हर सम्भव उपाय द्वारा सभ्य और सुसंस्कृत बनाकर उनके जीवन-स्तर को सुधारना।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के छह प्रमुख अंग हैं—(१) महासभा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


(२) सुरक्षा-परिषद (३) आर्थिक और सामाजिक परिषद (४) संरक्षण परिषद (५) अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय और (६) सचिवालय।

(१) संयुक्त राष्ट्रसंघ की सबसे बड़ी सभा का नाम महासभा या जनरल असेम्बली है। समस्त सदस्य-देश इसके सदस्य होते हैं। प्रत्येक सदस्य-देश पाँच व्यक्तियों का प्रतिनिधि मंडल महासभा में भेज सकता है किन्तु मतदान में उस देश को केवल एक ही मत देने का अधिकार होता है। महासभा का अधिवेशन वर्ष में एक बार होता है, परन्तु संकटकालीन स्थिति में इसकी बैठक किसी भी समय बुलायी जा सकती है। महासभा के प्रधान का चुनाव प्रति वर्ष अधिवेशन के आरम्भ में किया जाता है। सन् १९५४ ई० में श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा की प्रधान चुनी गयी थीं।

(२) 'सुरक्षा परिषद' संयुक्त राष्ट्रसंघ की कार्यकारिणी समिति है। यह सबसे महत्त्वपूर्ण संस्था है। सुरक्षा परिषद के पाँच स्थायी सदस्य राष्ट्रीय चीन, फ्रांस, रूस, इंग्लैंड और अमेरिका हैं। इनके अतिरिक्त दस अस्थायी सदस्यों का चुनाव महासभा द्वारा दो वर्ष की अवधि के लिए होता है। शान्ति और सुरक्षा बनाये रखना परिषद का प्रमुख उत्तरदायित्व है। वह किसी भी ऐसे विवाद या विषम परिस्थिति की जांच कर सकती है, जिससे दो अथवा अधिक देशों के बीच परस्पर संघर्ष बढ़ने की सम्भावना हो। सुरक्षा परिषद के पाँच स्थायी सदस्यों में से कोई भी सदस्य यदि किसी प्रस्ताव को अस्वीकार कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



दे तो वह प्रस्ताव अस्वीकृत हो जाता है। इस अधिकार को 'निषेधाधिकार' अथवा 'वीटो' कहते हैं।

(३) 'आर्थिक एवं सामाजिक परिषद' का मुख्य कार्य है संसार की जनता के जीवन-स्तर को सुधारना। संसार से भुखमरी, महामारी, दरिद्रता, अशिक्षा आदि को समूल नष्ट करने के लिए यह परिषद कृत-संकल्प है। इस परिषद का कार्य अत्यन्त व्यापक है, जिसे पूरा करने के लिए अनेक संस्थाएं और समितियां कार्य कर रही हैं। इनमें प्रमुख हैं—'यूनेस्को', 'अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संघ', 'अन्तर्राष्ट्रीय बैंक' तथा 'विश्व-स्वास्थ्य-संघ।' यूनेस्को का काम राष्ट्रों के बीच शिक्षा, विज्ञान एवं संस्कृति सम्बन्धी मेलजोल पैदा करना है। हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन यूनेस्को के अध्यक्ष रह चुके हैं। अन्तर्राष्ट्रीय बैंक का उद्देश्य राष्ट्रों के विकास में सहायता करना है। हमारे देश को अपनी योजनाओं के लिए तथा रेल के इंजन आदि मोल लेने के लिए इस बैंक से ऋण मिल चुका है। विश्व-स्वास्थ्य-संघ का उद्देश्य विश्व भर के मनुष्यों के स्वास्थ्य को उन्नत बनाना और उन्हें भयानक रोगों से बचाना है।

(४) संरक्षण परिषद' उन देशों की देखभाल करती है, जो अब भी गुलामी की जंजीरों में जकड़े हुए हैं। इस परिषद के प्रयासों के फलस्वरूप एशिया और अफ्रीका के अनेक देश गुलामी के बन्धनों से मुक्त हो गये हैं और स्वतन्त्र होकर अपनी उन्नति कर रहे हैं।

(५) 'अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय' विवादग्रस्त राष्ट्रों के पारस्परिक झगड़े निपटाने के लिए अन्तिम निर्णय देने वाला सर्वोच्च

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


न्यायालय है। यह न्यायालय हालैंड के हेग नगर में स्थित है। इसमें पन्द्रह न्यायाधीश होते हैं, जिनकी नियुक्ति महासभा नौ वर्ष के लिए करती है। प्रत्येक तीन वर्ष के पश्चात पाँच न्यायाधीश अवकाश ग्रहण करते जाते हैं। भारत के प्रसिद्ध विधि-विद्वान स्वर्गीय बी० एन० राव को भी इस न्यायालय के न्यायाधीश होने का गौरव प्राप्त हुआ था।

(६) संयुक्त राष्ट्रसंघ का मुख्य कार्यालय उसका सचिवालय है, जो अमेरिका के न्यूयार्क नगर में है। सचिवालय के विशाल भवन में उनतालीस मंजिलें हैं और इसमें लगभग सात हजार कर्मचारी कार्य करते हैं। सचिवालय का प्रधान अधिशासी अधिकारी महामन्त्री या सेक्रेटरी जनरल होता है। संयुक्त राष्ट्रसंघ की शाखाएं एवं सूचना-केन्द्र संसार के सभी भागों में स्थापित किये गये हैं। इन केन्द्रों द्वारा प्राप्त समाचारों के आधार पर महासचिव किसी भी ऐसी समस्या को सुरक्षा परिषद में प्रस्तुत कर सकता है, जो उसके विचार में विश्व-शान्ति में बाधक हो।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के सदस्य के रूप में हमारे देश ने भी विश्व में शान्ति स्थापित करने में अपना योगदान किया है। कोरिया और स्वेज की समस्याओं को सुलझाने में भारत ने जो प्रयास किये, उनकी सर्वत्र सराहना हुई।

वास्तव में संयुक्त राष्ट्रसंघ विश्व का एक ऐसा सामान्य मंच है, जहाँ विश्व के विभिन्न राष्ट्र एकत्र होकर आपसी झगड़ों का शान्तिपूर्ण हल खोज सकते हैं। इस संघ को राजनीतिक क्षेत्र की अपेक्षा आर्थिक क्षेत्र में कहीं अधिक सफलता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


मिली है। इसके खाद्य और कृषि संघ ने उत्पादन और वितरण में अत्यधिक प्रगति की है। पिछड़े हुए देशों में स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा एवं संस्कृति के उत्थान में संयुक्त राष्ट्रसंघ ने कई महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं जिनसे अनेक राष्ट्र लाभान्वित हुए हैं। किन्तु इसके साथ ही कुछ राष्ट्रों की ऐसी उलझी हुई गुत्थियां भी हैं, जिन्हें सुलझाने में संयुक्त राष्ट्रसंघ पूर्णतया असफल रहा है।

जो भी हो, आज के अणु-बमों एवं भयंकर राकेटों के युग में संयुक्त राष्ट्रसंघ जैसी संस्था से विश्व-शान्ति की बड़ी आशाएं हैं। यदि समस्त राष्ट्र स्वार्थ के संकुचित घेरे से उठकर, पारस्परिक सहयोग और सद्भावना, समझदारी और न्याय के पथ पर चलते रहें तो संसार को भयंकर युद्धों से मुक्ति मिल सकती है।

—वेंकटेशचन्द्र पाण्डेय

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना क्यों की गयी ?
२. 'लीग आफ नेशंस' क्यों असफल रही ?
३. संयुक्त राष्ट्रसंघ के प्रमुख उद्देश्य क्या हैं ?
४. सुरक्षा परिषद क्या है ? इसका संगठन किस प्रकार होता है ?
५. परतन्त्र देशों के उत्थान के लिए संरक्षण परिषद के क्या कर्तव्य हैं ?
६. 'निषेधाधिकार' क्या है ? इसके प्रयोग का अधिकार किन देशों को है ?
७. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के क्या कार्य हैं ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


**अभ्यास**

१. निम्नलिखित मुहावरों तथा शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो––

आँखें लगी रहना, पाशविक प्रवृत्ति, विनिमय ।

२. निम्नलिखित अनुच्छेद में विराम-चिह्न लगाओ––

अपने वनवास काल में रामचन्द्रजी ने जो एक और महत्त्वपूर्ण कार्य किया वह था रामेश्वरम में शिव की स्थापना शिव जी दक्षिणवासियों के प्रमुख आराध्य देव थे उनकी स्थापना और पूजा करके उन्होंने दक्षिण वासियों का हृदय जीत लिया ।

३. निम्नलिखित वाक्यों में शब्दों का क्रम ठीक नहीं है । उन्हें क्रमबद्ध करके शुद्ध वाक्यों की रचना करो––

(क) दिया देश को महात्मा गांधी ने एक अनोखा बड़ा अस्त्र सत्य और अहिंसा का ।

(ख) शान्तिनिकेतन में नमूना थी कुटी एण्ड्रूज की सादगी और सरलता का ।

**आदेश**––संयुक्त राष्ट्रसंघ के प्रमुख अंगों के कार्यों का वर्णन करो ।

## टिप्पणी

**पाशविक-प्रवृत्ति**=हिंसात्मक स्वभाव । **सुसंस्कृत**=सभ्य । **उत्तर-दायित्व**=जिम्मेदारी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ २६

# चन्द्रगुप्त

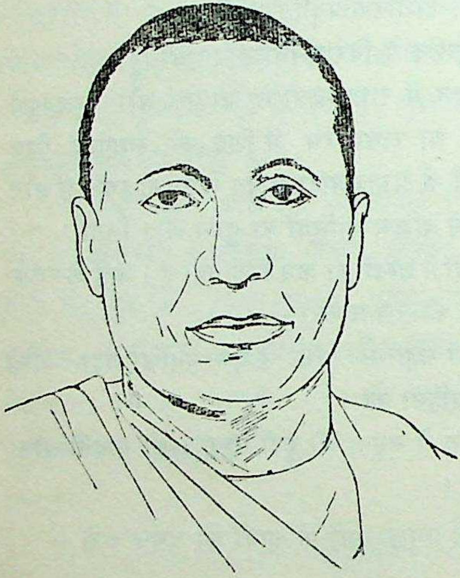

[प्रस्तुत पाठ हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार जयशंकर 'प्रसाद' के 'चन्द्रगुप्त' नाटक का एक अंश है। इसके प्रथम दृश्य में मालव दुर्ग में चन्द्रगुप्त और सिंहरण द्वारा सिकन्दर की पराजय का वर्णन है तथा दूसरे दृश्य में उसके भारत से प्रस्थान करते समय का चित्रण है।]

### पात्र-परिचय

| | | |
|---|---|---|
| मालविका | : | सिन्धु देश की कुमारी |
| अलका | : | तक्षशिला की राजकुमारी |
| सिंहरण | : | मालव का राजकुमार |
| सिकन्दर | : | ग्रीक सम्राट |
| चन्द्रगुप्त | : | मौर्य सम्राट |
| सिल्यूकस | : | सिकन्दर का सेनापति |
| चाणक्य | : | मौर्य साम्राज्य का निर्माता |
| पर्वतेश्वर | : | पंजाब का राजा |
| | | यवन, मालव-सैनिक आदि। |

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


( १ )

(मालव-दुर्ग का भीतरी भाग, एक शून्य परकोटा)

**मालविका**---अलका, इधर तो कोई भी सैनिक नहीं है। यदि शत्रु इधर से आवे तब ?

**अलका**---दुर्ग ध्वंस करने के लिए यन्त्र लगाये जा चुके हैं परन्तु मालव सेना अभी सुख की नींद सो रही है। सिंहरण को दुर्ग की भीतरी रक्षा का भार देकर चन्द्रगुप्त नदी-तट से यवन-सेना के पृष्ठ भाग पर आक्रमण करेंगे। आज ही युद्ध का अन्तिम निर्णय है। जिस स्थान पर यवन-सेना को ले आना अभीष्ट था, वहाँ तक पहुँच गयी है।

**मालविका**---अच्छा, चलो, कुछ नवीन आहत आ गये हैं, उनकी सेवा का प्रबन्ध करना है।

**अलका**---(देखकर) मालविका! मेरे पास धनुष है और कटार है। इस आपत्ति काल में एक आयुध अपने पास रखना चाहिए। तू कटार अपने पास रख ले।

**मालविका**---मैं डरती हूँ, घृणा करती हूँ। रक्त की प्यासी छुरी! अलग करो, अलका, मैंने सेवा-व्रत लिया है।

**अलका**---प्राणों के भय से शस्त्र से घृणा करती हो क्या ?

**मालविका**---प्राण तो धरोहर है, जिसका होगा, वही लेगा, मुझे, भय से इसकी रक्षा करने की आवश्यकता नहीं, मैं जाती हूँ।

**अलका**---अच्छी बात है, जा। परन्तु सिंहरण को शीघ्र ही भेज दे। यहाँ जब तक कोई न आ जाय, मैं नहीं हट सकती।

(मालविका का प्रस्थान)

**अलका**---सन्ध्या का निर्जन प्रदेश है। बैठूं ? (अकस्मात बाहर से हल्ला होता है, युद्ध-शब्द) क्या चन्द्रगुप्त ने आक्रमण कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिया ? परन्तु यह स्थान...........बड़ा ही अरक्षित है। (उठती है) अरे वह कौन है ? कोई यवन सैनिक है क्या ? तो सावधान हो जाऊँ।

(धनुष चढ़ाकर तीर मारती है। यवन-सैनिक का पतन। दूसरा फिर ऊपर आता है, उसे भी मारती है, तीसरी बार स्वयं सिकन्दर ऊपर आता है। तीर का वार बचा कर दुर्ग में कूदता है और अलका को पकड़ना चाहता है। सहसा सिंहरण का प्रवेश, युद्ध)

**सिंहरण**—(तलवार चलाते हुए) तुमको स्वयं इतना साहस नहीं करना चाहिए सिकन्दर ! तुम्हारा प्राण बहुमूल्य है।

**सिकन्दर**—सिकन्दर केवल सेनाओं को आज्ञा देना नहीं जानता। बचाओ अपने को। (भाले का वार)

(सिंहरण इस फुरती से बरछे को ढाल पर लेता है कि वह सिकन्दर के हाथ से छूट जाता है। यवनराज विवश होकर तलवार चलाता है किन्तु सिंहरण के भयानक प्रत्याघात से घायल होकर गिरता है। तीन यवन सैनिक कूद कर आते हैं, इधर से मालव-सैनिक पहुँचते हैं )

**सिंहरण**—यवन ! दुस्साहस न करो। तुम्हारे सम्राट की अवस्था शोचनीय है, ले जाओ, इनकी शुश्रूषा करो।

**यवन**—दुर्ग-द्वार टूटता है और अभी हमारे वीर सैनिक इस दुर्ग को मटियामेट करते हैं।

**सिंहरण**—पीछे चन्द्रगुप्त की सेना है मूर्ख ! इस दुर्ग में आकर तुम सब बन्दी होगे। ले जाओ, सिकन्दर को उठा ले जाओ, जब तक और मालवों को यह न विदित हो जाय कि यही सिकन्दर है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

**मालव सैनिक**—सेनापति, रक्त का बदला ! इस नृशंस ने निरीह जनता का अकारण वध किया है ! प्रतिशोध ।

**सिंहरण**—ठहरो, मालव वीरो ! ठहरो । यह भी एक प्रतिशोध है । यह भारत के ऊपर एक ऋण था, पर्वतेश्वर के प्रति उदारता दिखाने का यह प्रत्युत्तर है । यवन ! जाओ, शीघ्र जाओ ।

(तीनों यवन सिकन्दर को ले जाते हैं, घबराया हुआ एक सैनिक आता है । )

**सिंहरण**—क्या है ?

**सैनिक**—दुर्ग द्वार टूट गया, यवन सेना भीतर आ रही है ।

**सिंहरण**—कुछ चिन्ता नहीं । दृढ़ रहो । समस्त मालव-सेना से कह दो कि सिंहरण तुम्हारे साथ मरेगा । (अलका से) तुम मालविका को साथ लेकर अन्तःपुर की स्त्रियों को भूगर्भ-द्वार से रक्षित स्थान पर ले जाओ । अलका ! मालव के ध्वंस पर ही आर्यों का यशोमन्दिर ऊँचा खड़ा हो सकेगा । जाओ ।

(अलका का प्रस्थान । यवन-सैनिकों का प्रवेश, दूसरी ओर से चन्द्रगुप्त का प्रवेश और युद्ध । एक यवन-सैनिक दौड़ा जाता है ।)

**यवन**—सेनापति सिल्यूकस ! क्षुद्रकों की सेना भी पीछे आ गयी है । बाहर की सेना को उन लोगों ने उलझा रखा है ।

**चन्द्रगुप्त**—यवन सेनापति ! मार्ग चाहते हो या युद्ध ? मुझ पर कृतज्ञता का बोझ है तुम्हारा जीवन ।

**सिल्यूकस**—(कुछ सोचने लगता है ) हम दोनों के लिए प्रस्तुत हैं । किन्तु.........

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

**चन्द्रगुप्त**—शान्ति ! मार्ग दो । जाओ सेनापति ! सिकन्दर का जीवन बच जाय तो फिर आक्रमण करना ।

(यवन सेना का प्रस्थान । चन्द्रगुप्त का जय-घोष)

( २ )

(रावी का तट—सिकन्दर का बेड़ा प्रस्तुत है, चाणक्य और पर्वतेश्वर)

**चाणक्य**—पौरव ! देखो, वह नृशंसता की बाढ़ आज उतर जायगी । चाणक्य ने जो किया, वह भला था या बुरा, अब समझ में आवेगा ।

**पर्वतेश्वर**—मैं मानता हूँ, यह आप ही का स्तुत्य कार्य है ।

**चाणक्य**—और चन्द्रगुप्त के बाहुबल का, पौरव ! आज फिर मैं उसी बात को दुहराना चाहता हूँ । अत्याचारी नन्द के हाथों से मगध का उद्धार करने के लिए चाणक्य ने पहले तुम्हीं से सहायता माँगी थी और अब तुम्हीं से लेगा भी, अब तो तुम्हें विश्वास होगा ।

**पर्वतेश्वर**—मैं प्रस्तुत हूँ आर्य !

**चाणक्य**—मैं विश्वस्त हुआ, अच्छा यवनों को आज विदा करना है ।

(एक ओर सिकन्दर, सिल्यूकस, कार्नेलिया, फिलिप्स इत्यादि और दूसरी ओर से चन्द्रगुप्त, सिंहरण, अलका, मालविका और आम्भीक इत्यादि का यवन और भारतीय रण-वाद्यों के साथ प्रवेश)

**सिकन्दर**—सेनापति चन्द्रगुप्त, बधाई है ।

**चन्द्रगुप्त**—किस बात की राजन !

**सिकन्दर**—जिस समय तुम भारत के सम्राट होगे, उस समय उपस्थित न रह सकूँगा, उसके लिए पहले से बधाई है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


मुझे उस ब्राह्मण दांड्यायन की बातों का पूर्ण विश्वास हो गया।

**चन्द्रगुप्त**—आप वीर हैं।

**सिकन्दर**—आर्य वीर ! मैंने भारत में हरक्युलिस, एचिलिस की आत्माओं को भी देखा और देखा डेमास्थनीज को। सम्भवत: **प्लेटो** और अरस्तू भी होंगे। मैं भारत का अभिनन्दन करता हूँ।

**सिल्यूकस**—सम्राट ! यही आर्य चाणक्य हैं ?

**सिकन्दर**—धन्य हैं आप ! मैं तलवार खींचे हुए भारत आया, हृदय देकर जाता हूँ। विस्मय-विमुग्ध हूँ। जिनसे खड्ग-परीक्षा हुई थी, युद्ध में जिनसे तलवारें मिली थीं, उनसे हाथ मिलाकर जाना चाहता हूँ।

**चाणक्य**—हम लोग प्रस्तुत हैं सिकन्दर ! तुम वीर हो, भारतीय सदैव उत्तम गुणों की पूजा करते हैं। तुम्हारी जलयात्रा मंगलमय हो। हम लोग युद्ध करना जानते हैं, द्वेष नहीं।

(सिकन्दर हँसता हुआ अनुचरों के साथ नौका पर आरोहण करता है, नाव चलती है।)

—जयशंकर 'प्रसाद'

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. यवनों से मालव दुर्ग की रक्षा करने के लिए क्या योजना बनी थी ?

२. मालविका ने अपने पास कटार रखने से क्यों इनकार किया ?

३. अवसर पाकर भी सिंहरण ने सिकन्दर का वध क्यों नहीं किय ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



४. चलते समय सिकन्दर ने चन्द्रगुप्त को किस बात की बधाई दी ?

५. अपने देश के लिए प्रस्थान करते समय सिकन्दर के हृदय में भारत के प्रति क्या भाव थे ?

**अभ्यास**

१. नाटक के दोनों दृश्यों की कथा अपने शब्दों में लिखो ।

२. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो—

(क) प्राण तो धरोहर है, जिसका होगा वही लेगा ।

(ख) मालव के ध्वंस पर ही आर्यों का यशोमन्दिर ऊँचा खड़ा हो सकेगा ।

(ग) देखो, वह नृशंसता की बाढ़ आज उतर जायगी ।

(घ) मैं तलवार खींचे हुए भारत आया, हृदय देकर जाता हूँ ।

३. निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से देखो और उनको लिखने तथा उच्चारण करने का अभ्यास करो—

पृष्ठभाग, प्रत्याघात, शुश्रूषा, नृशंसता, स्तुत्य, शृंखला, शृंगार ।

याद रखो—

श—का उच्चारण करने में जिह्वा तालु को स्पर्श करती है ।

ष—के उच्चारण में जिह्वा कुछ मुड़कर मूर्धा का स्पर्श करती है ।

स—के उच्चारण में जीभ दाँतों का स्पर्श करती है ।

**आदेश**—इस नाटक का अभिनय करो ।

## टिप्पणी

**ध्वंस**=नाश । **पृष्ठभाग**=पीछे का हिस्सा । **अभीष्ट**=इच्छित । **आयुध**=हथियार । **प्रत्याघात**=बदले से प्रेरित प्रहार । **शुश्रूषा**=सेवा । **निरीह**=असहाय । **प्रतिशोध**=बदला । **भूगर्भ-द्वार**=सुरंग का द्वार । **नृशंसता**=क्रूरता । **स्तुत्य**=प्रशंसनीय । **हरक्युलिस, एचिलिस**=प्रसिद्ध यूनानी वीर । **डेमास्थनीज, प्लेटो और अरस्तू**=यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक । **अभिनन्दन**=स्वागत ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३०

# गंगा की शोभा

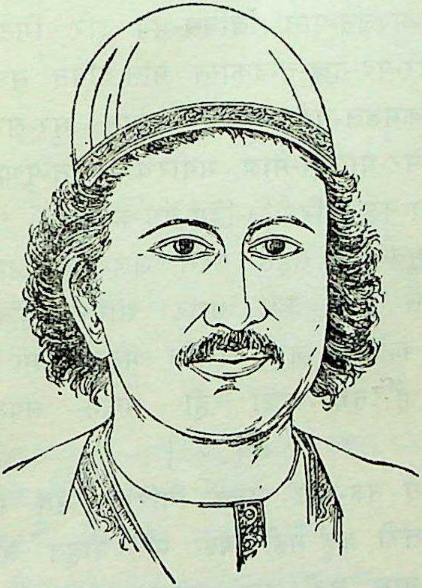

[प्रस्तुत कविता के रचयिता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक माने जाते हैं। इनका आविर्भाव उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ। इन्होंने हिन्दी साहित्य के प्रचार एवं प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। नाटककार और कवि के रूप में इनका नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह कविता भारतेन्दु के 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक से ली गयी है।]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


[ १ ]

नव उज्ज्वल जलधार हार-हीरक-सी सोहति ।
बिच-बिच छहरति बूंद मध्य मुक्तामनि पोहति ।।
लोल लहर लहि पवन एक पै इक इमि आवत ।
जिमि नरगन-मन विविध मनोरथ करत मिटावत ।।
सुभग-स्वर्ग सोपान सरिस सबके मन भावत ।
दरसन-मज्जन-पान त्रिबिध-भय दूरि मिटावत ।।
श्री हरि-पद-नख-चन्द्रकान्त मनि-द्रवित सुधारस ।
ब्रह्म-कमंडल-मंडन भव खंडन सुर-सरवस ।।
सिव-सिर-मालति-माल, भगीरथ नृपति-पुण्य-फल ।
ऐरावत-गज-गिरि-पति-हिम-नग-कंठहार कल ।।
सगर-सुवन सठ सहस परस जल-मात्र उधारन ।
अगनित धारा रूप धारि सागर संचारन ।।
कासी कहँ प्रिय जानि ललकि भेंट्यौ जग धायी ।
सपने हूँ नहिं तजी रही अंकम लपटायी ।।

[ २ ]

कहूँ बंधे नव-घाट उच्च गिरिवर सम सोहत ।
कहुँ छतरी, कहुँ मढ़ी बढ़ी, मन मोहत जोहत ।।
धवल धाम चहुँ ओर फरहरत धुजा पताका ।
घहरत घंटा-धुनि धमकत धौंसा करि साका ।।
मधुरी नौबत बजत कहूँ नारी-नर गावत ।
वेद पढ़त कहुँ द्विज, कहुँ जोगी ध्यान लगावत ।।
कहुँ सुन्दरी नहात नीर कर जुगल उछारत ।
जुग अम्बुज मिलि मुक्त-गुच्छ मनु सुच्छ निकारत ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


धोवत सुन्दरि बदन करन अति ही छबि पावत ।
बारिधि नाते ससि-कलंक मनु कमल मिटावत ।।
सुन्दरि-ससि-मुख नीर-मध्य इमि सुन्दर सोहत ।
कमल-बेलि लहलही नवल कुसुमन मन मोहत ।।
दीठि जहाँ जहँ जात रहत तितही ठहराई ।
गंगा-छबि हरिचन्द कछू बरनी नहिं जाई ।।

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. गंगा की समता स्वर्ग-सोपान से क्यों की गयी है ?
२. गंगा की धारा का कवि ने किन-किन रूपों में वर्णन किया है ?
३. जल में स्नान करने वाली सुन्दरियों का वर्णन कवि ने किस प्रकार किया है ?

**अभ्यास**

१. निम्न काव्यांशों का भाव सरल भाषा में स्पष्ट करो—
(क) श्री हरि-पद-नख……कंठहार कल ।
(ख) सुन्दरि-ससि मुख……मन मोहत ।
२. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार-निर्देश करो—
(१) "नव उज्ज्वल जलधार हार-हीरक-सी सोहति ।"
(२) "लोल लहर लहि"
(३) "सगर-सुवन सठ सहस"
३. 'कहुँ सुन्दरी नहात नीर कर जुगल उछारत,
जुग अम्बुज मिलि मुक्त-गुच्छ मनु सुच्छ निकारत ।' का अर्थ है—'कहीं पर स्नान करती हुई सुन्दरी अपने दोनों हाथों से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


गंगाजी के स्वच्छ जल को उछाल रही है। ऐसा जान पड़ता है मानो दो कमल मिलकर मोतियों की स्वच्छ लड़ी को निकाल रहे हों।'

यहाँ पर कवि ने सुन्दरी के हाथों की तुलना कमल से की है। गंगा का स्वच्छ जल कवि को मोतियों की लड़ी के समान लगता है। यह उत्प्रेक्षा अलंकार है। मनु, मानो, मानहु, जनु, जानो, जानहु, प्रतीत होता है, ऐसा लगता है आदि शब्दों से उत्प्रेक्षा अलंकार पहचाना जाता है।

इस पाठ में आये हुए उत्प्रेक्षा अलंकार छाँटकर लिखो।

४. निम्नलिखित शब्दों के खड़ी बोली के रूप लिखो—
सरिस, सरबस, उधारन, अगनित, सुच्छ।

५. 'श्री हरि······सुधारस' पंक्ति में 'हरि-पद-नख' में चन्द्रकान्तमनि का आरोप किया गया है। यहाँ 'रूपक' अलंकार है। रूपक अलंकार के अन्य उदाहरण छाँटो।

**आदेश**—गंगा की शोभा का वर्णन अपने शब्दों में करो।

## टिप्पणी

**हार-हीरक**=हीरों का हार। **चन्द्रकान्त**=एक मणि का नाम, जिसकी कान्ति और शीतलता चन्द्रमा के समान है। **द्रवित**=पिघला हुआ। **दीठि**=दृष्टि। **तितही**=वहीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ ३१

# कथाकार प्रेमचन्द

**[प्रस्तुत पाठ में हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार प्रेमचन्द के उपन्यास और कहानी-कला की विशेषताओं का विवेचन किया गया है। इस पाठ के लेखक श्री विश्वम्भर 'मानव' हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक हैं।]**

प्रेमचन्द हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार हैं। वे एक ऐसे कथाकार हैं, जिन्होंने उच्चकोटि के साहित्यिक उपन्यासों का सृजन ही नहीं किया वरन उपन्यास-कला के विकास को भी चरम सीमा तक पहुँचा दिया।

प्रेमचन्द के उदय और विकास का काल गाँधीवाद के उदय और विकास का काल है। कवियों में मैथिलीशरण गुप्त और कथाकारों में प्रेमचन्द गाँधीवाद के प्रबल समर्थक थे। काव्य और गद्य के क्षेत्र में ये दोनों ही दो ऊँचे प्रकाश-स्तम्भ हैं। अहिंसा को आधार बनाकर जो संघर्ष महात्मा गाँधी के नेतृत्व में बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रारम्भ हुआ, वह हमारे देश के राजनीतिक इतिहास की उज्ज्वलतम गाथा है। संसार के स्वाधीनता-संग्रामों में उसका अपना विशिष्ट स्थान है। इस आन्दोलन ने प्रेमचन्द के हृदय को छू लिया। इससे वे भारतीय जनता के सुख-दुःख, आशा-आकांक्षा के साथ अपने को एकाकार कर सके और उनका चित्रण करने में सफल हुए।

प्रेमचन्दजी ने अपन उपन्यासों में कुछ तो दहेज और आभूषण-प्रेम जैसी प्रचलित कुप्रथाओं और हानिकारक प्रवृत्तियों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



पर प्रहार किया है, कुछ विधवा-विवाह जैसी सामाजिक समस्याओं का समाधान ढूँढ़ निकाला है, कुछ शिक्षा, साम्प्रदायिकता और नैतिकता जैसे ज्वलन्त प्रश्नों पर विचार किया है, किन्तु सबसे अधिक उन्होंने अपने युग की राजनीतिक

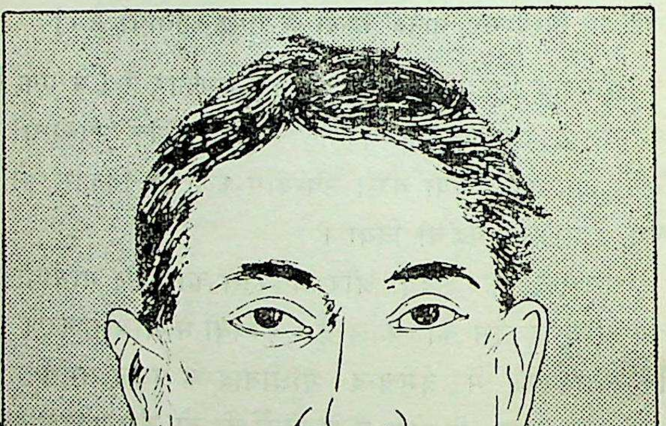

मुन्शी प्रेमचन्द

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



हलचल को प्रतिबिम्बित किया है। उनके उपन्यासों और कहानियों में चर्खा चलाने, विदेशी कपड़ों की होली जलाने, शराब की दुकानों पर धरना देने, अनशन करने और जेल जाने आदि के ऐसे प्रसंग पाये जाते हैं, जिनमें असहयोग आन्दोलन और सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दिनों का पूरा चित्र आँखों के सामने खड़ा हो जाता है। जमींदारों के विरुद्ध किसानों के आन्दोलन, नगरपालिका के विरुद्ध जनता के आन्दोलन, उद्योगपतियों के विरुद्ध मजदूरों के आन्दोलन में एक प्रकार से राष्ट्रीय आन्दोलन की चिनगारियां भरी पड़ी हैं।

हिन्दी में प्रेमचन्द के ग्यारह उपन्यास पाये जाते हैं, जिनमें सेवासदन, रंगभूमि, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि और गोदान विशेष प्रसिद्ध हैं। इनमें गोदान उनकी श्रेष्ठतम कृति है। यह उनकी कीर्ति का अमर स्मारक है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है, होरी। होरी भारतीय किसान का प्रतिनिधि है। गोदान की कहानी इसी किसान को लेकर चली है, जिसके चारों ओर मध्यम वर्ग का जीवन भी घूमता है। धनिया होरी की पत्नी है। वह एक सच्ची भारतीय नारी है, जो जीवन के अन्त तक सुख-दु:ख में अपने पति का साथ देती है।

गोदान में ग्राम्य-जीवन का सफल चित्रण हुआ है। प्रेमचन्द ग्राम्य-जीवन को चित्रित करने में कितने सिद्धहस्त थे, यह उससे सहज ही स्पष्ट हो जाता है। वस्तुतः प्रेमचन्द देश का हित किसानों के हित पर निर्भर समझते थे। इसलिए उनका हृदय मूलतः किसानों को ही समर्पित था। अपनी कहानियों में उन्होंने किसान के कितने ही चित्र उतारे हैं किन्तु

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होरी के रूप में तो उन्होंने पृथ्वीपुत्र का एक परिपूर्ण चित्र ही उतार कर रख दिया है।

उपन्यासों के अतिरिक्त प्रेमचन्दजी की लगभग ढाई सौ कहानियां प्रकाशित हुई हैं। हिन्दी में उनकी पहली कहानी 'सौत' सन् १९१५ में 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई थी। उनकी अधिकांश कहानियां 'मानसरोवर' के आठ भागों में संगृहीत हैं।

प्रेमचन्द की कहानियां जीवन के कुछ मार्मिक प्रसंगों को लेकर चलती हैं। ये प्रसंग सच्चे और महत्त्वपूर्ण होते हैं और इनके अन्तर्गत जो घटनाएं चुनी जाती हैं, वे परिचित-सी लगती हैं। इनके पात्र, चाहे नगर के हों या देहात के, इतने जीवन्त होते हैं कि थोड़ी ही देर में उनके साथ हमारी आत्मीयता स्थापित हो जाती है। उनके जीवन की समस्याएं एक प्रकार से हमारे ही जीवन की समस्याएं होती हैं, उनकी आशा-आकांक्षाएं, भय, सन्देह, सुख-दुःख हमारे जैसे ही होते हैं और इसी से हम उनके साथ जैसे हँसते-रोते, बनते-बिगड़ते मालूम पड़ते हैं।

प्रेमचन्द की भाषा बड़ी सरल और मुहावरेदार है। आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने ग्रामीण शब्दों का प्रयोग भी किया है। प्रसंगानुकूल होने के कारण उनकी भाषा मीठी और स्वाभाविक लगती है।

अन्य कथाकारों के बीच प्रेमचन्द हिमगिरि की उच्चतम चोटी के समान दिखायी देते हैं। उनकी महत्ता इस बात में है कि विषय की दृष्टि से उनका क्षेत्र व्यापक है और उनकी अनुभूति गहरी है। उनके ग्रन्थों में देश तथा उस युग का एक विराट चित्र मिलता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस महान साहित्यकार का जन्म वाराणसी से चार मील दूर लमही ग्राम में शनिवार ३१ जुलाई, सन् १८८० ई० को हुआ था। इनके पिता का नाम अजायबलाल और माता का नाम आनन्दी देवी था। बचपन का इनका नाम धनपतराय था।

प्रेमचन्द का बचपन बड़े अभावों में व्यतीत हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू में हुई थी और उर्दू में ही उन्होंने लिखना आरम्भ किया था। उर्दू में वे नवाबराय के नाम से लिखा करते थे और बहुत प्रसिद्ध हो गये थे। सन् १९०९ में जब 'सोजे वतन' नाम का इनका पहला कहानी-संग्रह प्रकाशित हुआ तो उसके विद्रोही स्वर के कारण उसे जब्त कर लिया गया और उसकी शेष प्रतियां उनके सामने ही जलवा दी गयीं। वे लिखना बन्द नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्होंने अपना नाम बदल दिया और 'प्रेमचन्द' के नाम से लिखने लगे। आगे चलकर यह नाम इतना प्रसिद्ध हुआ कि उनका वास्तविक नाम छिप गया।

प्रेमचन्द की आकृति जैसी सरल थी, वैसा ही सरल था उनका सम्पूर्ण साहित्य। उलझे बाल, घनी मूँछें, खद्दर के कपड़े और मुक्त हास्य। यह था उनका व्यक्तित्व। कृत्रिमता उनके जीवन में कहीं नहीं थी—न स्वभाव में, न व्यवहार में, न साहित्य में। ८ अक्टूबर, सन् १९३६ को उनकी मृत्यु हुई। यद्यपि वे अब हमारे बीच में नहीं हैं, तथापि उनके कथा-साहित्य के अध्ययन से हमें ऐसा आभासित होने लगता है, जैसे हम आज भी उस महान व्यक्ति के सम्पर्क में हों।

—विश्वम्भर 'मानव'

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. प्रेमचन्द को गाँधीयुग का 'प्रकाश स्तम्भ' क्यों कहा गया है ?

२. प्रेमचन्द के उपन्यासों में किन-किन सामाजिक समस्याओं का चित्रण है ?

३. 'गोदान' उपन्यास क्यों प्रसिद्ध है ?

४. प्रेमचन्द की कहानियों के पात्रों की लेखक ने क्या-क्या विशेषताएं बतायी हैं ?

५. लेखक ने प्रेमचन्द के व्यक्तित्व का किस प्रकार चित्रण किया है ?

**अभ्यास**

१. निम्नलिखित वाक्यांशों का अर्थ स्पष्ट करो—
चरम सीमा, उज्ज्वलतम गाथा, हानिकारक प्रवृत्तियों, ज्वलन्त प्रश्न, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, मुक्त हास्य, सिद्धहस्त ।

२. 'कुप्रथा' में 'कु' का अर्थ है 'कुत्सित' (खराब) और 'प्रथा' का अर्थ है 'रिवाज' । 'कु' विशेषण है और 'प्रथा' विशेष्य । इन दोनों शब्दों को एक साथ मिला दिया गया है । इस प्रकार विशेषण और विशेष्य को एक साथ मिलाकर रखने को कर्मधारय समास कहते हैं ।

इस पाठ में आये हुए कर्मधारय समास के अन्य उदाहरण छाँटो ।

**आदेश**—अपने पुस्तकालय से प्रेमचन्द की कहानियों का संग्रह लेकर पढ़ो और किसी एक कहानी का सारांश लिखो ।

## टिप्पणी

**सृजन**=रचना । **विशिष्ट**=विशेष । **एकाकार करना**=एक रूप कर देना । **समाधान**=हल । **सिद्धहस्त**=निपुण । **जीवन्त**=सजीव । **आकृति**=शक्ल, सूरत । **कृत्रिमता**=बनावट, अस्वाभाविकता ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ ३२

# अध्ययन

[पंडित रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी के सुप्रसिद्ध आलोचक एवं निबन्धकार थे। उनके 'अध्ययन' शीर्षक निबन्ध को छात्रों के अनुकूल बनाकर संकलित किया गया है। इस निबन्ध में उन्होंने बताया है कि अध्ययन आनन्द-प्राप्ति का ही एक मात्र साधन नहीं, वरन वह हमारे आत्म संस्कार और चरित्रगठन में भी सहायक होता है। इसमें यह भी बताया गया है कि अध्ययन किस प्रकार करना चाहिए।]

अध्ययन ज्ञान की वृद्धि और आनन्द की प्राप्ति का एक प्रधान साधन है। वह आत्मसंस्कार के विधान का एक अंग भी है। किसी जाति के साहित्य में गति प्राप्त करने का और कोई द्वार नहीं है। किसी जाति के भाव और विचार साहित्य में ही व्यक्त रहते हैं तथा उसी में उसकी उन्नति के क्रम का लेखा रहता है। मनुष्य जाति के सुख और कल्याण के विषय में संसार के प्रतिभा-सम्पन्न लोगों ने जो सिद्धान्त स्थिर किये

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हैं, उन्हें जानने का साधन स्वाध्याय ही है। जो पढ़ता नहीं उसे इसकी खबर ही नहीं रहती कि मनुष्य की ज्ञान-परम्परा किस सीमा तक पहुँच चुकी है। वह अन्धकार में गिरता-पड़ता है, टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियों में भटकता फिरता है और यह जानता ही नहीं कि मनुष्यों के श्रम से एक प्रशस्त मार्ग तैयार हो चुका है।

अध्ययन से हम अपने दैनिक जीवन में शिक्षा और प्रेरणा ग्रहण करते हैं। अध्ययन से ही भूतकाल की घटनाएं हमारे अन्तःकरण में प्रत्यक्ष होती हैं और उससे बड़े-बड़े राज्यों की उत्पत्ति एवं उनके उत्थान और पतन का पता चलता है। अध्ययन से ही हमें यह भी विदित होता है कि किस प्रकार मनुष्य की सभ्यता का प्रवाह कभी रुकता और कभी पीछे हटता, किन्तु अनिवार्य वेग के साथ बहता हुआ आगे ही बढ़ता आया है और अनेक विघ्न-बाधाओं को पारकर तथा भयानक कष्टों और आपत्तियों को झेलकर मनुष्य क्रमशः उन्नति करता रहा है।

अध्ययन के द्वारा हम घर बैठे बड़े-बड़े विद्वानों के गम्भीर विचारों को जान सकते हैं और संसार भर के प्राचीन महापुरुषों के सत्संग का लाभ उठा सकते हैं। अध्ययन हमें अतुल ज्ञान-भांडार से परिचित कराता है। भवभूति और कालिदास अपने काव्य द्वारा हमारे सामने उपस्थित रहते हैं। जब हमारा जी चाहे तब जायसी की कहानी सुनें, जब मन में आये अन्धे सूर के प्रेम और चतुराई से भरे पद पढ़ कर रसमग्न हों और जब चाहे गोस्वामी तुलसीदासजी की गम्भीर गिरा से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपने उद्विग्न मन को शान्त करने के लिए रामचरित देखकर पुलकित हों।

पुस्तकों के द्वारा हम किसी महापुरुष को जितना अधिक जान सकते हैं उतना उसके मित्र, पुत्र और कलत्र भी नहीं जान पाते। जो ग्रन्थकार अपने समय में आसपास के लोगों से बोलने-चालने में संकोच करते होंगे, वे अध्ययनशील पुरुष के निकट एकान्त में अपनी पुस्तकों द्वारा हृदय को बेधड़क खोल कर रख देते हैं। उनकी सारी प्रकृति हमारे सामने आ जाती है।

विद्याभ्यासी पुरुष को साथियों का अभाव कभी नहीं रहता, उसकी कोठरी में सदा ऐसे लोगों का वास रहता है, जो अमर हैं। वे उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करने और उसे समझाने के लिए सदा प्रस्तुत रहते हैं। कवि, दार्शनिक और विद्वान, जिन्होंने प्रकृति के रहस्यों का उद्घाटन किया है और बड़े-बड़े महात्मा, जिन्होंने आत्मा के गूढ़ रहस्यों की थाह लगा ली है, सदा उसकी बातें सुनने और उसकी शंकाओं का समाधान करने के लिए उद्यत रहते हैं।

बिना किसी उद्देश्य के सरसरी तौर पर पुस्तकों के पन्ने उलटते जाना अध्ययन नहीं है। लिखी हुई बातों को विचार-पूर्वक पूर्ण रूप से हृदय से ग्रहण करने का नाम अध्ययन है। प्रत्येक स्त्री-पुरुष को अपने पढ़ने का उद्देश्य स्थिर कर लेना चाहिए। इसके लिए सबसे मुख्य बात यह है कि पढ़ना नियम-पूर्वक हो अर्थात इसके लिए नित्य का समय निश्चित होने की आवश्यकता है। एकाग्रचित्त अध्ययन के लिए प्रातःकाल का

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समय उपयुक्त होता है। सूरदास के विषय में प्रसिद्ध है कि वे नित्य सवेरे स्नानादि के उपरान्त कुछ पद बनाकर ही जल-पान करते थे। प्रातःकाल का समय न मिलने पर सुभीते के लिए कोई भी समय रखा जा सकता है, चाहे सवेरे का समय हो, चाहे रात का, चाहे एक घंटे का समय हो, चाहे दो-तीन घंटे का। नियम का दृढ़ता से पालन होना चाहिए।

अध्ययन में बार-बार दोहराने की क्रिया भी करनी पड़ती है, जिससे पढ़ी हुई बात मन में बैठ जाय। जब मैं किसी पुस्तक का एक प्रकरण पढ़ चुकता हूँ तो पुस्तक बन्द करके उसमें आयी हुई मुख्य बातों को ध्यान में लाता हूँ। इसी क्रम से मैं एक-एक प्रकरण पढ़ता जाता हूँ। जब पुस्तक समाप्त हो जाती है तो मैं सारी पुस्तक का अनुक्रम एक-एक प्रकरण करके मन में धारण करता हूँ और पुस्तक की सारी बातों को दोहरा जाता हूँ।

अध्ययन में नोट बुक रखने से बड़ी सहायता मिल सकती है। जो पुस्तक तुम पढ़ो उसके चमत्कारपूर्ण अंशों को लिखते जाओ, जिससे विद्वान और प्रतिभाशाली व्यक्तियों की उक्तियों को संचित रखने से, अवसर पड़ने पर, तुम्हें शान्ति, उपदेश और उत्साह मिल सके। यदि पुस्तक तुम्हारी ही है तो पृष्ठ के किनारे ऐसे स्थलों पर निशान करते जाओ, जो बार-बार पढ़ने योग्य हों, जिनमें कोई सुन्दर उक्ति हो, जो सन्दिग्ध हों अथवा जिनके विषय में छानबीन आवश्यक है। पढ़ने के विषय में हमको यह बात स्मरण रखना चाहिए कि जो कुछ हमें रुचे उसे अच्छी प्रकार पढ़ें और चिन्तन करें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


एक समस्या यह भी है कि कौन-सी पुस्तकें पढ़ी जायँ और कौन-सी न पढ़ी जायँ। भोजन-सामग्री की भाँति कुछ पुस्तकें अच्छी होती हैं, कुछ बुरी। प्रतिकूल भोजन के समान निकृष्ट पुस्तकें त्याग देनी चाहिए। जिन पुस्तकों की विषय वस्तु दूषित है, शब्दावली आडम्बरपूर्ण है, विचार निकम्मे हैं वे हानिकर होती हैं। सामान्यतः अच्छी पुस्तकें काल और स्थान की सीमा को पार कर आगे बढ़तीं रहती हैं। अध्ययनशील व्यक्ति का कर्तव्य, जो कुछ पुस्तक हाथ लगे, उसका पढ़ना मात्र ही नहीं है, बल्कि अच्छी, उपयोगी और सुरुचिपूर्ण पुस्तकें चयन करना भी सीखना है। तभी अध्ययन आत्मसंस्कार और चरित्र-गठन में सहायक हो सकता है। (अनुकूलित)

—रामचन्द्र शुक्ल

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. अध्ययन से क्या लाभ हैं ?
२. इतिहास के ज्ञान से हमें क्या लाभ होता है ?
३. पुस्तकों द्वारा किस प्रकार महापुरुषों का सत्संग प्राप्त होता है ?
४. विद्याभ्यासी को साथियों का अभाव क्यों नहीं रहता ?
५. अध्ययन किस प्रकार करना चाहिए ?

**अभ्यास**

१. अध्ययन की विधि पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखो और बताओ कि नियम का पालन इसके लिए क्यों नितान्त आवश्यक है
२. नीचे लिखे प्रश्न के तीन उत्तर दिये हुए हैं। इनमें एक ही सही है। सही उत्तर बताओ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


(१) अध्ययन हमारे लिए क्यों आवश्यक है ?

(क) इसलिए कि अध्ययन धन-प्राप्ति का मुख्य साधन है।

(ख) इसलिए कि अध्ययन आनन्द और ज्ञान-प्राप्ति का साधन है।

(ग) इसलिए कि अध्ययन से प्रातः उठने का अभ्यास हो जाता है।

३. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखो—

सत्संग, व्यवस्थित, शान्त, प्रत्यक्ष, उन्नति, उत्थान।

४. निम्नलिखित शब्दों का अपने बनाये हुए वाक्यों में प्रयोग करो—

पुलकित, उद्विग्न, आत्मसंस्कार, प्रतिभासम्पन्न।

**आदेश**—चरित्रगठन में अध्ययन किस प्रकार सहायक हो सकता है, इस पर संक्षिप्त निबन्ध लिखो।

## टिप्पणी

**स्वाध्याय**=(स्व+अध्याय) स्वयं पढ़ना। **अन्तःकरण**=हृदय। **गिरा**=वाणी। **कलत्र**=स्त्री। **अनुक्रम**=क्रम के अनुसार। **सन्दिग्ध**=सन्देह पूर्ण।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३३

# ग्राम देवता

[इस कविता में कवि ने किसान को 'ग्राम-देवता' कह कर उसका अनेक रूपों में अभिनन्दन किया है। इस कविता के रचयिता डा० रामकुमार वर्मा हिन्दी के प्रसिद्ध एकांकीकार भी हैं।]

हे ग्राम-देवता नमस्कार !
सोने चाँदी से नहीं किन्तु
तुमने मिट्टी से किया प्यार
हे ग्राम-देवता नमस्कार !

जन - कोलाहल से दूर
कहीं एकाकी सिमटा-सा निवास
रवि-शशि का उतना नहीं
कि जितना प्राणों का होता प्रकाश।
श्रम-वैभव के बल पर करते
हो जड़ में चेतन का विकास।
दानों - दानों से फूट रहे
सौ - सौ दानों के हरे हास।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


यह है न पसीने की धारा,
यह गंगा की है धवल धार।
हे ग्राम-देवता नमस्कार !

अधखुले अंग, जिनमें केवल
हैं कसे हुए कुछ अस्थि-खंड।
इनमें दधीचि की हड्डी है
यह वज्र इन्द्र का है प्रचंड।
जो है गतिशील सभी ऋतु में
गर्मी, वर्षा हो या कि ठंड।
जग को देते हो पुरस्कार,
देकर अपने को कठिन दंड।

झोंपड़ी झुकाकर तुम अपनी,
ऊँचे करते हो राजद्वार।
हे ग्राम-देवता नमस्कार !

ये राम-श्याम के सरल रूप
मटमैले शिशु, हँस रहे खूब।
ये मुन्ना, मोहन, हरे कृष्ण,
मंगल, मुरली, बच्चू, बिठूब।
इनको क्या चिन्ता व्याप सकी
जैसे धरती की हरी दूब।
थोड़े ही दिन में ठंड झड़ी
गर्मी सब इनमें गयी डूब।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


ये ढाल अभी से बने
झेल लेने को दुर्दिन का प्रहार।
हे ग्राम-देवता नमस्कार !

तुम जन-गन मन अधिनायक हो,
तुम हँसो कि फूले-फले देश।
आओ, सिंहासन पर बैठो
यह राज्य तुम्हारा है अशेष।
उर्वरा भूमि के नये खेत
के नये धान्य से सजे वेश।
तुम भू पर रह कर भूमि भार
धारण करते हो मनुज-शेष।

अपनी कविता से आज तुम्हारी
विमल आरती लूँ उतार।
हे ग्राम-देवता नमस्कार !

—डा० रामकुमार वर्मा

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. किसान को ग्रामदेवता क्यों कहा गया है ?
२. 'जड़ में चेतन का विकास' का क्या तात्पर्य है ?
३. किसान के पसीने को कवि ने 'गंगा की धवल धार' क्यों कहा है ?
४. कवि ने किसान के बच्चों की तुलना किन वस्तुओं से की है और क्यों ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


५. किसान का हम पर क्या उपकार है ?
६. 'आओ सिंहासन पर बैठो' पंक्ति में 'सिंहासन' शब्द से कवि किस ओर संकेत कर रहा है ?
७. किसान को 'मनुज-शेष' क्यों कहा गया है ?

**अभ्यास**

१. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो—
(अ) रवि शशि········प्रकाश ।
(ब) झोपड़ी झुकाकर·········राजद्वार ।
(स) दानों-दानों········हरे घास ।
२. दधीचि और इन्द्र के वज्र की अन्तःकथाओं का वर्णन करो ।

**आदेश**—प्रस्तुत कविता को आधार बनाकर किसान की जीवनचर्या पर एक निबन्ध लिखो ।

## टिप्पणी

**कोलाहल**=हलचल, शोर । **धवल**=श्वेत । **दुर्दिन**=बुरे दिन । **अधिनायक**=सरदार, मुखिया । **अशेष**=सम्पूर्ण । **उर्वरा**=उपजाऊ । **मनुज-शेष**=मनुष्य के रूप में शेषनाग ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३४

# मेरी मास्को यात्रा

[प्रस्तुत पाठ में डा० नगेन्द्र ने अपनी मास्को यात्रा का बड़ा प्रभावी वर्णन किया है। इससे मास्को नगर की विशेषता, रूसवासियों की महानता और उनकी वैज्ञानिक प्रगति का पता चलता है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि हमारे देश के प्रति रूस में कितनी सद्भावना है। डा० नगेन्द्र हिन्दी के प्रख्यात आलोचक हैं।]

१६ अगस्त, सन् १९६७ को दिन के लगभग ढाई बजे अपने नियत समय पर हमारा वायुयान मास्को के हवाई अड्डे पर पहुँच गया। उतरते हुए विमान से मास्को का वह दिगन्त विस्तार और विराट ऐश्वर्य अद्भुत लगा। वहाँ के विशाल वायुयानों को देखकर पुराणों की यह कल्पना साकार हो उठी कि आदिम युग में पर्वत भी उड़ा करते थे। इस नगर के वैभव को देखकर मानव के असीम गौरव का प्रभाव मन पर पड़े बिना नहीं रहता।

मास्को का रूसी नाम मस्कवा है। सोवियत संघ का यह सबसे बड़ा शहर है और विश्व के विशाल नगरों में से एक है। इसका नामकरण मस्कवा नदी के नाम पर हुआ है, जो अब शहर के बीच में होकर बहती है। नगर की आबादी करीब पैंसठ लाख है और उसका इतिहास लगभग आठ सौ वर्ष पुराना। द्वितीय विश्वयुद्ध में मास्को की रक्षा सोवियत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


संघ के लिए न केवल राष्ट्रीय सम्मान का वरन जीवन-मरण का प्रश्न बन गयी थी। इस रक्षा-युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद मास्को को सबसे बडा राजकीय सम्मान मिला था।

विमान से उतरते ही मैत्री-संघ के सदस्यों ने हमारा स्वागत किया। हमारे आवास की व्यवस्था मास्को नगर के एक आलीशान होटल में की गयी थी। जिसमें बीस मंजिलें हैं। नयी होने पर भी इस होटल की इमारत में मध्ययुगी शैली का प्रयोग है।

उसी दिन शाम को मैत्री-भवन में भारतीय स्वतन्त्रता पर्व का आयोजन था, जिसमें सोवियत संघ के उपप्रधान मन्त्री, अनेक वरिष्ठ अधिकारी, भारतीय दूतावास के सदस्य तथा अने- प्रवासी भारतीय नर-नारी उपस्थित थे। वहाँ जो भाषण हुए, उनमें भारत के प्रति हार्दिक सौहार्द व्यक्त किया गया था। उनके व्यवहार से भी स्पष्ट था कि वे हृदय से भारत की सुख-शान्ति के अभिलाषी हैं।

अभिनन्दन के उपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन था। वहाँ के संगीत को सुनकर लगता था मानो पर्वत कन्दराओं में मेघों का गम्भीर घोष प्रतिध्वनित हो रहा है। इस कार्यक्रम में सबसे आकर्षक था पुतलियों का खेल। रूस में पुतलियों का खेल विकसित कला का रूप ले चुका है। मास्को में इसके लिए अलग मंच बना हुआ है, जहाँ छोटे-छोटे रूपकों का प्रदर्शन होता है। हम लोगों के सामने पाँच-छह पुतलियों द्वारा एक छाया नाटक प्रस्तुत किया गया। पुतलियां बडी तो उतनी ही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थीं जितनी हमारे यहाँ प्रायः होती हैं, परन्तु पर्दे पर उनकी छाया सामान्य स्त्री-पुरुष की छाया जान पड़ती थी। वे उसी तरह उठती-बैठतीं, चलती-फिरतीं तथा व्यवहार करती थीं, उसी तरह अपने राग, द्वेष, शोक, क्रोध आदि व्यक्त करती थीं जिस तरह साधारण मनुष्य करते हैं। उनके संवाद टेप पर अंकित थे, जो साथ-साथ सुनायी पड़ते थे। छाया प्रकाश का प्रयोग इतना व्यवस्थित था कि पुतलियों की सूक्ष्म मुद्राएं भी स्पष्ट दिखायी पड़ती थीं।

मास्को में न जाने कितने ऐसे सिनेमाघर हैं, जहाँ नगर की जन-संख्या का एक प्रतिशत भाग (लगभग ६५ हजार व्यक्ति) एक साथ बैठकर मनोरंजन कर सकता है। बोल्शोई थियेटर और आटे थियेटर सबसे प्रसिद्ध हैं। हम लोग १८ तारीख की शाम को टाल्सटाय के प्रसिद्ध उपन्यास 'युद्ध और शान्ति' पर आधारित फिल्म के युद्ध-दृश्य देखने गये। इस फिल्म में 'युद्ध और शान्ति' में वर्णित संग्राम के भयंकर दृश्यों को पूरे विस्तार के साथ अत्यन्त यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया था। सिनेमा का एक नया रूप भी हमने प्रदर्शनी में देखा, जिसमें दर्शक बीच में खड़ा होकर चारों ओर पर्दों पर घूमते हुए दृश्यों का अंग बन जाता है। चित्रशालाएं भी वहाँ काफी हैं, जिनमें प्रायः युद्ध के और विशेषकर अक्टूबर, सन् १९१७ की क्रान्ति के चित्र प्रदर्शित हैं। रूस की चित्रकला में शक्ति एवं यथार्थता का प्राधान्य है। रंग गाढ़े और चटकीले, रेखाएं पुष्ट और गहरी हैं। ऐसा विश्वास है कि प्रारम्भ से ही इस तरह के चित्र देखने से जनता जीवन-संघर्ष के लिए तैयार हो जाती है,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


बच्चों के दिल मजबूत हो जाते हैं और युद्ध का भय उनके दिल से निकल जाता है।

मैत्री संघ की ओर से गोर्की संग्रहालय और टाल्सटाय संग्रहालय के निरीक्षण करने का मेरे लिए प्रबन्ध था। गोर्की रूस के प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं। उनकी रचनाओं में मानव मात्र की सामानता का चित्रण किया गया है। गोर्की ने अपने जीवन के अन्तिम पाँच वर्ष सन् १९३१ से १९३६ तक इसी स्थान पर व्यतीत किये थे। संग्रहालय में प्रवेश करने के पहले ऊन के जूते पहनने पड़ते हैं। इसमें दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धा की भावना निहित है। रूस के विद्वान इस महान उपन्यासकार की रचनाओं को समझने के लिए इस संग्रहालय का उपयोग करते हैं। गोर्की के पुस्तकालय में लगभग दस हजार ग्रन्थ जिनमें अनेक दुर्लभ ग्रन्थों के प्रथम संस्करण और अनेक ग्रन्थो की उपहार प्रतियां उपलब्ध हैं।

टाल्सटाय का मुख्य आवास और संग्रहालय यास्नाया पोलियाना में है, जो मास्को से लगभग दो सौ किलोमीटर दूर है। वहाँ मैं न जा सका परन्तु मास्को के टाल्सटाय के शीत-कालीन आवास में स्थित संग्रहालय को मैंने देखा। यह आवास एक विशाल उद्यान में है। यहाँ एक ओर टाल्सटाय के कुल की सामन्तीय गरिमा और दूसरी ओर उनके व्यक्तिगत जीवन की सादगी का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखायी दे रहा था। काफी बड़ा आहार कक्ष था जो कीमती साज-सामान से सुसज्जित था। उनका शयन कक्ष भी राजसी साज-सज्जा से सम्पन्न था। यह जानकर आश्चर्य होगा कि टाल्सटाय की पत्नी आग्रह के साथ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
अपने पति की रचनाओं की पांडुलिपि स्वयं ही तैयार करती थीं। 'युद्ध और शान्ति' की पांडुलिपि का टाल्सटाय ने कई बार संशोधन किया था और प्रत्येक बार उनकी पत्नी ने अपने हाथ से ही पांडुलिपि तैयार की थी। टाल्सटाय की कहानियों में शान्ति और अहिंसा का सन्देश है।

रूस में हिन्दी, उर्दू, बंगला, मराठी, पंजाबी तथा दक्षिण भारत की भाषाओं के अनेक लेखक नियमित रूप से अनुवाद कार्य करते हैं। एक वर्ष में लगभग बीस-पच्चीस अच्छे ग्रन्थों का अनुवाद पूरा हो जाता है। विश्व की अन्य भाषाओं के ज्ञान-विज्ञान के साहित्य का अनुवाद रूसी भाषा में बराबर होता रहता है जिससे विश्व साहित्य जनता को अपनी भाषा में निर्बाध रूप से मिलता रहे। 'एशिया प्रतिष्ठान' में एशिया के देशों के साहित्य, इतिहास आदि के अध्ययन तथा शोध का प्रबन्ध है। इस प्रतिष्ठान से प्रेमचन्द पर एक उपयोगी निर्देशिका प्रकाशित हो चुकी है और आजकल 'बृहत साहित्य कोश' के लिए हिन्दी के लेखकों का परिचय तैयार हो रहा है।

मास्को विश्वविद्यालय की स्थापना सन् १७५५ में श्री लोमोनोसोव ने की थी। यह विश्वविद्यालय संसार के सर्व प्रमुख शिक्षा केन्द्रों में है। विश्वविद्यालय भवन चौंतीस मंजिल का है और इसमें एक हजार सात सौ प्रयोगशालाएं हैं, जो ज्ञान-विज्ञान के नवीनतम साधनों से सम्पन्न हैं। इसमें तीस हजार विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। अध्यापकों की संख्या लगभग चार हजार है।

रूस में पन्द्रह राज्य हैं और कम-से-कम उतनी ही भाषाएं, परन्तु शासन ने बड़ी आसानी से भाषा की समस्या हल कर ली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। प्रत्येक छात्र अपने राज्य की भाषा के साथ गणराज्य की रूसी भाषा का अध्ययन करता है। उच्चतर शिक्षा के लिए उसे दोनों में से किसी एक को चुनने का अधिकार है।

मास्को में एक विकास प्रदर्शनी का स्थायी आयोजन है। इस प्रदर्शनी में सोवियत संघ की उपलब्धियों की झाँकी अनायास ही मिल जाती है। यहाँ हमने अन्तरिक्ष यान के माडेल का समीप जाकर निरीक्षण किया। अन्तरिक्ष-विज्ञान-कक्ष में रूस की उपलब्धियों के अनेक चित्र मेरे मानस-पटल पर उभर आये—यूरी गैगरीन, जिसने सर्वप्रथम अन्तरिक्ष यान द्वारा भूमंडल की परिक्रमा की और पृथ्वी के विशाल गोले को अपनी आँखों घूमते हुए देखा, रूस के अन्तरिक्ष यान जो निरापद चन्द्रमा और शुक्र पर उतरे और जिन्होंने विज्ञान की विजय का शंखनाद किया तथा उसके सैकड़ों कृत्रिम चन्द्र, जो आज भी भूमंडल की निरन्तर परिक्रमा कर रहे हैं।

सोवियत संघ के राष्ट्रीय एवं राजनीतिक जीवन का केन्द्र क्रेमलिन है। संसद भवन, सचिवालय आदि यहीं हैं। यहीं वह प्रसिद्ध लाल चौक, (रेड स्क्वायर) है, जहाँ अक्टूबर की महान क्रान्ति के अवसर पर सोवियत राष्ट्र का विशाल सैनिक प्रदर्शन होता है। क्रान्ति के पूर्व रूस के प्राचीन शासकों का राज्यागार यहीं था। राजभवन के एक भाग में अब 'ऐतिहासिक संग्रहालय' बन गया है। क्रेमलिन में बड़ी भीड़ थी जो प्रायः नित्य ही रहती है। लेनिन-समाधि क्रेमलिन का हृदय और मास्को का पुण्य तीर्थ है। यहाँ दर्शकों की भीड़ प्रायः तीन-चार मील तक हो जाती है। सोवियत संघ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की जनता, देश-विदेश के लोग, आबाल वृद्ध नर-नारी, धूप और हिमपात की चिन्ता न कर निश्चल भाव से पंक्तिबद्ध खड़े रहते हैं। लेनिन की समाधि के भीतर मन्दिर का-सा वातावरण था, वैसी ही पवित्र शान्ति और भौतिक बन्धनों से मुक्त होने की वैसी ही भावना।

मास्को में जो कुछ मैंने देखा, मेरे मन पर उसके स्पष्ट और स्थायी चित्र अंकित हुए हैं। यहाँ के लोगों के संयत आचरण की भी मेरे मन पर स्पष्ट छाप है।

२१ अगस्त की रात को साढ़े ग्यारह बजे, जब दिल्ली में रात के दो बजे थे, रूस के एक विशाल वायुयान द्वारा मैं दिल्ली के लिए रवाना हो गया। कुछ निद्रा और कुछ तन्द्रा के बाद मैंने देखा कि सूर्य का प्रकाश गवाक्षों से आ रहा है और आध घंटे के भीतर घोषणा सुनायी पड़ी कि पालम अड्डे पर हमारा हवाई जहाज उतरने वाला है। और, पालम आ गया। वही चिर परिचित पालम—दिल्ली का सिंह-द्वार, दिल्ली—जहाँ मेरा विश्वविद्यालय है, मेरा अध्ययन-कक्ष है, परिजन, प्रियजन से भरा मेरा आवास है।

कितना महान था वह मित्र देश, पर कितना प्रिय है यह मेरा देश।

—डा० नगेन्द्र

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. उतरते हुए विमान से मास्को को देखकर लेखक के मन में क्या भाव उत्पन्न हुए ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



२. पुतलियों के खेल की क्या विशेषताएं थीं ?
३. मास्को में मनोरंजन के कौन-कौन से मुख्य साधन हैं ? उनसे लोगों का किस प्रकार मनोरंजन होता है ?
४. गोर्की की रचनाओं का मुख्य सन्देश क्या है ?
५. मास्को विश्वविद्यालय की प्रमुख विशेषताएं क्या हैं ?
६. रूस में भाषा की समस्या किस प्रकार हल की गयी है ?
७. लेनिन की समाधि का दर्शन रूसवासी श्रद्धा के साथ क्यों करते हैं ?
८. क्रेमलिन को सोवियत संघ के राजनीतिक जीवन का केन्द्र क्यों माना जाता है ?

**अभ्यास**

१. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो—
(क) उसके संगीत में.................प्रतिध्वनित हो रहा है।
(ख) लेनिन समाधि.................पुण्य तीर्थ है।
(ग) कितना महान था..............प्रिय है यह मेरा देश।
२. निम्नलिखित शब्दों एवं मुहावरों का अर्थ लिखो और अपने बनाये हुए वाक्यों में उनका प्रयोग करो—
दिगन्त विस्तार, दृष्टि को बाँध लेना, असीम गौरव, जीवन-मरण का प्रश्न, तन्द्रा।

**आदेश**—मास्को का वर्णन अपने शब्दों में करो।

## टिप्पणी

**दिगन्त**=दिशाओं के अन्त तक। **आयाम**=विस्तार। **वास्तुशैली**=भवन-निर्माण कला। **गरिमा**=गुरुता, गौरव। **निर्बाध**=बाधा रहित। **राज्यागार**=राजभवन। **गवाक्ष**=झरोखा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## पाठ ३५

# परमाणु ऊर्जा

[परमाणु-ऊर्जा वर्तमान विज्ञान की बड़ी उपयोगी देन है। इसका अध्ययन भारतीय वैज्ञानिक भी बड़े अध्यवसाय से कर रहे हैं। इसके विकसित होने पर हमारे जीवन के सभी पक्षों में क्रान्ति आ सकती है। प्रस्तुत पाठ में परमाणु-ऊर्जा के अन्वेषण उसके विकास तथा विविध उपयोगों का विस्तृत वर्णन किया गया है।]

अग्नि का प्रयोग मनुष्य न जाने कब से कर रहा है। इसकी सहायता से हम भोजन बनाते हैं, पानी गरम करते हैं, इसी की सहायता से भाप के इंजन संचालित होते हैं और बहुत से उद्योग-धन्धे भी चलते हैं। बिजली उत्पन्न करनेवाले अनेक यन्त्रों में भी ऊष्मा का उपयोग किया जाता है। हमारी मोटरों, ट्रैक्टरों, डीजल गाड़ियों और विमानों के इंजन भी खनिज तेल के प्रज्वलन से प्राप्त शक्ति द्वारा ही चलते हैं। प्रज्वलन अथवा ईंधन के जलने से हमें ऊष्मा प्राप्त होती है, जो ऊर्जा का एक रूप है। वैज्ञानिकों का कथन है कि जलाने पर पदार्थ में विद्यमान ऊर्जा का लगभग एक अरबवां भाग ही हमें प्राप्त होता है। अतः यदि प्रज्वलन के आधार पर समस्त विश्व के कल-कारखाने चलते रहेंगे तो शीघ्र ही प्रकृति के ईंधन के भांडार समाप्त हो जायेंगे। इसलिए मानव-विकास की प्रगति के लिए यह आवश्यक है कि ऊर्जा-प्राप्ति के लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



हम प्रज्वलन द्वारा ऊर्जा प्राप्त करने के मार्ग के अतिरिक्त किसी दूसरे मार्ग की खोज करें।

बीसवीं शताब्दी के वैज्ञानिकों ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण अनुसन्धान किये हैं। आइंस्टीन नामक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक ने द्रव्य एवं ऊर्जा के परस्पर सम्बन्धों का बहुत सूक्ष्म विश्लेषण किया तथा यह सिद्ध किया कि पदार्थ की बहुत सूक्ष्म संहति अपार ऊर्जा में परिवर्तित हो सकती है। उदाहरणार्थ यदि पाँच सौ ग्राम पत्थर कोयले की सम्पूर्ण संहति को ऊर्जा में परिवर्तित कर दिया जाय तो इतनी ऊर्जा प्राप्त होगी कि उसकी सहायता से संसार का बड़े से बड़ा जलयान अथवा वायुयान समस्त पृथ्वी का चक्कर आसानी से लगा लेगा। एक मोटरगाड़ी को महीनों चलाने के लिए तो पचास ग्राम पत्थर कोयला ही पर्याप्त हो सकता है। प्रज्वलन से प्राप्त ऊर्जा तो इसके सम्मुख नगण्य ही कही जायगी।

प्रश्न यह उठता है कि द्रव्य में विद्यमान अपार ऊर्जा को किस प्रकार प्राप्त किया जाय? वैज्ञानिकों ने बताया है कि परमाणु-विखंडन द्वारा यह ऊर्जा प्राप्त हो सकती है। इस प्रक्रिया को समझने के लिए परमाणु-रचना का कुछ ज्ञान आवश्यक है। विश्व में जितने भी पदार्थ पाये जाते हैं वे या तो तत्त्व हैं या तत्त्वों से निर्मित हैं। उदाहरणार्थ आक्सीजन, हाइड्रोजन, कार्बन, लोहा, सोना, ताँबा आदि तत्त्व हैं परन्तु पानी तत्त्व नहीं है, वह योग है और आक्सीजन एवं हाइड्रोजन से मिल कर बनता है। पर तत्त्व किससे बनते हैं? वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि तत्त्व परमाणुओ से निर्मित है, तथा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
भिन्न-भिन्न तत्त्वों के परमाणु भी भिन्न प्रकार के होते हैं। किसी तत्त्व का परमाणु वह सूक्ष्मतम कण है, जिसमें उस तत्त्व के सभी गुण-धर्म विद्यमान है। विभिन्न परमाणुओं के संयोग से ही सृष्टि की रचना हुई है। इन परमाणुओं को प्रबल से प्रबल सूक्ष्मदर्शी द्वारा भी नहीं देखा जा सकता। परमाणु की सूक्ष्मता का अनुमान इस तथ्य से हो सकता है कि एक बूंद पानी में लगभग ३३०० शंख ( $३३ \times १०^{२०}$ ) परमाणु होते हैं। इसी बात को हम यों भी समझ सकते हैं कि यदि मनुष्य का आकार परमाणु के समान हो जाय तो समस्त संसार के मनुष्य एक आलपिन के सिरे पर समा सकते हैं। इतना सूक्ष्म परमाणु फिर भी अपार ऊर्जा का भांडार है। अब हम इसकी आन्तरिक रचना को भी समझें।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक वैज्ञानिकों की धारणा थी कि परमाणु अविभाज्य है परन्तु इसी शताब्दी के अन्तिम वर्षों में वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध किया कि परमाणु अविभाज्य नहीं है। उसमें ॠण एवं धन विद्युत-आवेश से युक्त कण पृथक-पृथक विद्यमान हैं। इन कणों के नाम क्रमशः इलेक्ट्रान तथा प्रोटान हैं। बाद में पता चला कि परमाणु में कुछ आवेश-शून्य कण भी मौजूद होते हैं; इन्हें न्यूट्रान की संज्ञा दी गयी। प्रयोगों द्वारा यह भी विदित हुआ कि प्रोटान एवं न्यूट्रान अधिक भारी कण हैं तथा ये परमाणु के केन्द्र में विद्यमान होते हैं। इलेक्ट्रान जो प्रोटान का लगभग दो हजारवाँ भाग है, इस केन्द्र के चारों ओर चक्कर लगाते हैं। इलेक्ट्रान इस केन्द्र के चारों ओर उसी प्रकार चक्कर लगाते हैं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


जैसे सूर्य के चारों ओर ग्रह घूमते रहते हैं। किसी भी परमाणु में इलेक्ट्रान एवं प्रोटान की संख्या समान होती है। परमाणु के केन्द्र को 'नाभिक' कहते हैं तथा परमाणु की संहति इसी में केन्द्रित होती है। अधिक भारी परमाणुओं में हलके परमाणुओं

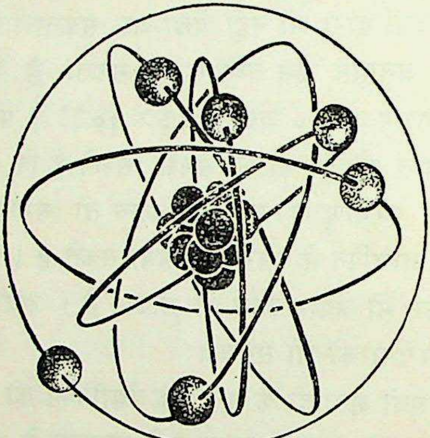

नाभिक की परिक्रमा करते हुए इलेक्ट्रान

की अपेक्षा प्रोटान तथा न्यूट्रान की संख्या अधिक होती है। यूरेनियम, रेडियम, थोरियम, प्लूटोनियम आदि भारी परमाणु हैं तथा हाइड्रोजन, हीलियम, कार्बन आदि हलके परमाणु हैं।

अब प्रश्न उठता है कि परमाणु में ऊर्जा कहाँ छिपी रहती है? परमाणु-ऊर्जा का वास्तविक केन्द्र नाभिक है। नाभिक में धनात्मक आवेश वाले प्रोटान एवं आवेश-शून्य न्यूट्रान परस्पर दृढ़ता से बँधे रहते हैं। नाभिक के परमाणु-कणों को विखंडित कर देने से अपार ऊर्जा प्राप्त हो जाती है। यही ऊर्जा परमाणु- ऊर्जा के नाम से जानी जाती है। भारी नाभिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के विखंडन से हमें परमाणु-ऊर्जा अधिक भी मिलती है और सरलता से भी। वैज्ञानिकों ने यूरेनियम, थोरियम, रेडियम आदि भारी परमाणुओं का विखंडन कर लिया है और परमाणु ऊर्जा का उपयोग जीवन के विविध क्षेत्रों में करने में वे दत्त-चित्त हैं।

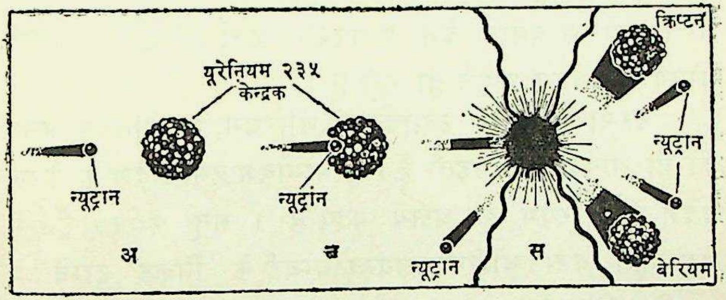


यूरेनियम २३५ के परमाणु के विखंडन से ऊर्जा उत्पन्न होती है।

(अ) नाभिक पर प्रहार करने की तैयारी में न्यूट्रान

(ब) नाभिक पर प्रहार करता हुआ न्यूट्रान

(स) नाभिक के विखंडन से ऊर्जा का उत्पादन।

परमाणु के विखंडन और उस पर किये गये विविध प्रयोगों से अब यह सिद्ध हो गया है कि ऊर्जा ही सब पदार्थों के मूल में है। जिन अलग-अलग तत्त्वों से संसार की सब वस्तुओं की रचना अब तक के वैज्ञानिक बताते थे, वे भी एक ही ऊर्जा के विविध रूपान्तर हैं। इसी कारण एक पदार्थ का दूसरे में रूपान्तरित होना सम्भव है और मनुष्य ने इस ओर प्रयत्न भी किया है। 'एकोऽहं बहुस्याम्' की यही वैज्ञानिक व्याख्या है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



यद्यपि कुछ पाश्चात्य देश परमाणु-ऊर्जा के संस्थानों के विकास में बहुत दिनों से प्रयत्नशील रहे परन्तु हमारा देश भी इस क्षेत्र में निश्चेष्ट नहीं रहा । सन् १९५४ ई० में हमारे प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्वर्गीय डा० होमी जहाँगीर भाभा की संरक्षता में परमाणु-ऊर्जा विभाग की स्थापना हुई । इस विभाग का उद्देश्य परमाणु-ऊर्जा का उपयोग रचनात्मक कार्यों में करना था । तभी से हमारे देश में परमाणु-ऊर्जा के उत्पादन और प्रयोग में पर्याप्त प्रगति हो रही है ।

परमाणु-ऊर्जा के उत्पादन में थोरियम, प्लूटोनियम आदि की ही आवश्यकता पड़ती है । सौभाग्यवश हमारे देश के केरल प्रदेश में थोरियम का अक्षय कोष है । सन् १९५५ ई० में एक बहुत बड़ा थोरियम संयन्त्र बम्बई के निकट ट्राम्बे में स्थापित किया गया ।

अब हमारे यहाँ परमाणु-शक्ति स्टेशन भी निर्मित हो रहे हैं । पहला स्टेशन महाराष्ट्र के तारापोर नगर में बना है । एक अन्य स्टेशन राजस्थान के कोटा नगर के समीप राणा प्रताप सागर पर बनेगा । तीसरा स्टेशन मद्रास प्रदेश में महाबलिपुरम के पास कल्पकम में स्थापित होने वाला है । इनकी सहायता से हमारे देश में विद्युत-उत्पादन की क्षमता बहुत बढ जायगी ।

परमाणु की महाशक्ति का विध्वंसकारी रूप मनुष्य ने हिरोशिमा तथा नागासाकी में देखा और उसे चिन्ता हुई कि यदि उसके प्रयोग की दिशा न बदली गयी तो बड़े भयावह परिणाम होंगे । भारत ने सदैव इस बात का प्रयत्न किया है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
कि परमाणु-ऊर्जा का प्रयोग विनाशकारी कार्यों के लिए न किया जाय, केवल लोकमंगल के लिए उसका उपयोग हो।

अब परमाणु-ऊर्जा मनुष्य के कल्याणकारी उपयोग में विविध रूप में आने लगी है। हलके विस्फोट से सुरंग बनाने, खान खोदने और चट्टान तोड़ने आदि कार्यों में इसका उपयोग हो रहा है। कृषि विज्ञान में भी परमाणु सम्बन्धी अनुसन्धान अनेक रूपों में हो रहे हैं। फलों एवं पौधों की नसलों को संवृद्ध करके और रोगों से रक्षा करके खाद्य उपज को बढ़ाने में काम लिया जा रहा है। चिकित्सा विज्ञान ने भी इन अनुसन्धानों का लाभ उठाया है। कैंसर जैसे प्राणघाती रोग के उपचार में परमाणु-ऊर्जा से बहुत सहायता मिलती है।

नदियों की गुप्त धाराओं को परमाणु-विस्फोट द्वारा बाहर लाया जा रहा है। भविष्य में परमाणु-विस्फोटों द्वारा नदियों को गहरा करके उनमें जलयान चलाये जा सकेंगे और बन्दर-गाहों के निकट समुद्र गहरा करके बड़े-बड़े जलपोत तट तक लाये जा सकेंगे। तेल के व्यवसाय में भी इसका उपयोग होगा। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि अधिक गहराई पर अब भी इतना तेल है, जिसे मानव जाति सैकड़ों वर्ष तक उपयोग में ला सकती है। इतनी गहराई तक खोदने के लिए परमाणु-विस्फोट का ही सहारा लेना होगा।

यातायात में परमाणु-ऊर्जा के उपयोग का प्रारम्भ १९५९ ई० में हुआ। आशा की जा रही है कि जल, स्थल, वायु एवं अन्तरिक्ष यातायात में परमाणु-ऊर्जा बड़ी उपयोगी होगी। तीव्र वेग से अधिक दूर तक जाने की समस्या इसी के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वारा हल होगी । मटर के बराबर परमाणु-इंधन मोटर को वर्षों तक चलाने के लिए पर्याप्त होगा । आज देश की सुरक्षा व्यवस्था में भी परमाणु शक्ति का महत्त्वपूर्ण योग है। नवीनतम अस्त्र-शस्त्रों के द्वारा हम शत्रु का मुकाबला भली-भाँति कर सकते हैं ।

वस्तुतः परमाणु-ऊर्जा किसी राष्ट्र विशेष की सम्पत्ति न होकर सारे विश्व की सम्पत्ति होनी चाहिए और इसका उपयोग मानव-कल्याण के लिए ही होना अभीष्ट है । महान ऊर्जा का स्रोत 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' के रूप में ही समस्त विश्व के कल्याण का साधन बन सके, यही भारतीय जीवन-दर्शन का महत्त्वपूर्ण उद्घोष रहा है। सूक्ष्म परमाणु में विराट जीवन का साक्षात्कार करने का प्रयास अवश्य सफल होगा, उसी में मानवता का कल्याण अन्तर्निहित है ।

—डा० मुरली मनोहर जोशी

## अध्ययन

**प्रश्न**

१. ऊर्जा का क्या तात्पर्य है ?
२. परमाणु से तुम क्या अर्थ समझते हो और उसके मुख्य अंग क्या हैं ?
३. परमाणु में ऊर्जा कहाँ छिपी रहती है ?
४. परमाणु से ऊर्जा किस प्रकार प्राप्त की जाती है ?
५. परमाणु-ऊर्जा के अन्वेषण में भारत ने क्या प्रगति की है ?
६. परमाणु-ऊर्जा का रचनात्मक उपयोग क्या है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

१. निम्नांकित की व्याख्या करो—

(अ) पदार्थ की बहुत सूक्ष्म......हो सकती है।

(आ) 'एकोऽहं बहुस्याम्' की यही वैज्ञानिक व्याख्या है।

२. 'अनुपयुक्त' शब्द में 'अन्' निषेधात्मक अर्थ देता है। यदि किसी शब्द के आरम्भ में कोई स्वर होता है तो निषेध के लिए 'अन्' का प्रयोग होता है 'अ' का नहीं। 'अन्' लगाकर पाँच अन्य शब्द बनाओ।

३. 'धनात्मक' शब्द दो शब्दों के योग ( धन+आत्मक ) से बना हुआ है। इसी प्रकार 'आत्मक' के योग से कुछ और शब्दों की रचना करो।

आदेश—परमाणु-ऊर्जा की उपयोगिता पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखो।

## टिप्पणी

अनुसन्धान=खोज, अन्वेषण। संहित=मात्रा। अन्तरिक्ष=आकाश।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३६

# वर दे

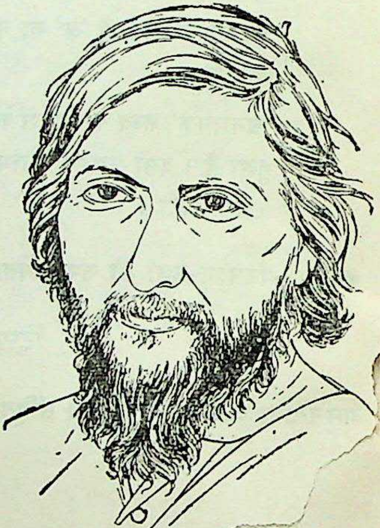

[ प्रस्तुत कविता के रचयिता हिन्दी के सुविख्यात कवि स्वर्गीय सूर्यकान्तत्रिपाठी 'निराला' हैं। इस कविता में कवि ने सरस्वती की वन्दना की है। ]

वर दे, वीणावादिनि वर दे।
प्रिय स्वतन्त्र-रव अमृत-मन्त्र नव
भारत में भर दे!

काट अन्ध-उर के बन्धन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष भेद, तम हर, प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!

नव गति, नव लय, ताल-छन्द नव,
नवल कंठ, नव जलद मन्द्र रव,
नव नभ के नव विहग-वृन्द को
नव पर, नव स्वर दे।

—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

## अध्ययन

### प्रश्न

१. कवि सरस्वती से क्या वरदान माँग रहा है ?
२. वह भारत के लिए क्या वरदान चाहता है ?
३. जग के लिए सरस्वती से उसकी क्या प्रार्थना है ?
४. सरस्वती के लिए 'वीणावादिनि' सम्बोधन क्यों उपयुक्त है ?
५. 'ज्योतिर्मय निर्झर' का क्या तात्पर्य है ?

### अभ्यास

१. दूसरे पद का भाव अपने शब्दों में स्पष्ट करो।
२. अन्तिम दो पंक्तियों पर ध्यान दो। "नव नभ" को कवि ने 'नये समाज' का प्रतीक माना है। 'विहग', 'पर', 'स्वर' आदि किसके प्रतीक हैं ? इन पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो।

आदेश—इस कविता को कंठस्थ करके भावपूर्ण ढंग से सुनाओ।

## टिप्पणी

**रव**=ध्वनि । **अन्ध-उर**=अज्ञानपूर्ण हृदय। **कलुष**=मलिनता, पाप। **मन्द्र रव**=गम्भीर ध्वनि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# अनिवार्य संस्कृत

## विषय-सूची


| क्रम | पाठ | | | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| | वन्दना | ... | ... | २३१ |
| १. | वाक्पटुता | ... | ... | २३२ |
| २. | मूर्खोपदेशः | ... | ... | २३४ |
| ३. | महाराणा प्रतापः | ... | ... | २३६ |
| ४. | प्रभात-सौन्दर्यम् | ... | ... | २३८ |
| ५. | शठे शाठ्यं समाचरेत् | ... | ... | २४० |
| ६. | होलिकोत्सवः | ... | ... | २४२ |
| ७. | मदनमोहनमालवीयः | ... | ... | २४५ |
| ८. | नीतिवचनानि | ... | ... | २४८ |
| ९. | एकलव्यः | ... | ... | २५० |
| १०. | पृथिव्याः स्वर्गः | ... | ... | २५३ |
| ११. | सुभाषितानि | ... | ... | २५५ |
| १२. | गुरुदक्षिणा | ... | ... | २५७ |
| | सन्धि-विचार तथा रूप | ... | ... | २६० |
| | कुछ नये मुख्य शब्द | ... | ... | २६८ |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# वन्दना

असितगिरिसम स्यात् कज्जलं सिन्धु-पात्रे
सुरतरुवर-शाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ।।

वायुर्यमोऽग्निर्वरुण: शशाङ्क:
प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च ।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्व:
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## प्रथमः पाठः

# वाक्पटुता

एकदा कश्चित् नृपः एकं वृद्धं मरणासन्नं गजं ग्रामं प्रेषयति स्म । ग्रामाय सन्देशं चाकथयत् यत् प्रतिदिनम् अस्य गजस्य समाचारः मे निवेदनीयः । यः कोऽपि ग्रामवासी आगत्य गजः मृतः इति समाचारं कथयिष्यति सः त्वरितमेव मृत्युदण्डं प्राप्स्यति ।

ततः राजाज्ञां श्रुत्वा भीताः सर्वे ग्रामजनाः तं गजं यत्नेन अपु ष्यन् अरक्षन् च । तथापि सः गजः मृतः । तदा ते ग्रामवासिनः मृत्युदण्डभयेन नितरां व्याकुलिताः परस्परं विचारम् अकुर्वन्—हन्त ! अद्य कोऽस्माकं मध्याद् नृपस्य समीपं गत्वा गजस्य मरणं निवेदयिष्यति ?

अथ यदा ते ग्रामजनाः भयाकुलिताः एवं चिन्तामग्नाः आसन् तदैव कश्चित् चतुरः ग्रामवासी तत्रागत्य अवदत्—"अलं भयेन । अहमेव गत्वा नृपाय वृत्तमिदं निवेदयिष्यामि" इति कथयित्वा सः नृपस्यान्तिकं गत्वा अकथयत्, "महाराज ! अद्य हस्ती न निषीदति, नोत्तिष्ठति, न कवलं गृह्णाति, न जलं पिबति, नोच्छ्वसति न च निःश्वसति । किमधिकम्, सः सचेतनः इव नाचरति" । इदं श्रुत्वा नृपः अपृच्छत्, "किमसौ हस्ती मृतः ?" स पुरुषः अवदत्, "देव ! भवानेव कथयति न वयम् ।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तदा राजा तस्य वचनकौशलेन नितरां प्रसन्नः तस्मै प्रभूतं पारितोषिकम् अददात् ।

## अभ्यास

**१. संस्कृत में उत्तर दो—**

१. नृपः कीदृशं गजं ग्रामं प्रेषयति स्म ?

२. नृपः कं सन्देशं ग्रामाय अकथयत् ?

३. चतुरः ग्रामवासी नृपस्यान्तिके गत्वा किम् अवदत् ?

४. नृपः प्रसन्नः भूत्वा किम् अकरोत् ?

**२. संस्कृत में अनुवाद करो—**

किसी गाँव में एक वृद्ध ब्राह्मण रहता था। वह दरिद्र था किन्तु बहुत विद्वान था । एक बार वह किसी राजा के पास गया । राजा उसकी सरलता से बहुत प्रसन्न हुआ और उसे बहुत धन दिया ।

**३. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—**

१. तथापि सः..................मृतः ।

२. अद्य..........अस्माकं मध्याद्........मरणं निवेदयिष्यति ।

३. राजा नितरां प्रसन्नः..........प्रभूतं पारितोषिकम्..........।

**४. सन्धि विच्छेद करो—**

मरणासन्नम्, राजाज्ञां, नोत्तिष्ठति, नोच्छ्वसति ।

## टिप्पणी

**मरणासन्नम्**=मरने वाला । **त्वरितमेव**=तुरन्त ही ।
**प्रभूतम्**=बहुत । **पारितोषिकम्**=इनाम ।

**निर्देश**— वर्तमान काल की क्रिया के आगे 'स्म' जोड़ देने से भूतकाल बन जाता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वितीयः पाठः

# मूर्खोपदेशः

आसीत् कस्मिंश्चिद् वने एकः शमीवृक्षः। तस्य लम्बमान-शाखायां कुलायं रचयित्वा अरण्ये चटकदम्पती वसतः स्म। अथ कदाचित् सुखस्थितयोः तयोः हेमन्त-मेघः मन्दं मन्दं वर्षितुम् आरभत। अत्रान्तरे कश्चित् वानरः वातासारपीडितः दन्तवीणां वादयन् कम्पमानः फुल्लशरीरः तत्रागतः। तं तादृशम् अवलोक्य चटका अवदत्—"हे भद्र !

हस्तपादसमोपेतो दृश्यसे पुरुषाकृतिः।
शीतेन भिद्यसे मूढ ! कथं न कुरुषे गृहम् ॥"

चटकायाः इदं वचनं श्रुत्वा वानरः सकोपम् प्रत्यवदत्, "दुष्टे ! कथं त्वं मौनं न धारयसि। अहो ! धार्ष्ट्यम् अस्याः यद् अद्य इयं माम् उपदिशति उपहसति च। तत् किम् अहम् एनां न मारयामि।" किम् बहुना, कुपितः वानरः तं शमीवृक्षम् आरुह्य तस्याः कुलायं शतधा खण्डशः अकरोत्।

सत्यमस्ति—

उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये।
पयः पानं भुजङ्गानां केवल विषवर्धनम् ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## अभ्यास

**१. संस्कृत में उत्तर दो—**

१. शमीवृक्षः कुत्र आसीत् ?

२. तस्य शाखायां कुलायं रचयित्वा कौ वसतः स्म ?

३. चटका तं वानरम् अवलोक्य किम् अवदत् ?

४. तत् श्रुत्वा वानरः किम् अकथयत् ?

५. कुपितः वानरः किम् अकरोत् ?

**२. संस्कृत में अनुवाद करो—**

वनों में पशु रहते हैं। मृग वन का एक प्यारा पशु है। शेर पशुओं का राजा होता है। वह बड़ा बलवान होता है। वह छोटे पशुओं को मारकर खाता है।

**३. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—**

(क) तस्य शाखायां·········रचयित्वा·········वसतःस्म।

(ख) अत्रान्तरे कश्चित् वानरः·········वादयन्·········तत्रागतः।

(ग) कुपितः वानरः·········आरुह्य तस्याः······खण्डशः अकरोत्।

**४. सन्धि विच्छेद करो—**

अत्रान्तरे, पुरुषाकृतिः, तत्रागतः।

## टिप्पणी

(क) **कुलायम्**=घोंसला। **वातासारपीड़ितः**=वायु और वर्षा से पीड़ित। **शतधा**=सैकड़ों। **खण्डशः**=टुकड़े।

(ख) **रचयित्वा**=बनाकर। **अवलोक्य**=देखकर। **श्रुत्वा**=सुनकर। **आरुह्य**=चढ़कर।

(ग) **वर्षितुम्**=बरसना।

**आदेश**—छात्र अपने अध्यापक की सहायता से निम्नलिखित धातुओं से ऊपर की भाँति 'त्वा' और 'तुम्' जोड़कर रूप बनायें और उसका वाक्य में प्रयोग करें:—

**चल्, पठ्, खाद्, कृ, गम्, हन्, मन्।**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

### तृतीयः पाठः

# महाराणा प्रतापः

परमदेशभक्तस्य शिशोदिया-कुलभूषणस्य महाराणा-प्रतापस्य नाम को न जानाति ? अयमेव महाराणा प्रतापः स्वजन्मभूमिं परतन्त्रतापाशात् मोचयितुं प्राणपणेन प्रयत्नम् अकरोत् ।

महाराणा प्रतापः राणासांगामहोदयस्य पौत्रः महाराजस्य उदयसिंहस्य पुत्रः आसीत् । बाल्यकालात् एव अयं निर्भीकः साहसी च आसीत् । मुगलशासकस्य अकबरस्य आक्रमणावसरे स्वभावेन भीरुः तस्य पिता उदयसिंहः चित्तौड़राज्यस्य रक्षणार्थं पुत्ताजयमलयोः नियुक्तिं विधाय पलायनम् अकरोत् ।

उदयसिंहस्य मृत्योः अनन्तरं यदा महाराणा प्रतापः राज्य-भारम् अगृह्णात् तदा सः इमाम् प्रतिज्ञाम् अकरोत् यद् अहं चित्तौड़राज्यं मुगलशासकात् अकबरात् यावत् पुनः न ग्रही-ष्यामि तावत् प्रासादेषु न निवसिष्यामि रजत-सुवर्ण-पात्रेषु न खादिष्यामि पर्यङ्केषु च शयनं न करिष्यामि ।

सः घासस्य रोटिकाम् अखादत् वनाद् वनम् अभ्रमत् च । क्षुधापीडितं स्वपरिवारं दृष्ट्वापि देशरक्षाव्रतम् अपालयत् धैर्यं च नात्यजत् । विकटेऽपि संकटे महाराणा प्रतापः कर्त्तव्य-पथात् किंचिदपि विचलितो नाभवत् । सः अकबरस्य प्रबलं सैनिकसमूहम् अगणयन् कठिनसाहसेन प्रबलपराक्रमेण, स्वदेशानुरागेण च सह कर्त्तव्यमार्गे अग्रे अगच्छत् अकबरस्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

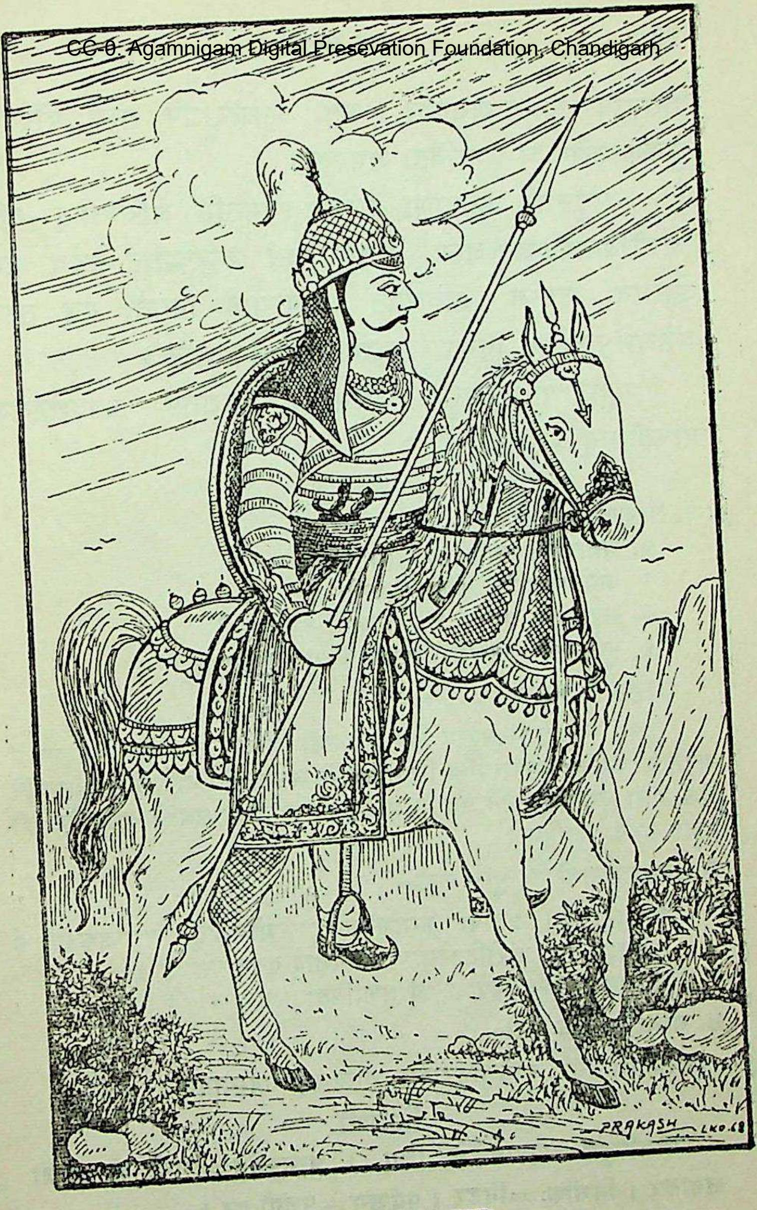


महाराणा प्रतापः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



दासताम् च न अमन्यत । अतः अकबरोऽपि तस्य पौरुषेण युद्धकौशलेन च प्रभावितः अभवत् ।

मृत्युसमये महाराणा प्रतापः स्वमनसि अचिन्तयत्—यदि शिशोदियावंशजाः अस्य देशस्य रक्षां करिष्यन्ति तदैव मम आत्मनः शान्तिः भविष्यति । गर्वस्यायं विषयः यत् तस्य वंशजाः तद् व्रतं निरन्तरं दृढ़संकल्पेन अपालयन् ।

महाराणा-प्रतापस्य देशभक्तिः अद्यापि आदर्शरूपेण भारतीयान् प्रेरयति ।

## अभ्यास

**१. संस्कृत में उत्तर दो—**

१. महाराणा प्रतापः कः आसीत् ?
२. अयं स्वभावेन कीदृशः आसीत् ?
३. महाराणा प्रतापः कां प्रतिज्ञाम् अकरोत् ?
४. मृत्युसमये महाराणा प्रतापः किम् अचिन्तयत् ?

**२. संस्कृत में अनुवाद करो—**

(१) महाराणा प्रताप एक पराक्रमी राजा थे । उनके जीवन में बहुत सी कठिनाइयां आयीं । किन्तु उन्होंने अपना धैर्य नहीं छोड़ा । उन्होंने देश रक्षा के लिए अपने व्रत का पालन किया । हम सबको अपने देश की रक्षा करनी चाहिए ।

**३. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—**

१. महाराणा प्रतापः जन्मभूमिं········मोचयितुं··········अकरोत् ।
२. सः···········रोटिकाम्········वनाद् वनम्········ ।
३. अकबरोऽपि तस्य·····च प्रभावितः········ ।

**४. सन्धि विच्छेद करो—**

आक्रमणावसरे, स्वदेशानुरागेण, नात्यजत्, गर्वस्यायम् ।

## टिप्पणी

**मोचयितुम्**=छुडाने के लिए । **प्राणपणेन**=प्राणों की बाजी लगाकर । **निर्भीकः**=निडर । **पर्यङ्केषु**=पलंगों पर ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

**चतुर्थः पाठः**

# प्रभात-सौन्दर्यम्

उदयति मिहिरो विदलति तिमिरो
भुवनं कथमभिरामम् ।
प्रचरति चतुरो मधुकर - निकरो
गुञ्जति कथमविरामम् ॥ १ ॥
विकसति कमलं विलसति सलिलं
पवनो वहति सलीलम् ।
दिशि दिशि धावति कूजति नृत्यति
खगकुलमतिशयलोलम् ॥ २ ॥
शिरसि तरूणां रविकिरणानां
खेलति रुचिररुणाभा
उपरि दलानां हिम - कणिकानां
काऽपि हृदय - हर शोभा ॥ ३ ॥
प्रसरति गगने हरि - हर - भवने
दुन्दुभि - दमदम - नादः ।
भज परमेशं पठ सनिवेशं
भवतादनुपममोदः ॥ ४ ॥

**आदेश**—छात्र इन श्लोको को कण्ठस्थ करें तथा इनका सस्वर गान करे।

**टिप्पणी**

**मिहिरः=सूर्य । निकर=समूह ।**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पंचमः पाठः

# शठे शाठ्यं समाचरेत्

कस्मिश्चित् वने एकः गजः प्रतिवसति स्म । सः प्रतिदिनं राजमार्गेण स्नानार्थं नदीम् अगच्छत् । तस्य मार्गे एकस्य फलविक्रेतुः विपणिः आसीत् । सः फलविक्रेता गजाय प्रत्यहं फलानि अयच्छत् गजश्च फलानि खादित्वा प्रसन्नः अभवत् । तदनन्तरं स्नानाय अगच्छत् । अनेन प्रकारेण तयोः मैत्री अभवत् ।

एकदा फलविपणिकः कार्यवशात् स्वपुत्रं विपणौ नियुज्य कुत्रचिद् गतः । तस्य पुत्रः अतिचंचलः आसीत् । स च कौतूहलवशात् तस्मिन् दिने गजाय फलानि अदत्वा तस्य शुण्डे सूचिकाछेदनम् अकरोत् । बालकस्य दुर्व्यवहारेण रुष्टोऽपि गजः बालकस्य किमपि अनिष्टम् न कृत्वा प्रतिकारबुद्ध्या नदीं गतः । ततः शुण्डे मलिनं जलं भृत्वा तस्य विपणिम् आगच्छत् । तस्य फलानाम् उपरि च सम्पूर्णं जलम् प्राक्षिपत् । यदा तस्य जनकः प्रत्यागत्य मलिनानि विकृतानि च फलानि अपश्यत् तदा स्वपुत्रम् अपृच्छत्—"अरे ! इमानि फलानि कथं मलिनानि विकृतानि च सन्ति ?" सः तस्मै यथाभूतं सर्वं वृत्तान्तम् अकथयत् । जनकोऽपि विहस्य अवदत्—"गजः समुचितमेवाकरोत्, शठे शाठ्यं समाचरेत् ।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


## अभ्यास

**१. संस्कृत में उत्तर दो—**

१. गजः कुत्र प्रतिवसति स्म ?
२. तस्य मार्गे कस्य विपणिः आसीत् ?
३. विपणिकस्य पुत्रः गजस्य शुण्डे किम् अकरोत् ?
४. ततः गजः प्रतीकारार्थं किम् अकरोत् ?

**२. संस्कृत में अनुवाद करो—**

किसी वन में एक आश्रम था। उसमें जावालि मुनि रहते थे। उनके बहुत से शिष्य थे। शिष्य आश्रम में पढ़ते थे और मुनि की सेवा करते थे। मुनि उनकी सेवा से प्रसन्न थे।

**३. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—**

१. तस्य........एकस्य फलविक्रेतुः........आसीत्।
२. अनेन प्रकारेण........मैत्री........।
३. तस्य जनकः......मलिनानि विकृतानि च फलानि......।

**४. सन्धि विच्छेद करो—**

स्नानार्थम्, प्राक्षिपत्, प्रत्यागत्य।

## टिप्पणी

**शाठ्यम्**=दुष्टता। **विपणिः**=दूकान। **प्रत्यहम्**=प्रतिदिन। **नियुज्य**=लगाकर। **प्रत्यागत्य**=लौटकर। **विहस्य**=हँसकर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

षष्ठः पाठः

# होलिकोत्सवः

अस्माकं देशे बहवः उत्सवाः भवन्ति । तेषु केचिद् उत्सवाः सामाजिकाः केचित् धार्मिकाः अपरे च राष्ट्रियाः सन्ति । इमे उत्सवाः वर्षस्य पृथक् पृथक् मासे भवन्ति । एषु उत्सवेषु होलिकोत्सवः प्रमुखः अस्ति ।

अयम् उत्सवः फाल्गुनमासस्य पूर्णिमायां तिथौ आयाति । अस्योत्सवस्य समारम्भः वसन्तपञ्चमीतः भवति । यत्र तत्र चतुष्पथेषु अन्यस्थलेषु च बालकाः काष्ठसंचयं कुर्वन्ति । मन्दिरेषु शुष्करङ्गप्रक्षेपणं भवति । अस्मिन् काले न च शैत्यस्याधिक्यं भवति न च उग्रः ताप एव । अतः जनाः और्णानि वस्त्राणि परित्यज्य साधारणानि कार्पासनिर्मितानि वस्त्राणि धारयन्ति, सोल्लासम् इतस्ततः भ्रमन्ति । कृषकाः यवगोधूमसर्षपादीनां आन्दोलितानां मञ्जरीणां सौन्दर्यं दृष्ट्वा प्रसन्नाः भवन्ति । जनाः मन्दिरेषु ग्रामचत्वरेषु च रात्रौ एकत्रीभूय पटहं वादयित्वा उच्चस्वरेण अवसरानुकूलानि 'होली' नामकानि गीतानि गायन्ति ।

होलिकाविषये विविधानि मतानि सन्ति । केचित् कथयन्ति यत् पुरा भक्तप्रह्लादस्य पितृष्वसेयं होलिका हिरण्यकशिपोः आज्ञया प्रह्लादस्य मरणोपायं चिन्तयन्ती तमङ्के स्थापयित्वा अग्नौ प्राविशत् । किन्तु भक्तिप्रभावेण प्रह्लादः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुरक्षितः अतिष्ठत् । होलिका अज्वलत् अनश्यत् च । तस्याः स्मृतौ अद्यापि प्रतिवर्षे होलिकादहनं भवति ।

होलिका-मिलनम्

होलिकायां जनाः काष्ठानि प्रक्षिपन्ति. तस्यां पक्वयव-गोधूमादीनां बालीः भूर्जयन्ति प्रसादरूपेण गृहं नयन्ति च । होलिकादहनानन्तरं ते परस्परं रक्तहरितपीतरङ्ग-प्रक्षेपणं कुर्वन्ति । स्नेहेन मिलन्ति मिष्टान्नानि पक्वान्नानि च खादन्ति । व्रजस्य होलिकोत्सवस्तु प्रसिद्ध एव ।

अस्मिन् महोत्सवे जनाः वर्णभेदं जाति-भेदं च विहाय परस्परं मिलन्ति एकरूपतायाः आदर्शं चोपस्थापयन्ति । अयमेव होलिकोत्सवस्य विशेषः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

## अभ्यास

**१. संस्कृत में उत्तर दो—**

१. उत्सवेषु कः प्रमुखः उत्सवः अस्ति ?
२. बालकाः काष्ठसंचयं कुत्र कुर्वन्ति ?
३. होलिकादहनानन्तरं जनाः किं कुर्वन्ति ?

**२. संस्कृत में अनुवाद करो—**

गोविन्द एक सुशील बालक है। वह नित्य प्रातःकाल उठकर माता-पिता को प्रणाम करता है। फिर वह अपना पाठ पढ़ता है। वह हाथ-पैर धोकर भोजन करता है और समय से स्कूल जाता है। छात्रों को समय से स्कूल जाना चाहिए।

**३. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—**

१. अयम् उत्सवः······तिथौ······।
२. होलिकाविषये······मतानि······।
३. तस्याः······अद्यापि······होलिकादहनं······।

**४. सन्धि विच्छेद करो—**

अस्योत्सवस्य, अवसरानुकूलानि, मरणोपायम्।

## टिप्पणी

**चतुष्पथेषु**=चौराहों पर। **यवगोधूमसर्षपादीनाम्**=जौ, गेहूँ, सरसों आदि के। **ग्रामचत्वरेषु**=गाँव के चबूतरों पर। **पटह**=ढोल। **वादयित्वा**=बजाकर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सप्तमः पाठः

# मदनमोहनमालवीयः

भारतीयेषु महापुरुषेषु मदनमोहनमालवीयस्य प्रमुखं स्थानम् अस्ति । मालवीयमहोदयस्य पूर्वजाः झांसीजनपदस्य कस्मात्चित् ग्रामात् आगत्य प्रयागनगरे अवसन् । पण्डित-ब्रजनाथमालवीयस्य पुत्रः मदनमोहनमालवीयः १८६१ तमे ख्रीष्टाब्दे जन्म अलभत । अस्य पिता स्ववैदुष्येन प्रयागे प्रसिद्धः अभवत् । अत एव काशीदरभंगानगरयोः राजानौ अस्य अतीव सम्मानम् अकुरुताम् । मदनमोहनमालवीयः अस्य त्रिषु पुत्रेषु कनिष्ठः आसीत् ।

मदनमोहनमालवीयस्य प्राथमिकं शिक्षणं गृहे एव प्रारभत । किंचित्समयानन्तरम् अयं संस्कृत-पाठशालायां प्रविष्टः । प्राथमिकम् अध्ययनं समाप्य प्रयागस्य जनपदविद्यालये (जिला स्कूल) सम्प्रति राजकीय इंटर कालेज नाम्ना प्रसिद्धे प्रवेशम् अलभत । अयं महोदयः स्वशिक्षां समाप्य अस्मिन् एव विद्यालये शिक्षकोऽपि अभवत् । पुनः शिक्षणकार्यं विहाय वाक्कीलो भूत्वा प्रयागस्य उच्चन्यायालये वाक्कीलतां कुर्तुम् आरभत ।

मालवीयमहोदयस्य समाजसेवायाः विविधानि उदाहरणानि सन्ति । हिन्दुस्थान-अभ्युदय-मर्यादाभिधानां समाचारपत्राणां सम्पादनं कृत्वा हिन्दीभाषायाः परिमार्जनं प्रसारं चाकरोत् । अयमेव सर्वप्रथमः भारतीयः आसीत् यः 'हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्थान' इति उद्घोषेण ब्रिटिशशासकान् अकम्पयत् ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हिन्दूविश्वविद्यालयः अस्य महोदयस्य समाजसेवायाः यशः अद्यापि प्रतीकरूपेण गायति ।

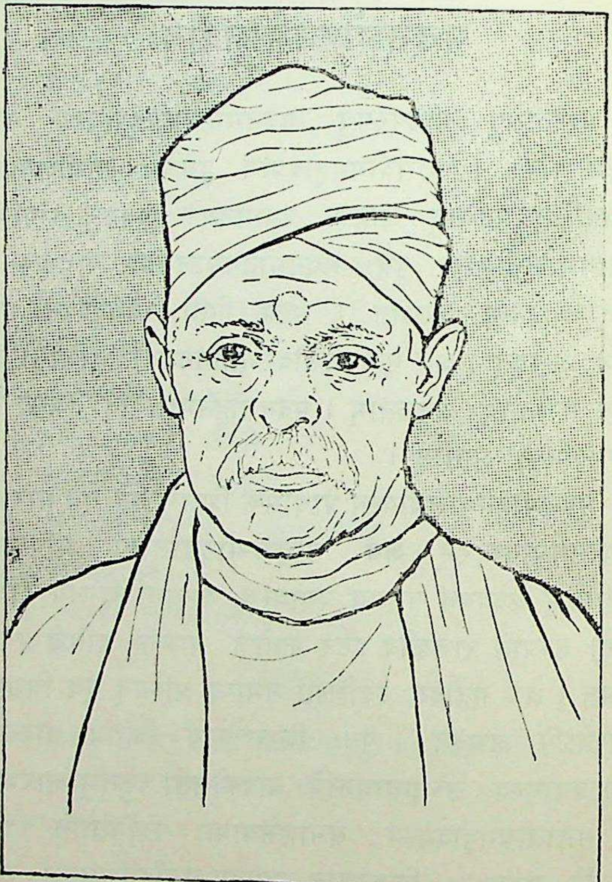

महामना मदनमोहनमालवीयः

मालवीयमहोदयः सार्वजनिकसभासु स्ववाक्पाटवेन जनान् सम्मोहमन् देशसेवाव्रतम् अगृह्णात् । अस्य हिन्दी-संस्कृताङ्गल-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
भाषासु समानः अधिकारः आसीत् । अयम् अखिलभारतवर्षीय-कांग्रेस-महासभायाः सभापति-पदम् अपि अलंकरोति स्म अचिरादेव लोकप्रियश्च अभवत् । देशसेवाव्रतरतः अयम् महानुभावः १९४७ तमे ख्रीष्टाब्दे पार्थिव-शरीरम् अत्यजत् ।

अद्यापि मालवीयमहोदयस्य त्यागतपस्यामय-जीवनात् श्रद्धावन्तः भारतीयाः प्रेरणां गृह्णन्ति ।

## अभ्यास

**१. संस्कृत में उत्तर दो—**

१. मदनमोहन मालवीयः कस्य पुत्रः आसीत् ?
२. भारतीयेषु महापुरुषेषु कस्य प्रमुखं स्थानमस्ति ?
३. मदनमोहन मालवीयस्य प्राथमिकं शिक्षणं कुत्र अभवत् ?
४. मदनमोहन मालवीयः केषां समाचारपत्राणां सम्पादनम् अकरोत् ?
५. मालवीय महोदयः कदा पार्थिवं शरीरम् अत्यजत् ?

२. निम्नलिखित शब्दों में कारक (विभक्ति) और वचन का निर्देश करो—

महापुरुषेषु, पूर्वजाः, जन्म, राजानौ, सेवायाः ।

३. निम्नलिखित क्रिया पदों में लकार (काल), पुरुष तथा वचन का निर्देश करो—

अवसन्, अकुरुताम्, गायति, गृह्णन्ति ।

## टिप्पणी

**कनिष्ठः**=सबसे छोटा । **समाप्य**=पूराकर । **विहाय**=छोड़कर । **वाक्कीलः**=वकील । **वाक्कीलताम्**=वकालत । **अचिरादेव**=शीघ्र ही ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अष्टमः पाठः

# नीतिवचनानि

विकृतिं नैव गच्छन्ति सङ्गदोषेण साधवः ।
आवेष्टितं महासर्पैः चन्दनं न विषायते ॥ १ ॥

रूपयौवन-सम्पन्ना विशालकुल-सम्भवाः ।
विद्याहीनाः न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥ २ ॥

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये वको यथा ॥ ३ ॥

खलः सर्षपमात्राणि परछिद्राणि पश्यति ।
आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति ॥ ४ ॥

दुर्जनः परिहर्तव्यः विद्ययालङ्कृतोऽपि सन् ।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः ॥ ५ ॥

न दैवमपि संचिन्त्य त्यजेदुद्योगमात्मनः ।
अनुद्योगेन कस्तैलं तिलेभ्यः प्राप्तुमर्हति ॥ ६ ॥

अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका ।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैः बध्यन्ते मत्तदन्तिनः ॥ ७ ॥

मनस्वी म्रियते कामं कार्पण्यं नतु गच्छति ।
अपि निर्वाणमायाति, नानलो याति शीतताम् ॥ ८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाजनस्य संसर्गः कस्य नोन्नतिकारकः ।
पद्मपत्रस्थितं वारि धत्ते मुक्ताफलश्रियम् ॥ ६ ॥

**आदेश**—छात्र नीति के श्लोकों को कण्ठस्थ करें तथा उनसे मिलनेवाली शिक्षाओं को लिखें ।

## टिप्पणी

**सर्षप**=सरसों । **संहतिः**=संग्रह (समूह) ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## नवमः पाठः

# एकलव्यः

पुरा द्रोणाचार्यो नाम धनुर्वेदस्य महान् कुशलः शिक्षकः आसीत् । तस्य धनुर्विद्यायां निपुणताम् श्रुत्वा सर्वे राजकुमाराः धनुर्विद्यां ग्रहीतुं तस्य पार्श्वे आगच्छन् । सः पाण्डुपुत्रान् युधिष्ठिरप्रभृतीन् धनुर्विद्याम् अशिक्षयत् । तेषु अर्जुनः परम-कुशलः अभवत् । तस्य धनुर्विद्यायाः कौशलेन परितुष्टः द्रोणाचार्यः अकथयत्—"वत्स, त्वत्समः नान्यः कश्चित् धनुर्धरः भविष्यति ।"

एकदा द्रोणाचार्यस्य धनुर्विद्यायाः कौशलं श्रुत्वा निषाद-राजस्य हिरण्यधनुषः पुत्रः एकलव्यो नाम तस्यान्तिकं समागत्य अवदत्—"गुरुदेव ! अहमपि धनुर्विद्यां ग्रहीतुं भवत्सन्निधौ उपस्थितः अस्मि । कृपया मामपि शिक्षय ।" निषाद पुत्रोऽयम् इति मत्वा द्रोणाचार्यः तं शिष्यम् न स्वीकरोति स्म, तम् अकथयत् च—"एकलव्य, त्वं स्वयमेव धनुर्विद्यायां प्रवीणोऽसि, गृहं गच्छ ।"

खिन्नः एकलव्यः गृहम् आगत्य वने मनसा स्वीकृतस्य गुरोः द्रोणाचार्यस्य मृण्मयीं प्रतिमां रचयित्वा तस्याः पुरतः बाण-संचालनस्य अभ्यासम् अकरोत् परम-प्रवीणश्च अभवत् ।

तत्रैकदा मृगयार्थम् आगतस्य कस्यचित् आखेटकस्य कुक्कुरः मलिनवसनम् एकलव्यं दृष्ट्वा भषितुम् आरभत । एकलव्यः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शरसंचालनस्य नैपुण्यं दर्शयन् युगपत् प्रक्षिप्तैः सप्तभिः शरैः कुक्कुरस्य मुखं सीव्यति स्म । मृगयार्थं गताः कौरव-पाण्डवाः

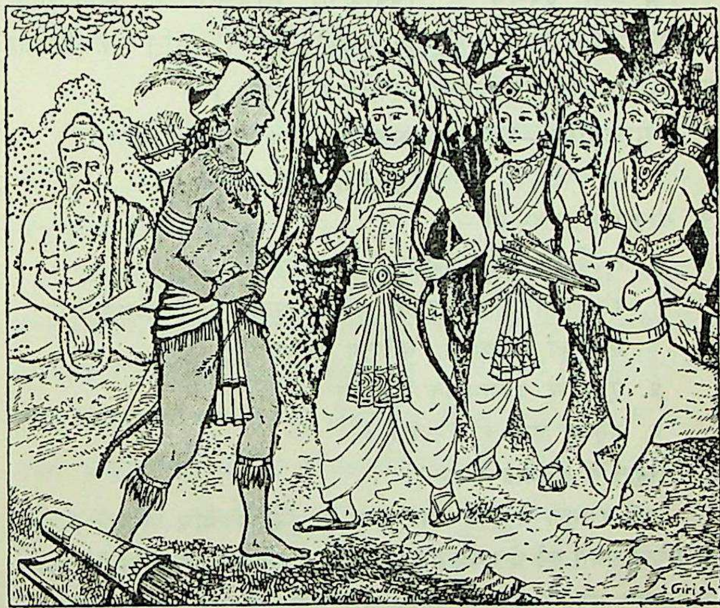

एकलव्यस्य शर-संचालन-कौशलम्

एकलव्यस्य अस्त्रप्रक्षेपणं दृष्ट्वा परमचकिताः अभवन् तस्य समीपं गत्वा अपृच्छन् च "को भवान् ?" सः प्रत्यवदत्— "अहं निषादाधिपतेः पुत्रः एकलव्यो नाम द्रोणशिष्यः अस्मि ।" इदं श्रुत्वा आश्चर्य-चकितः अर्जुनः आश्रमम् आगत्य गुरवे सर्वं वृत्तान्तं निवेद्य अवदत्, "भवान् अकथयत्-त्वद्विशिष्टः नान्यः कश्चिद् धनुर्धरः भविष्यति । किन्तु निषादपुत्रः तव शिष्यः मत्तोऽपि कुशलतरः वर्तते एव ।"

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विस्मित: द्रोणाचार्य: अर्जुनेन सह एकलव्यस्य समीपं गत्वा तम् अकथयत्, "यदि त्वं मे शिष्योऽसि तर्हि देहि मे दक्षिण-कराङ्गुष्ठम्, इदमेव मे गुरुदक्षिणा भविष्यति ।" प्रसन्नमुख: एकलव्य: 'किमपि मे गुरवे अदेयं नास्ति' इति कथयित्वा स्वदक्षिणकराङ्गुष्ठं छित्वा द्रोणाय समर्पयत् ।

सत्यमस्ति—श्रद्धया लभते ज्ञानम् ।

## अभ्यास

**१. संस्कृत में उत्तर दो—**

१. धनुर्वेदस्य कुशल: शिक्षक: क: आसीत् ?
२. द्रोणाचार्यस्य धनुर्विद्याया: कौशलं श्रुत्वा क: आगच्छत् ?
३. एकलव्यं दृष्ट्वा क: भषितुम् आरभत ?
४. एकलव्य: द्रोणाय किं समर्पयत् ?
५. मनुष्य: ज्ञानं कया लभते ?

**२. संस्कृत में अनुवाद करो—**

प्राचीन काल में एक राजा पाण्डु थे । उनके पांच पुत्र थे । उनमें युधिष्ठिर सबसे बड़े थे । वह बड़े सत्यवादी थे । मझले पुत्र अर्जुन थे । अर्जुन एक कुशल धनुर्धर थे । आज तक लोग अर्जुन के नाम को जानते हैं ।

**३. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—**

१. द्रोणाचार्य: पाण्डुपुत्रान्............................अशिक्षयत् ।
२. अहमपि धनुर्विद्यां ग्रहीतुं............................अस्मि ।
३. एकलव्य: कुक्करस्य मुखं........................ ।
४. विस्मित: द्रोणाचार्य:...........एकलव्यस्य समीपं गत्वा........ अकथयत् ।

## टिप्पणी

**ग्रहीतुम्**=ग्रहण करने के लिए । **अन्तिकम्**=पास । **समागत्य**= आकर । **प्रवीण:**=कुशल । **मृण्मयीं**=मिट्टी की बनी हुई । **भषितुम्**= भौंकना । **सीव्यति स्म**=सी दिया । **छित्वा**=काटकर ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

### दशमः पाठः

# पृथिव्याः स्वर्गः

जगति प्रसिद्धः कश्मीरः अस्माकं भारतदेशस्य एकं राज्यम् अस्ति । अयं स्वसौन्दर्येण न केवलं भारतीयान्, अपितु विदेशीयानपि मोहयति ।

श्रीनगरम् अस्य राज्यस्य राजधानी अस्ति । अत्र वितस्ता नाम नदी प्रवहति । तस्याः उभयोः तटयोः इदं नगरं तिष्ठति । नगरस्य भागद्वयं नौकासेतुः योजयति । समन्तात् हिममण्डितानि पर्वतशिखराणि रविकिरणैः संयुतानि सुवर्णमयानि प्रतिभान्ति । अस्य उपत्यकायां जनाः काष्ठनिर्मितेषु लघुगृहेषु निवसन्ति । पर्यटकाः नद्याः नौकागृहेषु बसन्तः परं सुखम् अनुभवन्ति । तत्र जनाः नौकागृहम् एव 'हाउस बोट' इति कथयन्ति । एषु नौकागृहेषु ज्वलतां दीपकानां प्रतिबिम्बानि नदीजले अपूर्वां शोभाम् आवहन्ति । एभिः नौकागृहैः तत्रत्याः जनाः जीविकाम् अर्जयन्ति ।

अत्रैकः डलनामकः महाह्रदः वर्तते । यस्मिन् विविधवर्णानि विकसितानि कमलानि शोभन्ते । मुगलशासकेन जहांगीरेण निर्मापिते निशातशालामारनामके उद्याने अस्यैव तटे वर्तेते । अनयोः उद्यानयोः फलवन्तः पुष्पवन्तश्च वृक्षाः दर्शकाणां लोचनानि सुखयन्ति मनांसि रञ्जयन्ति च । अत्रत्याः स्फटिकाच्छजलसम्पन्नाः निर्झराः कश्मीरसौन्दर्यं नितरां वर्धयन्ति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चिनारवृक्षाणां घनच्छायायां स्थित्वा दर्शकाः कश्मीरवैभवं प्रशंसन्ति ।

अमरनाथस्य प्रसिद्धां गुहां द्रष्टुं जनाः दूरदूरात् आगच्छन्ति । कलायै इदं राज्यम् अतिप्रसिद्धम् अस्ति । काष्ठनिर्मितानि क्रीडनकानि रजतमयानि पात्राणि और्णानि वस्त्राणि च अत्रत्यानां कलाकाराणां हस्तकौशलं प्रकटयन्ति । केसराणां सुगन्धिः सर्वत्र प्रसरति कश्मीरस्य शोभां च द्विगुणितां करोति ।

सत्यमस्ति अयमेव पृथिव्याः स्वर्गः ।

## अभ्यास

१. **संस्कृत में उत्तर दो—**

१. कश्मीरः कस्य देशस्य राज्यम् अस्ति ?

२. कश्मीर राज्यस्य राजधानी का अस्ति ?

३ अत्र का नाम नदी प्रवहति ?

४. डलनामकः महाह्रदः कुत्र वर्तते ?

५. कश्मीरसौन्दर्यं के वर्धयन्ति ?

२. **संस्कृत में अनुवाद करो—**

भारतवर्ष किसानों का देश है । किसान गाँवों में रहते हैं । वे खेती करते हैं । हमारा देश निरन्तर उन्नति कर रहा है । थोड़े दिनों में यह विश्व का एक बड़ा राष्ट्र हो जायगा ।

## टिप्पणी

**मोहयति**=मोह लेता है । **नौकासेतुः**=नावों का पुल । **पर्यटकाः**=घूमनेवाले । **तत्रत्याः**=वहाँ के । **महाह्रदः**=बड़ी झील । **क्रीडनकानि**=खिलौने । **और्णानि**=ऊनी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## एकादशः पाठः

# सुभाषितानि

यः प्रीणयेत् सुचरितैः पितरं स पुत्रो
यद् भर्तुरेव हितमिच्छति तत्कलत्रम् ।
तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यत्
एतत् त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते ॥१॥

पापान्निवारयति योजयते हिताय
गुह्यं च गूहति गुणान् प्रकटीकरोति ।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः ॥२॥

केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृताः मूर्धजाः ।
वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥३॥

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः
नवाम्बुभिर्दूर-विलम्बिनो घनाः ।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ॥४॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥५॥

## अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों में कारक (विभक्ति) और वचन निर्देश करो—
सुचरितैः, आपदि, जगति, पापात्, गुणान्, तरवः, भूषणानि, परोपकारिणाम् ।

२. निम्नलिखित क्रिया पदों में लकार, पुरुष और वचन निर्देश करो—
प्रीणयेत्, इच्छति, लभन्ते, प्रवदन्ति, भवन्ति, निन्दन्तु, गच्छतु, प्रविचलन्ति ।

## टिप्पणी

**कलत्रम्**=स्त्री । **गुह्यम्**=गुप्त बात । **जहाति**=त्यागता है । **मूर्धजाः**=बाल । **न्याय्यात् पथः**=न्याय के मार्ग से ।

**आदेश**—छात्र अपनी रुचि के अनुसार उपरिलिखित श्लोकों को कण्ठस्थ करें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वादशः पाठः

# गुरुदक्षिणा

## प्रथमं दृश्यम्

(साकेत नगरी महाराजस्य रघोः राजधानी। महाराजः रघुः विश्वजिति यागे सर्वस्वं दानमकरोत्। केवलम् मृत्तिकापात्राणि आसन्। तस्मिन् एव समये महर्षेः वरतन्तोः शिष्यः कौत्सः महाराजस्य रघोः समीपे गुरुदक्षिणार्थं चतुर्दशकोटिस्वर्णमुद्राः याचितुम् आगच्छति द्वारपालश्च महाराजाय निवेदयति।)

**द्वारपालः**—महाराज! द्वारि एकः ब्राह्मणवटुः तिष्ठति भवन्तं द्रष्टुं च इच्छति।

**राजा**—प्रवेशय ब्राह्मणवटुम्।

(कौत्सः प्रविशति सर्वे च उत्तिष्ठन्ति)

**कौत्सः**—स्वस्ति अस्तु ते महाराज!

**राजा**—ऋषिकुमार! कुशलं तु वर्तते? सकुशलाः आश्रमवासिनः गुरुवराश्च? किमपि कष्टं तु नास्ति तपस्विजनानाम्?

**कौत्सः**—(प्रसन्नमुद्रायाम्) आम् महाराज! सर्वमपि कुशलम् अस्ति। भवतः राज्ये प्रजानां कष्टं कुतः?

**राजा**—तर्हि कथय विप्रवर! कथम् अनुगृहीतोऽस्मि तवागमनेन?

**कौत्सः**—(मृत्तिकापात्राणि दृष्ट्वा कौत्सः स्वगतं संकुचति यत्कथं याञ्चां करोमि। अयं तु सर्वस्वं दानं कृत्वा स्वयमेव अकिंचनः संजातः।)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


(प्रकटं) राजन् ! गुरुदक्षिणायै चतुर्दशकोटिस्वर्णमुद्रा याचनार्थम् आगतोऽस्मि किन्तु सम्प्रति भवान् स्वयमेव…

राजा—नैवं ऋषिकुमार ! लेशमात्रमपि संकोचं मा कुरु । मम कोशे धनस्याभावो भवतु नाम किन्तु भुजयोः बलस्याभावो नास्ति । तव गुरुदक्षिणायाः शीघ्रमेव प्रबन्धं करोमि ।

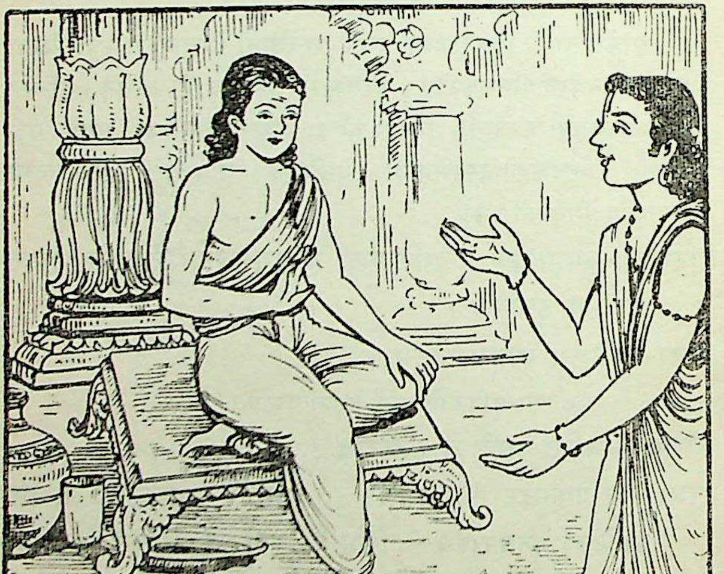


## द्वितीयं दृश्यम्

(राजा मन्त्रिणम् आहूय सर्वं कथयति तथा धनाधीशस्य कुबेरस्योपरि अभियानाय आदिशति । मन्त्री गत्वा यावत् सेनायाः प्रस्थानम् आदिशति तावत् कोशः परिपूर्णः जातः । इदं दृष्ट्वा आश्चर्यचकितः मन्त्री सहसा प्रविशति ।)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

**राजा**—का वार्तास्ति मन्त्रिवर !

**मन्त्री**—महद् आश्चर्यं महाराज ! कोशस्तु द्रविणेन परिपूर्णः जातः । यथेच्छं गुरुदक्षिणां देहि ।

(प्रसन्नः राजा । राजसभा च आश्चर्यचकिता)

**राजा**—(सुवर्णमुद्राः प्रति कौत्सं संकेतयन्) ब्राह्मणकुमार ! गृहाण तावत् एतत् सर्वं कोशजातम् गुरुदक्षिणायै ।

**कौत्स** :—(प्रमुदितः) राजन् ! अहं तु केवलं चतुर्दशकोटिस्वर्ण-मुद्राः इच्छामि किमधिकेन मे प्रयोजनम् ? (अभीष्टं द्रव्यं गृहीत्वा कौत्सः निर्गच्छति)

(एवंविधः निर्लोभः ऋषिकुमारः एवंविधश्च दानशीलो राजा—इति सर्वे सभासदः दर्शकाश्च ऋषिकुमारं कौत्सं नृपं रघुञ्च वारं-वारं प्रशंसन्ति)

(जय ध्वनिः)

**आदेशः**—छात्र अपने अध्यापक की सहायता से इस एकांकी का अभिनय करें ।

## टिप्पणी

**तर्हि**=तो । **अकिंचनः**=निर्धन । **सम्प्रति**=इस समय । **अभियानाय**=चढ़ाई के लिए ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## सन्धि-विचार तथा रूप

(१) **वृद्धि सन्धिः**—'अ' अथवा 'आ' के बाद जब 'ए' या 'ऐ' आये तो दोनों के स्थान में 'ऐ' हो जाता है और जब 'ओ' या 'औ' आये तो दोनों के स्थान में 'औ' हो जाता है। इस प्रकार की स्वर सन्धि को वृद्धि सन्धि कहते हैं :—

| | |
|---|---|
| तव+एव | तवैव |
| सदा+एव | सदैव |
| जन+ऐक्यम् | जनैक्यम् |
| रमा+ऐश्वर्यम् | रमैश्वर्यम् |
| जल+ओकसः | जलौकसः |
| गंगा+ओघः | गंगौघः |
| राम+औदार्य्यम् | रामौदार्य्यम् |
| महा+औषधम् | महौषधम् |

(२) **यण् सन्धिः**—यदि ह्रस्व या दीर्घ इकार, उकार, ऋकार और लृकार (ह्रस्व) के बाद कोई असमान स्वर आता है तो इनके स्थान पर क्रम से य्, व्, र् और ल् हो जाते हैं। यह यण् सन्धि कहलाती है। जैसे :—

| | |
|---|---|
| अति+अन्तम् | अत्यन्तम् |
| नदी+आदि | नद्यादि |
| मधु+अरिः | मध्वरिः |
| गुरु+आदेशः | गुर्वादेशः |
| धातृ+अंशः | धात्रंशः |
| पितृ+आकृतिः | पित्राकृतिः |
| लृ+आकारः | लाकारः |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


## सकारान्त पुंलिग शब्द

### विद्वस् (विद्वान्)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | विद्वान् | विद्वांसौ | विद्वांसः |
| द्वितीया | विद्वांसम् | विद्वांसौ | विदुषः |
| तृतीया | विदुषा | विद्वद्भ्याम् | विद्वद्भिः |
| चतुर्थी | विदुषे | विद्वद्भ्याम् | विद्वद्भ्यः |
| पंचमी | विदुषः | विद्वद्भ्याम् | विद्वद्भ्यः |
| षष्ठी | विदुषः | विदुषोः | विदुषाम् |
| सप्तमी | विदुषि | विदुषोः | विद्वत्सु |
| सम्बोधन | हे विद्वन् ! | हे विद्वांसौ ! | हे विद्वांसः ! |

## नकारान्त पुंलिग शब्द

### आत्मन् (आत्मा)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | आत्मा | आत्मानौ | आत्मानः |
| द्वितीया | आत्मानम् | आत्मानौ | आत्मनः |
| तृतीया | आत्मना | आत्मभ्याम् | आत्मभिः |
| चतुर्थी | आत्मने | आत्मभ्याम् | आत्मभ्यः |
| पंचमी | आत्मनः | आत्मभ्याम् | आत्मभ्यः |
| षष्ठी | आत्मनः | आत्मनोः | आत्मनाम् |
| सप्तमी | आत्मनि | आत्मनोः | आत्मसु |
| सम्बोधन | हे आत्मन् ! | हे आत्मानौ ! | हे आत्मानः ! |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


## ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

### नदी

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | नदी | नद्यौ | नद्यः |
| द्वितीया | नदीम् | नद्यौ | नदीः |
| तृतीया | नद्या | नदीभ्याम् | नदीभिः |
| चतुर्थी | नद्यै | नदीभ्याम् | नदीभ्यः |
| पंचमी | नद्याः | नदीभ्याम् | नदीभ्यः |
| षष्ठी | नद्याः | नद्योः | नदीनाम् |
| सप्तमी | नद्याम् | नद्योः | नदीषु |
| सम्बोधन | हे नदि ! | हे नद्यौ ! | हे नद्यः ! |

## ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

### वधू

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | वधूः | वध्वौ | वध्वः |
| द्वितीया | वधूम् | वध्वौ | वधूः |
| तृतीया | वध्वा | वधूभ्याम् | वधूभिः |
| चतुर्थी | वध्वै | वधूभ्याम् | वधूभ्यः |
| पंचमी | वध्वाः | वधूभ्याम् | वधूभ्यः |
| षष्ठी | वध्वाः | वध्वोः | वधूनाम् |
| सप्तमी | वध्वाम् | वध्वोः | वधूषु |
| सम्बोधन | हे वधु ! | हे वध्वौ ! | हे वध्वः ! |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


## तकारान्त नपुंसक लिंग शब्द

### जगत् ( संसार )

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | जगत्-द् | जगती | जगन्ति |
| द्वितीया | जगत्-द् | जगती | जगन्ति |
| तृतीया | जगता | जगद्भ्याम् | जगद्भिः |
| चतुर्थी | जगते | जगद्भ्याम् | जगद्भ्यः |
| पंचमी | जगतः | जगद्भ्याम् | जगद्भ्यः |
| षष्ठी | जगतः | जगतोः | जगताम् |
| सप्तमी | जगति | जगतोः | जगत्सु |
| सम्बोधन | हे जगत्-द् ! | हे जगती ! | हे जगन्ति ! |

## संख्यावाची शब्द

### त्रि ( तीन )

**सूचनाः—**'त्रि' शब्द के रूप तीनों लिंगों में अलग-अलग और केवल बहुवचन में होते हैं:—

| | पुंलिंग | नपुंसकलिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | त्रयः | त्रीणि | तिस्रः |
| द्वितीया | त्रीन् | त्रीणि | तिस्रः |
| तृतीया | त्रिभिः | त्रिभिः | तिसृभिः |
| चतुर्थी | त्रिभ्यः | त्रिभ्यः | तिसृभ्यः |
| पंचमी | त्रिभ्यः | त्रिभ्यः | तिसृभ्यः |
| षष्ठी | त्रयाणाम् | त्रयाणाम् | तिसृणाम् |
| सप्तमी | त्रिषु | त्रिषु | तिसृषु |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


## चतुर् (चार)

**सूचना :**—चतुर शब्द के रूप भी तीनों लिंगों में पृथक्-पृथक् और केवल बहुवचन में होते हैं।

| | पुंलिंग | नपुंसकलिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | चत्वारः | चत्वारि | चतस्रः |
| द्वितीया | चतुरः | चत्वारि | चतस्रः |
| तृतीया | चतुर्भिः | चतुर्भिः | चतसृभिः |
| चतुर्थी | चतुर्भ्यः | चतुर्भ्यः | चतसृभ्यः |
| पंचमी | चतुर्भ्यः | चतुर्भ्यः | चतसृभ्यः |
| षष्ठी | चतुर्णाम् | चतुर्णाम् | चतसृणाम् |
| सप्तमी | चतुर्षु | चतुर्षु | चतसृषु |

## परस्मैपदी धातु

## पा (पीना)

**सूचना :**—'पा' का लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में 'पिब्' हो जाता है।

### लट्

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पिबति | पिबतः | पिबन्ति |
| मध्यम पुरुष | पिबसि | पिबथः | पिबथ |
| उत्तम पुरुष | पिबामि | पिबावः | पिबामः |

### लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पिबतु, पिबतात् | पिबताम् | पिबन्तु |
| मध्यम पुरुष | पिब, पिबतात् | पिबतम् | पिबत |
| उत्तम पुरुष | पिबानि | पिबाव | पिबाम |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

## विधिलिङ्

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पिबेत् | पिबेताम् | पिबेयुः |
| मध्यम पुरुष | पिबेः | पिबेतम् | पिबेत |
| उत्तम पुरुष | पिबेयम् | पिबेव | पिबेम |

## लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | अपिबत् | अपिबताम् | अपिबन् |
| मध्यम पुरुष | अपिबः | अपिबतम् | अपिबत |
| उत्तम पुरुष | अपिबम् | अपिबाव | अपिबाम |

## लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पास्यति | पास्यतः | पास्यन्ति |
| मध्यम पुरुष | पास्यसि | पास्यथः | पास्यथ |
| उत्तम पुरुष | पास्यामि | पास्यावः | पास्यामः |

# श्रु ( सुनना )

**सूचना**—'श्रु' का लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में 'शृ' हो जाता है।

## लट्

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | शृणोति | शृणुतः | श्रृण्वन्ति |
| मध्यम पुरुष | शृणोषि | शृणुथः | शृणुथ |
| उत्तम पुरुष | शृणोमि | शृणुवः,श्रृण्वः | श्रृणुमः, श्रृण्मः |

## लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | शृणोतु, शृणुतात् | शृणुताम् | शृण्वन्तु |
| मध्यम पुरुष | शृणु, शणुतात् | शृणुतम् | शृणुत |
| उत्तम पुरुष | शृणवानि | शृणवाव | शृणवाम |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


### विधिलिङ्

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | शृणुयात् | शृणुयाताम् | शृणुयुः |
| मध्यम पुरुष | शृणुयाः | शृणुयातम् | शृणुयात |
| उत्तम पुरुष | शृणुयाम् | शृणुयाव | शृणुयाम |

### लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | अशृणोत् | अशृणुताम् | अशृण्वन् |
| मध्यम पुरुष | अशृणोः | अशृणुतम् | अशृणुत |
| उत्तम पुरुष | अशृणवम् | अशृणुव, अशृण्व | अशृणुम, अशृण्म |

### लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | श्रोष्यति | श्रोष्यतः | श्रोष्यन्ति |
| मध्यम पुरुष | श्रोष्यसि | श्रोष्यथः | श्रोष्यथ |
| उत्तम पुरुष | श्रोष्यामि | श्रोष्यावः | श्रोष्यामः |

## आत्मनेपदी धातु

### लभ् (पाना)

### लट्

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | लभते | लभेते | लभन्ते |
| मध्यम पुरुष | लभसे | लभेथे | लभध्वे |
| उत्तम पुरुष | लभे | लभावहे | लभामहे |

### लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | लभताम् | लभेताम् | लभन्ताम् |
| मध्यम पुरुष | लभस्व | लभेथाम् | लभध्वम् |
| उत्तम पुरुष | लभै | लभावहै | लभामहै |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


## विधिलिङ्

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | लभेत | लभेयाताम् | लभेरन् |
| मध्यम पुरुष | लभेथाः | लभेयाथाम् | लभेध्वम् |
| उत्तम पुरुष | लभेय | लभेवहि | लभेमहि |

## लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | अलभत | अलभेताम् | अलभन्त |
| मध्यम पुरुष | अलभथाः | अलभेथाम् | अलभध्वम् |
| उत्तम पुरुष | अलभे | अलभावहि | अलभामहि |

## लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | लप्स्यते | लप्स्येते | लप्स्यन्ते |
| मध्यम पुरुष | लप्स्यसे | लप्स्येथे | लप्स्यध्वे |
| उत्तम पुरुष | लप्स्ये | लप्स्यावहे | लप्स्यामहे |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# कुछ नये मुख्य शब्द

**अ**

अक्षुण्ण
अक्षौहिणी
अग्नि-कुंड
अजेय
अतीत
अतुल
अधिवेशन
अधिशासी
अधिष्ठात्री
अध्ययन
अनन्य
अनाचार
अनायास
अनुक्रम
अनुचर
अनुभूति
अनुयायी
अनुराग
अनुसन्धान
अन्तःकरण
अन्तरिक्ष
अन्तर्निहित
अन्तर्राष्ट्रीय
अन्त्येष्टि क्रिया
अन्यत्र
अपकीर्ति
अप्राप्य
अभाव
अभिनन्दन
अभिभावक
अभिशाप
अभीष्ट
अश्वमेध
अभूतपूर्व
अम्पायर
अर्जित
अलंकरण
अलौकिक
अल्टीमेटम
अवस्थित
असहिष्णुता
असह्य
अस्तित्व
अस्पृश्यता

**आ**

आकांक्षा
आक्रामक
आक्सीजन
आग्नेयास्त्र
आच्छादित
आज्ञाकारिता
आणविक
आततायी
आत्मविभोर
आत्म-संस्कार
आत्म-सम्मान
आत्मीयता
आदिवासी
आदेशानुसार
आधुनिकतम
आबाल
आयुध
आराध्यदेव
आरोहण
आलोचना
आवास
आश्रय
आश्वासन
आसुरी
आस्था
आहत

**इ**

इलेक्ट्रान
इच्छाशक्ति

**उ**

उत्कीर्ण
उत्तरदायित्व
उत्तरोत्तर
उत्पादक
उद्घोष
उद्यत
उद्योग
उपलक्ष्य

**ऊ**

ऊर्जा

**ए**

एकाग्रचित्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकीकरण

**क**

कमेंटरी
करुण-क्रंदन
कर्मतत्परता
कलत्र
कलश
कलापूर्ण
कलुष
कायल
कार्यपटुता
किंकर्तव्यविमूढ़
कुत्सित
कुफ्र
कृतज्ञता
कृत्य
क्रोधान्ध

**ग**

गगनभेदी
गन्तव्य
गवाक्ष
गुरुत्वाकर्षण
गैलरी
गौरवान्वित

**च**

चकित
चित्ताकर्षक
चिन्तन
चुम्बकत्व

**छ**

छिन्न-भिन्न

**ज**

जलयान
जश्न
जाहिल
जीर्णोद्धार
जीवन्त
जीवाश्म
ज्वलन्त

**झ**

झंकृत
झख मारना

**ट**

टंग्स्टन
टेस्ट मैच

**त**

तदनन्तर
तदुपरान्त
ताबड़तोड़
तासीर
तिरस्कार
तिरस्कृत
तीक्ष्ण
तेजस्वरूप

**थ**

थोरियम

**द**

दक्ष
दमन
दरिद्र
दलित
दिवंगत
दीनवत्सलता
दूषित
देहावसान
दैन्यपूर्ण
दोषारोपण
द्योतक
द्रवित

**ध**

धनोपार्जन
धराशायी
धर्मावलम्बी
धारणा

**न**

नगण्य
नाभिक
नामुराद
नाराच
निकृष्ट
निन्दात्मक
निपुणता
निरंकुश
निरभिमानी
निर्देशिका
निर्बुद्धि
निर्वैर
निर्माण
निर्मित
निर्वाचित
निर्विघ्न
निषेध
निष्कर्ष
निष्काम
निष्ठा
निष्ठुर
निःस्वार्थ
निस्तेज
नृशंस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नेतृत्व
नौकागार

**प**

पतन
पददलित
परकोटा
पराकाष्ठा
परिक्रमा
परिचायक
परिणत
पाण्डुलिपि
पारंगत
पार्थिव
पाली
पाषाण
पूजन-वन्दन
पूर्ववत
पूर्वार्द्ध
पृथ्वीपुत्र
प्रकाशस्तम्भ
प्रखर
प्रजातन्त्रीय
प्रज्वलन
प्रतिपक्षी
प्रतिभाशाली
प्रतिवाद
प्रतिशोध
प्रतिष्ठान
प्रत्याघात
प्रत्युत्तर
प्रफुल्लित
प्रभावपूर्ण
प्रभुसत्ता
प्रवासी
प्रभा
प्रशस्ति
प्रशिक्षण
प्रसंगानुकूल
प्रांगण
प्राणिमात्र
प्राधान्य
प्रारब्ध
प्रोद्गान
प्लूटोनियम

**फ**

फतह
फीलिंडग

**ब**

बन्दोबस्त
बल्लेबाज
बुतपरस्त
ब्रह्मांड

**भ**

भग्नावशेष
भयभीत
भस्मावशेष
भावनात्मक
भूखण्ड
भौतिक

**म**

मन्त्रमुग्ध
मत-मतान्तर
मदान्ध
महत्त्वाकांक्षा
महारथी
महाशून्य
महासचिव
महिमामय
मिशन
मुक्तकण्ठ
मृत्युपर्यन्त
मेधावी
मैंगनीज
मोहमाया

**य**

यथार्थ
याचना
युग-युगान्तर
युग-स्रष्टा
यूरेनियम
योगदान

**र**

रणभेरी
रत्नगर्भा
राजनीतिक
राज्यागार
रेडियम

**ल**

लानत
लोक-सेवा

**व**

वरुणास्त्र
वर्जित
वर्ण-विभेद
वशीभूत
वाक्यांश
विकसित
विकेट
विखण्डन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विटो
विदीर्ण
विद्युतीय
विधिविधान
विभीषिका
विमुग्ध
विरक्त
विरक्ति
विलासमय
विलीन
विलुप्त
विवादग्रस्त
विश्वविख्यात
विषाद
विस्तृत
विस्मित
व्यग्र
व्यक्त
व्यक्तित्व
व्यूह-रचना

**श**

शंकित
शक्ति-सम्पन्न
शर-शय्या
शल्य यन्त्र
शागिर्दी
शासन-सूत्र
शिलान्यास
शूल
श्रीगणेश
शैक्षिक

**स**

संगठनकर्त्ता
संग्रहालय
संघर्षपूर्ण
संज्ञापूर्ण
संयन्त्र
संरक्षक
संलग्न
संहति
संहारक
सक्षम
सत्याग्रह
सदाव्रत
सदी
सन्तप्त
सन्दर्भ
सभास्थल
सभ्यता
समर्थक
समाधान
समाधिस्थ
समान्तर
समावेश
समीपस्थ
सम्मोहन
सलोना
सहृदयता
सांस्कृतिक
सात्विक
सामन्तीय
सामान्यतः
साम्प्रदायिकता
सार्वभौमसत्ता
साष्टांग
सिद्धहस्त
सूत्रपात
सौहार्द
स्तुत्य
स्थापत्य
स्मारक
स्वजन
स्वर्णाक्षर
स्वतः
स्वाध्याय

**ह**

हर्षविभोर
हस्तलाघव
हाइड्रोजन
हार्दिक
हीलियम
हुंकार
हुत

**क्ष**

क्षति

**ज्ञ**

ज्ञानदायिनी

—:०:—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिक्षा विभाग
उत्तर प्रदेश

राजकीय संग्रहालय पुस्तकालय
3796
लखनऊ

केवल मुखपृष्ठ राजकीय मुद्रणालय, ऐशबाग, लखनऊ में मुद्रित

PSUP A. P. 29 D. E.—1968. 7,00,000.